द्वन्द्वयुद्ध

(संसार के सर्वश्रेष्ठ कथाकार की सुप्रसिद्ध रचना)

लेखक :

ऐन्टन चेखव

Anton Chekov

प्र भा त प्र का श न

Prabhat Prakashan

प्रकाशक :
प्रभात प्रकाशन,
मथुरा.

★

अनुवादक :
राजनाथ एम० ए०

प्रथम संस्करण
नवम्बर '५५ ई०

मूल्य :
तीन रुपया

★

मुद्रक :
हरीहर प्रेस, मथुरा.

••••द्वन्द्व युद्ध••••

★

चेखव की द्वन्द्व कहानी उसकी श्रेष्ठ कहानियों में से है। १९वीं सदी के रूसी साहित्य में जिस मानववाद का विकास हुआ, उसका यह बहुत ही सुन्दर उदाहरण है।

लायेव्स्की एक ऐसा चरित्र है जिसकी कमजोरियों के कारण लोग उससे घृणा करने लगंगे। उसका मित्र समोयलेङ्को उसकी कमजोरियों को कम देखता है, उसकी कल्पित अच्छाइयों में ज्यादा विश्वास करता है। समोयलेंको का साथी वैज्ञानिक वान कोरेन लायेव्स्की की नस-नस से वाकिफ है। वह ऐसे आदमियों को सहायता करने के पक्ष में नहीं है। फिर भी प्राणिशास्त्र के इस विशारद से मानो हृदय का कोई रहस्य जैसे छूट गया है, जिसे चेखव ने अपनी कला से प्रकट किया है।

चेखव का सन्देश है, मानव में विकास और परिवर्तन की बहुत बड़ी शक्ति छिपी हुई है। यह शक्ति ऊपरी नजर से नहीं दिखाई देती। लेकिन जब उसे प्रकट होने का अवसर मिलता है, तब वह मानव-चरित्र को आश्चर्यजनक रूप से बदल देती है। लायेव्स्की के चरित्र में जिस दृढ़ता का विकास होता है, उसकी कल्पना किसने की थी ! चेखव की यह कहानी मनुष्य के नैतिक विकास की क्षमता में हमारा विश्वास दृढ़ करती है।

चेखव हास्य और करुणा को मिलाने वाले सिद्धहस्त कलाकार हैं। द्वन्द्व के समय की परिस्थिति जहाँ करुण है वहाँ काफी हद तक हास्य पैदा करने वाली भी। चेखव ने दृढ़ दीखने वाले

मनुष्यों की कमजोरी और कमजोर दीखने वालों की छिपी हुई दृढ़ता दिखाई है। साधारण मनुष्य कभी कभी ऊँची शिक्षा पाये हुये लोगों को कैसे इन्सानियत का सबक दे सकते हैं इसकी मिसाल चाय की दूकान में काम करने वाले तातार लड़के की बातचीत है।

डीकन उससे पूछता है: तातार में ईश्वर को क्या कहते हैं? तातार लड़का उसकी बात नहीं समझता, अनजान में वह उसे परास्त कर देता है। वह कहता है : "ईश्वर सबके लिये एक है, सिर्फ आदमी जुदा जुदा हैं। कुछ रूसी हैं, कुछ तुर्क, कुछ अँगरेज- आदमी तरह तरह के हैं। लेकिन ईश्वर एक है" इस पर डीकन भाषाशास्त्र में दिलचस्पी भूलकर धर्मशास्त्र के बारे में पूछता है : "सब लोग एक ही ईश्वर को पूजते हैं तो मुसलमान ईसाइयों को अपना जानी दुश्मन क्यों समझते हैं?" लड़का जवाब देता है : "सिर्फ अमीर लोग हमारे तुम्हारे ईश्वर में भेद करते हैं, गरीबों के लिये वह एक ही है।"

चेखव का मानववाद अमीरों का मानववाद नहीं है। वह यह नहीं कहता कि गरीबों को सताओ और उन्हें अपना भाई भी कहते जाओ। चेखव को समाज के तिरस्कृत, सताए हुए, तरह तरह की कमजोरियों के शिकार होने वाले लोगों से गहरी सहानुभूति है। उनके विकास में उसे दृढ़ आस्था है। यह उसकी कला का स्रोत है।

हर्ष की बात है कि श्री राजनाथ शर्मा ने इस कहानी का सजीव और सुपाठ्य अनुवाद करके उसे हिन्दी भाषियों के लिए सुलभ कर दिया है।

—(डा०) रामविलास शर्मा

द्वन्द युद्ध

सुबह के आठ बज रहे थे। यह वह समय था जब अफसर, स्थानीय अधिकारी गण एवं यात्री लोग, रात की दम घोंटने वाली गर्मी के बाद समुद्र में प्रातः स्नान करते थे और फिर मंडप के नीचे जाकर चाय या काफी पिया करते थे। इवान आन्द्रेइच लायवस्की ने, जो छरहरे शरीर वाला अट्ठाईस वर्ष का एक सुन्दर नौजवान था और अर्थ-विभाग की सूचक टोपी और पैरों में स्लीपर पहने हुए था, समुद्र के किनारे पर नहाने के लिए आते हुए अपने अनेक परिचितों को देखा जिन में उसका मित्र फौजी डाक्टर सामोलेन्को भी था।

छोटे बालों वाला बड़ा सिर, छोटी गर्दन, लाल चेहरा, बड़ी नाक, रूखी काली भौंह और भूरे गलमुच्छे, तगड़ा फूला हुआ शरीर और भारी फौजी आवाज वाला यह सामोलेन्को हरेक नए आने वाले पर एक निर्दय अत्याचारी का सा प्रभाव डालता था; परन्तु उससे परिचय प्राप्त करने के दो या तीन दिन बाद हरेक सोचने लगता था कि वह असाधारण रूप से अच्छे स्वभाववाला, दयालु और सुन्दर पुरुष है। अपने गंवारपन और भद्दी चालढाल के बावजूद भी वह एक शान्तिप्रिय, अत्यधिक दयालु और हृदय का बड़ा अच्छा व्यक्ति था जो हमेशा दूसरों की सहायता करने के लिये तत्पर रहता था। कस्बे के हरेक आदमी से उसके अच्छे सम्बन्ध थे। वह हरेक को रुपया उधार देता था, हरेक का इलाज करता था, झगड़े निपटाता था, पिकनिकों का इन्तजाम करता था जिसमें वह स्वयं 'शारलीक' नामक एक व्यंजन और हरे बीजों का बहुत ही जायकेदार शोरबा बनाया करता था। वह हमेशा दूसरे लोगों के कामों की देखभाल

करता रहता था, उनके लिए दूसरों के पास सिफारिशें पहुँचाता था और किसी न किसी बात को लेकर हमेशा खुश रहता था। उसके बारे में सब की यह राय थी कि उसका चरित्र पूर्ण रूप से निष्कलंक है। उसमें केवल दो कमजोरियाँ थीं, वह अपने अच्छे स्वभाव के लिये शर्मिन्दा था और अपने चेहरे पर नीरसता और बनावटी कठोरता के भाव लाकर उसे छिपाने की कोशिश किया करता था, और वह इस बात को पसन्द करता था कि उसके मातहत और सिपाही उसे 'योर एक्सेलेन्सी' कह कर पुकारा करें यद्यपि वह सिर्फ एक नागरिक सभासद मात्र था।

"मेरे एक सवाल का जवाब दो, अलेक्जेन्डर देविदिच," लायवस्की ने कहना शुरू किया जब वे दोनों—लायवस्की और सामोलेन्को—कन्धों तक गहरे पानी में खड़े थे। " मान लो कि तुमने एक औरत से प्यार किया था और उसके साथ दो या तीन साल तक रहते रहे थे और फिर उसकी चिन्ता करना छोड़ दिया, जैसा कि आमतौर पर होता है, और यह अनुभव करने लगे कि तुम्हें उसके प्रति कोई आकर्षण नहीं रहा। ऐसी हालत में तुम कैसा व्यवहार करोगे?"

"यह तो बहुत मामूलीसी बात है। 'आपकी जहाँ इच्छा हो वहाँ चली जांय, मैडम'—और यहीं यह सब समाप्त हो जायगा।"

"यह कहना बड़ा आसान है! परन्तु अगर उसके पास और कहीं जाने के लिए जगह ही न हो? एक ऐसी औरत जिसका न कोई दोस्त है और न कोई रिश्तेदार, न जिसके पास एक पैसा ही है, जो काम भी नहीं कर सकती......"

"क्यों? पाँच सौ रूबल एक साथ या पच्चीस रूबल माहवारी—इससे ज्यादा कुछ भी नहीं। यह बहुत आसान है।"

"फिर भी मान लो कि तुम्हारे पास पाँचसौ रूबल हैं और तुम पच्चीस रूबल माहवारी के हिसाब से दे सकते हो, परन्तु जिस औरत की मैं बात कर रहा हूँ वह पढ़ी लिखी और स्वाभिमानिनी है। क्या तुम

सचमुच रुपया देने का प्रस्ताव उसके सामने रख सकते हो ? और फिर ऐसा करोगे किस तरह ?"

सामोलेन्को जवाब देने ही वाला था कि उसी समय एक बड़ी लहर ने आकर उन दोनों को ढंक लिया, आगे बढ़ कर किनारे पर टकराई और किनारे पर पड़े हुए पत्थरों पर शोर करती हुई वापस लौट गई। दोनों मित्र बाहर निकल आए और कपड़े पहनने लगे।

"यह ठीक है कि किसी औरत के साथ रहना बड़ा कठिन है अगर तुम उसे प्यार नहीं करते," सामोलेन्को ने अपने जूतों में से बालू झाड़ते हुए कहा। "लेकिन हरेक को ऐसी बातों पर मानवता के दृष्टिकोण से विचार करना चाहिए, वान्या। अगर यह मेरा मामला होता तो मैं उसे इस बात की हवा भी न लगने देता कि मैं उसे प्यार नहीं करता और मैं अपनी पूरी जिन्दगी उसी के साथ रहते हुए काट देता।"

वह तुरन्त ही अपने शब्दों पर लज्जित हो उठा, उसने अपने को सम्हाला और बोला : "परन्तु मुझे सिर्फ इस बात की इच्छा है कि इस दुनियाँ में औरत-जात ही न होती। इन सबको जहन्नुम में जाने दो !"

दोनों मित्रों ने कपड़े पहने और मंडप में चले गए। वहाँ सामोलेन्को पूरी आजादी का अनुभव करता था, यहाँ तक कि वहाँ उसके लिए एक जोड़ा विशेष प्याले और तश्तरी का अलग रहता था। हर सुबह वे लोग उसके लिए एक ट्रे पर रख कर, एक प्याला काफी, बरफ के पानी का एक बड़ा गिलास और ब्रान्डी का एक छोटा सा गिलास लाया करते थे। पहले वह ब्रान्डी पीता, फिर गरम काफी, उसके बाद बरफ का पानी और यह बहुत अच्छा लगता होगा क्योंकि पीने के बाद आनन्द से उस की आँखें गीली हो जाती थीं, वह दोनों हाथों से अपने गलमुच्छों को थपथपाता और समुद्र की तरफ देखते हुए कहता:

"आश्चर्यजनक रूप से कैसा सुन्दर दृश्य है !"

उदास और व्यर्थ के विचारों में व्यतीत की हुई लम्बी रात के बाद जिनके कारण वह सो नहीं सका था और जो रात के अन्धकार और गर्मी को और भी अधिक गहरा बना रहे थे, लायवस्की ने अपने को बेचैन और उद्विग्न अनुभव किया। वह नहाने और काफी पीने के उपरान्त भी अपने को पहले से अधिक स्वस्थ अनुभव नहीं कर रहा था।

"आओ फिर अपनी बात शुरू करें, अलक्जेन्दर देविदिच," वह बोला। "मैं कोई बात छिपाऊँगा नहीं, मैं तुमसे बिल्कुल खुल कर बातें करूँगा जैसे कि मित्र से की जाती हैं। नादयेज्दा फ्योदोरोव्ना और मेरे सम्बन्ध अच्छे नहीं रहे हैं...बहुत बुरे हो गए हैं। मुझे इस बात के लिए माफ करना कि मैं अपने व्यक्तिगत मामलों को तुम्हारे ऊपर थोप रहा हूँ, परन्तु मुझे कहना ही पड़ रहा है।"

सामोलेन्को, जिसे, जो कुछ भी लायवस्की कहने जा रहा था उसके बारे में गलतफहमी थी, ने अपनी निगाह नीची कर ली और मेज पर उंगलियों से तबला बजाने लगा।

"मैं उसके साथ दो साल से रह रहा हूँ और अब उसे प्यार करना बन्द कर दिया है," लायवस्की कहता रहा, "या वस्तुतः मैंने अनुभव किया कि मैंने उसके प्रति कभी भी प्रेम का अनुभव नहीं किया था।...यह दो साल एक गलती के रूप में ही कटे हैं।"

लायवस्की की यह आदत थी कि जब वह बातें करता था तो अपने हाथों की गुलाबी हथेलियों को गौर से देखा करता था, नाखून काटता था या अपने कफों को मरोड़ा करता था। और इस समय भी उसने ऐसा ही किया।

"मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम मेरी मदद नहीं कर सकते," उसने कहा, "परन्तु मैं तुमसे इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मेरी तरह असफल और बेकार के आदमी बातचीत में अपनी मुक्ति ढूंढा करते हैं मुझे विशिष्ट उदाहरणों द्वारा उन सभी साधारण नियमों का अनुमान

करना है जिनके द्वारा मैं जो कुछ भी करता हूँ उन्हें संगत सिद्ध कर सकूँ। मैं दूसरों के ऐसे सिद्धान्तों की तलाश करने के लिए बाध्य हो गया हूँ जिनके आधार पर मैं अपने असंगत अस्तित्व को न्यायानुमोदित सिद्ध कर सकूं या साहित्यिक उदाहरणों द्वारा अपने कार्य को संगत प्रमाणित करूँ—इस विचार द्वारा कि हम लोग जो रूसी उच्च वर्ग के व्यक्ति हैं, पतित होते जा रहे हैं या इसी तरह के अन्य उदाहरणों द्वारा मिसाल के लिए, पिछली रात मैं सोच सोच कर ही अपने को सान्त्वना देने का प्रयत्न करता रहा: 'आह तालस्ताय ने कितना सच कहा है, कितना कठोर सत्य कहा है!' और इससे मुझे लाभ हुआ। हाँ, सचमुच, भाई, वह एक महान लेखक है, तुम जो चाहो सो कहो!"

सामोलेन्को, जिसने तालस्ताय को कभी भी नहीं पढ़ा था और जो अपने जीवन में हर रोज पढ़ने का विचार करता रहता था, कुछ परेशान हो उठा और बोला :

"हाँ, दूसरे सब लेखक कल्पना द्वारा लिखते हैं परन्तु वह सीधा प्रकृति से उदाहरण लेकर लिखता है।"

"मेरे भगवान!" लायवस्की ने आह भरी, "सभ्यता ने हम सब को कितना कुरूप बना दिया है! मैं एक विवाहित स्त्री को प्यार करने लगा और वह मुझे प्यार करने लगी।............हम लोगों ने चुम्बनों, शान्त सन्ध्याओं और प्रतिज्ञाओं तथा स्पेन्सर और आदर्शों और साधारण समान रुचियों से इसे आरम्भ किया।.........कितना धोखा! हम लोग सचमुच उसके पति से दूर भाग आए थे परन्तु हम लोगों ने स्वयं अपने आपको ही झूठी तसल्ली दी और सोचाया कि हम शिक्षित वर्ग के जीवन के खोखलेपन से दूर भागे थे। हमने अपने भावी जीवन का यह चित्र खींचा था : सबसे पहले, काकेशस में रहते हुए जब हम लोग उस स्थान का और वहाँ के आदमियों का परिचय प्राप्त करते रहेंगे, मैं सरकारी वर्दी पहन लूँगा और नौकरी करने लगूंगा, फिर अपनी सुविधानुसार हम

जमीन का एक टुकड़ा खरीद लेंगे, खूब परिश्रम करेंगे, एक अँगूर का बाग और एक खेत आदि बना लेंगे। अगर तुम मेरे स्थान पर होते, या तुम्हारा वह प्राणि-विद्या-विशारद, वॉन कोरन होता, तो शायद नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना के साथ तीस साल तक रह सकते और अपने वारिसों के लिए एक बड़ा अँगूरों का बाग और तीन हजार एकड़ की ज्वार की खेती छोड़ जाते, परन्तु मैं पहले ही दिन से अपने को दिवालिया अनुभव करने लगा था। इस कस्बे में भयंकर गर्मी है, मनहूसियत है, सभा-सुसाइटियों का अभाव है, और अगर बाहर देहात में जाँय तो हमें हरेक चट्टान और झाड़ी के पीछे जहरीले मकड़ों, बिच्छुओं या सांपों का भय लगा रहता है। और खेतों के परे पहाड़ और रेगिस्तान फैला हुआ दिखाई देता है। विदेशी व्यक्ति, अपरिचित देश, एक रद्दी सभ्यता—यह सब सहन करना इतना आसान नहीं है, भाई, जितना कि अपना बालों का कोट पहने, नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना के साथ हाथ में हाथ डाले, नेव्स्की प्रॉस्पेक्ट पर घूमते हुए सूर्य की धूप से खिले हुए दक्षिण का स्वप्न देखना। यहाँ जिस चीज की जरूरत है वह जीवन और मृत्यु का सङ्घर्ष है और मैं सङ्घर्षशील व्यक्ति हूं नहीं। मैं एक बहुत ही दुर्बल प्रकृति का आलसी व्यक्ति हूँ।........ पहले ही दिन मैं इस बात को जान गया था कि मेरे परिश्रमी जीवन और अँगूर के बाग वाले सपने व्यर्थ हैं। जहाँ तक प्रेम का सम्बन्ध है, मुझे तुमको बता देना चाहिए कि एक ऐसी औरत के साथ रहना, जिसने स्पेन्सर पढ़ रखा हो और पृथ्वी के छोर तक तुम्हारा पीछा किया हो, किसी अनफिसा या अकूलिना के साथ रहने से किसी भी हालत में अधिक मनोरञ्जक नहीं हो सकता। वहाँ हमेशा वही कपड़ों पर लोहा करने की, पाउडर की, दवाइयों की गन्ध भरी रहती है, हर सुबह वही बालों को घुंघराले करने वाले कागज दिखाई पड़ते हैं, वही आत्म-प्रवंचना होती रहती है।"

"किसी भी घर में तुम्हारा काम लोहा करने की इस्त्री के बिना

तो चल नहीं सकता," सामोलेन्को ने इस बात पर शर्माते हुए कहा कि लायवस्की ने एक ऐसी महिला के बारे में उससे खुल कर बातें को थीं जिसे वह जानता था। "आज मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारा मिजाज बिगड़ा हुआ है, वान्या नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना एक बहुत अच्छी स्त्री है, काफी पढ़ी लिखी है और तुम बहुत अधिक बुद्धिमान व्यक्ति हो। हाँ, यह ठीक है कि तुम शादीशुदा नहीं हो," सामोलेन्को अपने पास वाले मेज़ों की तरफ देखता हुआ कहता रहा, "लेकिन यह तुम्हारी गलती नहीं है, और साथ ही·········हरेक को परम्परा से चले आते हुए अन्धविश्वासों पर ध्यान नहीं देना चाहिए और नवीन विचारों के स्तर तक ऊपर उठना चाहिए। मैं खुद स्वच्छन्द प्रेम में विश्वास करता हूं, हाँ·········· परन्तु मेरे विचारानुसार तो जब एक बार तुम लोग एक साथ रह चुके हो तो तुम लोगों को जीवन भर एक साथ ही रहना चाहिए।"

"बिना प्रेम करते हुए ही?"

"मैं तुम्हें अभी बताऊँगा," सामोलेन्को बोला। "आठ साल पहले, यहाँ एक बुड्ढा आदमी जो एक एजेन्ट था, रहता था। वह बहुत बुद्धिमान व्यक्ति था। वह कहा करता था कि विवाहित जीवन में सबसे बड़ी चीज धैर्य रखना है। तुम सुन रहे हो वान्या? प्रेम नहीं बल्कि धैर्य। प्रेम ज्यादा दिनों तक नहीं रह सकता। तुमने दो साल प्रेम में बिताए हैं और अब स्पष्ट रूप से तुम्हारा विवाहित जीवन उस अवस्था को पहुँच गया है जब, सन्तुलन कायम रखने के लिए, तुम्हें अपने पूरे धैर्य से काम लेना पड़ेगा।······"

"तुम अपने उस बुड्ढे एजेन्ट की बातों में विश्वास करते हो, मेरे लिए उसकी बातें निरर्थक हैं। तुम्हारा वह बुड्ढा ढोंगी भी हो सकता है, वह धैर्य का आवरण डाल कर अपने को व्यक्त कर सकता था और उसनेऐसा कियाभी कि उस व्यक्तिको जिससे वह प्रेम नहीं करता

था, एक ऐसी वस्तु के रूप में देखा जिसका अस्तित्व उसके नैतिक कार्यों के लिए अत्यन्त आवश्यक था। परन्तु मैं अभी तक इतना नीच नहीं बन सका हूं। अगर मुझे धीरज ही रखना होगा तो मैं डम्बल या नाचने वाला घोड़ा खरीद लूँगा परन्तु मैं मानवों को अकेला ही छोड़ दूँगा।"

सामोलेन्को ने बरफ के साथ थोड़ी सी सफेद शराब मंगाई। जब वे दोनों एक एक गिलास पी चुके, अचानक लायवस्की ने पूछा :

"मेहरबानी करके यह बताओ कि दिमाग के पिलपिले हो जाने का क्या मतलब है?"

"मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ?......यह एक बीमारी होती है जिस में दिमाग पिलपिला होने लगता है.....जैसे कि घुलता आ रहा हो।"

"यह ठीक हो सकती है?"

"हाँ, अगर बीमारी की उपेक्षा न की गई हो। एक यंत्र द्वारा ठंडे पानी की धार डालने से, छाला डालकर।...........कुछ भीतरी दवाइयाँ देने से भी।"

"ओह!.........अच्छा, तुम मेरी हालत देख ही रहे हो, मैं उसके साथ नहीं रह सकता: जो कुछ मैं कर सकता हूँ यह उससे भी ज्यादा है। जब तक कि मैं तुम्हारे साथ हूँ मैं इस बात पर दार्शनिक की दृष्टि से बातें कर सकता हूँ और मुस्करा सकता हूँ परन्तु घर पर मैं पूरी तरह से निराश हो उठता हूँ। अगर, मिसाल के तौर पर, मुझ से यह कहा जाता कि मुझे उसके साथ एक महीने और रहना है तो मैं अपनी खोपड़ी तोड़ डालता। साथ ही उससे अलग होना भी असम्भव है। उसका न कोई मित्र है और न कोई रिश्तेदार, वह काम नहीं कर सकती, और न उसके पास और न मेरे ही पास पैसा है।...उसका क्या होगा? वह किसके पास जावेगी? ऐसा कोई भी साधन नहीं जिसके बारे में सोचा जा सके।.........मुझे बताओ कि मैं क्या करूँ?"

"हुँ !……" सामोलेन्को घुर्राया, यह न जानते हुए कि क्या जवाब दिया जाय। "वह तुमसे प्यार करती है ?"

"हाँ, वह मुझे इतना प्यार करती है जितना कि उसकी अवस्था और स्वभाव वाली स्त्री किसी भी आदमी से प्यार कर सकती है। उसके लिए मुझे छोड़ना उतना ही मुश्किल है जितना कि अपने पाउडर या बाल घुँघराले करने वाले कागजों को त्यागना। मैं उसके निजी कमरे के लिए अत्यधिक आवश्यक और महत्वपूर्ण हूँ।"

सामोलेन्को परेशान हो उठा।

"आज तुम्हारा पारा चढ़ा हुआ है, वान्या," उसने कहा। "तुम्हारी रात बहुत बुरी बीती होगी।"

"हाँ, मुझे ठीक तरह नींद नहीं आई थी।…………आज मैं अपने को बुरी तरह से अस्वस्थ अनुभव कर रहा हूं, भाई। मेरा दिमाग खाली सा हो गया है, हृदय बैठा जा रहा है, कमजोरी महसूस हो रही है।……मुझे भाग ही जाना चाहिए।"

"कहाँ भाग जाना चाहिए ?"

"उधर, उत्तर की तरफ। वहाँ जहाँ चीड़ के वृक्ष और कुकुरमुत्ते होते हैं, जहाँ आदमी रहते हैं और स्वच्छन्द विचार हैं।……… अब मैं मास्को या तूला के सूबों में बहने वाले किसी छोटे से झरने में नहाने के लिए अपना आधा जीवन न्योछावर कर सकता हूँ, इससे मुझे ठंड का अनुभव होगा और फिर कमजोर से कमजोर विद्यार्थी के साथ तीन घन्टे तक घूमना और लगातार, बिना रुके बातें करना पसन्द करूँगा। ..और सूखी घास की वह सुगन्धि ! तुम्हें इसकी याद है ? और शाम को जब कोई बाग में घूमता होता है तो घर से आता हुआ पियानो का स्वर हवा में तैरता रहता है, गुजरती हुई रेल की आवाज सुनाई देती है।"

लायवस्की प्रसन्न होकर हंसने लगा। उसकी आँखों में आंसू झलकने लगे और उन्हें छिपाने के लिए, बिना उठे हुए उसने बगल वाली मेज पर से दियासलाई उठाने के लिए अपने को नीचे झुका लिया।

"मैं अठारह साल से रूस नहीं गया हूं" सामोलेन्को बोला मैं यह भूल गया हूँ कि वह कैसा है। मेरे विचार से काकेशस के समान सुन्दर और कोई भी देश नहीं है।"

"वेरेश्चागिन की एक तस्वीर है जिसमें प्राणदंड पाए हुए कुछ आदमी एक गहरे कुए की तलहटी में निरुत्साहित होकर पड़े हुए हैं। तुम्हारा भव्य और सुन्दर काकेशस मुझे उसी कुंए की तरह लगता है। अगर एक तरफ मुझे पीटर्सबर्ग में एक चिमनी साफ करने वाले का काम सौंपा जाता और दूसरी तरफ काकेशस में राजकुमार बना दिया जाता तो मैं चिमनी साफ करने वाला काम ही स्वीकार करता।"

लायवस्की गम्भीर हो गया। उसके झुके हुए शरीर, एक स्थान पर जमी हुई उसकी आंखों, उसके पीले और पसीने से भरे हुए चेहरे और पिचके हुए गालों, उसके कुतरे हुए नाखूनों, उसका स्लीपर जो पैर से नीचे खिसक गया था और बुरी तरह से फटे हुए मोजे का प्रदर्शन कर रहा था, को देख कर सामोलेन्को दुखित हो उठा और सम्भवतः इसलिए कि लायवस्की को देखकर उसे एक असहाय बालक की याद आगई थी, उसने पूछा:

"तुम्हारी माँ जिन्दा है?"

"हाँ है, परन्तु हम लोगों में बनती नहीं। वह मुझे इस कांड के कारण क्षमा नहीं कर सकी है।"

सामोलेन्को अपने मित्र को चाहता था। वह लायवस्की को, एक अच्छे स्वभाव वाला विद्यार्थी, एक ऐसा आदमी जिसमें कोई खराबी नहीं है, जिसके साथ हरेक पी सकता है, हंस सकता है और खुलकर बातें कर सकता है, समझता था। उसने उसकी जिस बात को ठीक तरह से

समझा था उसे वह पूरी तरह से नापसन्द करता था। लायवस्की बहुत शराब पीताथा और वह भी अनुचित अवसरों पर। वह जुआ खेलता था, अपने काम से नफरत करता था, औकात से ज्यादा खर्च करता था, बात-चीत में अक्सर भद्दी बातें कर बैठता था, स्लीपर पहने हुए सड़कों पर घूमता था और दूसरे लोगों के सामने नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना से लड़ता था—और सामोलेन्को इन बातों को पसन्द नहीं करता था। परन्तु इस बात से कि लायवस्की किसी समय कला का विद्यार्थी रह चुका था, दो बड़ी बड़ी आलोचनाएँ लिख चुका था, कभी कभी इतनी चतुरता से भरी बातें करता था कि बहुत कम लोग उन्हें समझ पाते थे, एक शिक्षित महिला के साथ रहता था—यह सब सामोलेन्को की समझ में नहीं आता था। वह इसे पसन्द करताथा और इसीलिए लायवस्की का सम्मान करता था और उसे अपने से श्रेष्ठ समझता था।

"दूसरी बात यह है कि," लायवस्की ने अपना सिर हिलाते हुए कहा—"यह सिर्फ हमी लोगों के बीच की बात है। मैं कुछ समय के लिए इसे नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना से छिपा रहा हूँ।······इसे उसके सामने कह मत बैठना।·········मुझे परसों एक खत मिला था जिसमें यह लिखा था कि दिमाग के पिलपिले होने की बीमारी से उसके पति का देहान्त होगया है।"

"भगवान उसे स्वर्ग दे," सामोलेन्को ने आह भरी। "इसे तुम उससे क्यों छिपा रहे हो?"

"उसे यह खत दिखाने का मतलब होगा कि 'गिरजे में चलकर शादी करलो।' और मैं चाहताहूँ कि इससे पहले हमें आपसी सम्बन्धोंको स्पष्ट कर लेना चाहिए। जब वह यह समझ लेगी कि हम लोग अब साथ नहीं रह सकते तब मैं उसे यह खत दिखा दूँगा। उस समय ऐसा करने में कोई खतरा नहीं रहेगा।"

"तुम जानते हो, वान्या," सामोलेन्को ने कहा, और उसके चेहरे

पर एक अवसादपूर्ण विनय का सा भाव छा गया मानो वह उससे कोई बहुत मार्मिक बात पूछने जा रहा हो और उसे इस बात का भय हो कि कहीं वह मना न कर दे। "उससे शादी कर लो, मेरे भाई!"

"क्यों ?"

"उस महान नारी के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करो! उसका पति मर चुका है इसलिये विधाता स्वयं तुम्हें यह संकेत दे रहा है कि तुम्हें क्या करना चाहिये!"

'मगर समझने की कोशिश तो करो, अजीब आदमी, कि यह नामुमकिन है। बिना प्रेम के शादी करना किसी भी आदमी के लिए उतना ही नीच और अयोग्य कार्य है जितना कि बिना विश्वास के प्रार्थना करना।'

" परन्तु यह तुम्हारा कर्तव्य भी तो है।"

" मेरा कर्तव्य क्यों है !" लायवस्की ने गुस्सा होकर पूछा।

क्योंकि तुम उसे उसके पति से छीन लाए थे और अपने को उसके प्रति जिम्मेदार ठहराया था।"

"परन्तु अब मैं तुम्हें बिल्कुल साफ रूसी भाषा में यह बता रहा हूँ कि मैं उसे प्रेम नहीं करता।'

अच्छा अगर तुम प्रेम नहीं करते तो उसका उचित सम्मान तो करो, उसकी इच्छाओं की तरफ ध्यान दो। ... "

" उसका उचित सम्मान करो, उसकी इच्छाओं की तरफ ध्यान दो" लायवस्की ने नकल उतारते हुए कहा। "जैसे कि वह कोई देवी हो। .. तुम एक बहुत ही कमजोर मानस शास्त्री और शरीर-धर्म-विज्ञान शास्त्री हो, अगर तुम यह सोचते हो कि एक स्त्री के साथ रहते हुए केवल उसके प्रति सम्मान दिखा कर और उसकी इच्छाओं की पूर्ति करके ही कोई छुटकारा पा सकता है। और जिस बात के बारे में वह सबसे ज्यादा सोचती है वह उसका पलंग है।"

वान्या सामोलेन्को परेशान होकर कह उठा।

"तुम एक वयस्क की तरह हो, एक आदर्शवादी हो, जब कि अपनी अवस्था को देखते हुए मैं ज्यादा अनुभवी और व्यावहारिक हूं। हम लोग कभी भी एक दूसरे को नहीं समझ सकेंगे। अच्छा हो कि इस बात को खत्म कर दिया जाय। मुस्तफा!" लायवस्की ने बैरे को आज्ञा दी। "हमारा कितना बिल हुआ?"

"नहीं, नहीं" डाक्टर उद्विग्न होकर चीख पड़ा और लायवस्की का हाथ पकड़ लिया। "मैं भुगतान करूंगा। मैंने आर्डर दिया था। मेरे नाम से बिल बनाओ" उसने चिल्लाकर मुस्तफा से कहा।

दोनों मित्र उठ खड़े हुए और चुपचाप समुद्र के किनारे चलने लगे। जब वे लोग सड़क पर पहुँचे तो रुके और अलग होते समय हाथ मिलाया।

"तुम बहुत बुरी तरह बिगड़ चुके हो, मेरे दोस्त!' सामोलेन्को ने गहरी सांस लेते हुए कहा। "भाग्य ने तुम्हारे पास एक जवान, सुन्दर सभ्य नारी को भेज दिया है और तुम इस उपहार को अस्वीकार करते हो जब कि अगर भगवान ने मुझे एक कुरूप बुढ़िया भी दे दी होती तो मैं कितना सन्तुष्ट होता अगर वह सिर्फ दयालु और स्नेह करने वाली होती। मैं उसके साथ अपने अंगूरों के बाग में रहता और ...

सामोलेन्को ने अपने आवेश को रोका और बोला—

"और वह बुढ़िया मेरे लिए वहाँ समोवार तैयार रखती।"

लायवस्की से अलग होकर वह सड़क पर चलने लगा। जब अपने भारी भरकम और प्रभावशाली चेहरे पर एक कठोर भाव लिए वह अपना बर्फ जैसा सफेद छोटा कोट और चमचमाते हुआ बूट पहने, सीना ताने जिस पर एक फीते में ब्लादीमीर क्रॉस लटका हुए था, सड़क पर चल रहा था तो वह अपने आप से अत्यधिक सन्तुष्ट था और ऐसा लग रहा था मानो सारा संसार उसे प्रसन्न होकर देख रहा था। बिना

सिर घुमाए उसने चारों तरफ देखा और सोचा कि यह सड़क बड़ी अच्छी तरह बनाई गई है, कि नए साइप्रस के, युक्लिप्टस के और अच्छे रूखे ताड़ के पेड़ बहुत सुन्दर हैं और समय आने पर घनी छाया प्रदान करेंगे, कि सरकेशियन लोग ईमानदार और खातिरपसन्द आदमी हैं।"

"यह बड़ी अजीब बात है कि लायवस्की काकेशस को पसन्द नहीं करता।" उसने कहा "बड़ी अजीब बात है।"

रायफिलें लिए पाँच सिपाही उसे मिले और उन्होंने उसे सैल्यूट किया। सड़क की दाहिनी तरफ एक स्थानीय अधिकारी की स्त्री अपने बेटे के साथ जो स्कूल में पढ़ता था, आ रही थी।

"गुड मॉर्निंग, मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा" सामोलेन्को ने सुन्दर ढंग से मुस्कराते हुए चिल्ला कर उससे कहा। "आप नहाने गई थीं? हा-हा-हा-! ··निकोदिम अलेक्जेन्द्रिच से मेरा नमस्कार कहिएगा!"

और वह तब भी प्रसन्नतापूर्वक मुस्कराता हुआ चलता चला गया, परन्तु फौजी अस्पताल के एक सहकारी को अपनी तरफ आते हुए देखकर अचानक घबराया, उसे रोका और पूछा।

"अस्पताल में कोई है?"

"कोई नहीं है, योर एक्सेलेन्सी।"

"क्यों?"

"कोई नहीं है, योर एक्सेलेन्सी।"

"अच्छा, भाग जाओ······"

शान से हिलता-डुलता हुआ वह लेमन की दूकान की तरफ बढ़ा जहाँ एक भरी हुई छाती वाली यहूदिन बैठी हुई थी जो अपने को जोर्जिया की रहने वाली बताती थी। सामोलेन्को ने उसकी तरफ देखते हुए इतनी जोर से कहा मानो फौज को आज्ञा दे रहा हो।

"मेहरबानी करके मुझे थोड़ा सा सोडा-वाटर दीजिए!"

२

लायवस्की का नादयेज्दा फ्योदोरोव्ना को प्रेम न करना विशेष-कर इस बात से प्रकट होता था कि जो कुछ भी वह कहती थी या करती थी वह लायवस्की को झूठी, या झूठ के ही बराबर प्रतीत होती थी और जो कुछ भी वह स्त्रियों और प्रेम के खिलाफ पढ़ता था वह उसे अपने ऊपर नादयेज्दा फ्योदोरोव्ना पर और उसके पति पर पूरी तरह से लागू होता हुआ जान पड़ता था। जब वह घर लौटा तो वह पोशाक पहने बाल बनाए हुए खिड़की के सामने बैठी, गम्भीर चेहरे से कॉफी पीती जा रही थी और एक मोटी सी पत्रिका के पन्ने उलट रही थी। उसने सोचा कि कॉफी पीना इतना महत्वपूर्ण कार्य नहीं था कि उसे इतनी गम्भीर मुद्रा बनाने की जरूरत पड़ती और यह कि जैसे फैशनेबुल ढंग से बाल बांधने में वह अपना समय बर्बाद कर रही हो, जैसे कि वहाँ आकर्षित करने के लिए कोई भी न हो और न आकर्षक बनने की ही कोई जरूरत हो। और उस पत्रिका में उसे झूठी बातों के अलावा और कुछ भी नहीं दिखाई दिया। उसने सोचा कि उसने कपड़े इस तरह पहने हैं और बाल इस तरह बांधे हैं जिससे कि वह और अधिक सुन्दर लगे और पढ़ इस लिए रही थी जिससे लोगबाग उसे बुद्धिमती समझें।

"क्या मेरे लिए आज नहाने के लिए जाना ठीक रहेगा?" उसने पूछा।

"क्यों? मैं सोचता हूँ, तुम्हारे जाने या न जाने से कोई भूचाल तो आ नहीं जायगा।"

"नहीं, मैंने सिर्फ इसलिए पूछा कि कहीं डाक्टर परेशान न हो उठे।"

"अच्छा, तो डाक्टर से पूछो, मैं डाक्टर तो हूँ नहीं।"

इस समय नादयेज्दा फ्योदोरोव्ना की जिस बात से लायवस्की नाराज हुआ वह उसकी खुली हुई सफेद गर्दन और पीछे लटकते हुए

बालों के छोटे घुँघराले गुच्छे थे। और उसने याद किया कि जब अन्ना केरेनिना अपने पति से ऊब उठी थी तो जिस बात से वह सबसे अधिक नफरत करती थी वह उसके पति के कान थे, और सोचा "यह कितना ठीक है, कितना सच्चा !"

कमजोरी महसूस करते हुए, और जैसे कि दिमाग बिल्कुल खाली हो गया हो, वह अपने पढ़ने के कमरे में गया, सोफे पर लेट गया और अपने मुँह को एक रूमाल से ढक लिया जिससे कि मक्खियाँ उसे परेशान न कर सकें। उद्विग्न करने वाले और क्रूर विचार जो हमेशा एक ही के बारे में उठते थे, उसके दिमाग में धीरे धीरे इस तरह उठने लगे जैसे कि पतझड़ की एक उदास सन्ध्या को गाड़ियों की एक लम्बी कतार चली जा रही हो और वह निराशा की क्रूर खुमारी में डूब गया। उसे ऐसा लगा कि उसने नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना और उसके पति के साथ अन्याय किया है और यह कि उसी की गलती के कारण उसके पति की मृत्यु हो गई। उसने ऐसा महसूस किया कि उसने स्वयं अपनी जिन्दगी के खिलाफ पाप किया है, जिसे उसने बर्बाद कर दिया है, उसने संसार के महान विचारों के प्रति अपराध किया है, विद्वता के प्रति, कार्य के प्रति अपराध किया है और उसने उस संसार को सच्चा और सम्मत समझा जो, यहाँ—भूखे तुर्कों और सुस्त पर्वतारोहियों से भरे हुए इस समुद्र तट पर न होकर वहाँ—उत्तर में है जहाँ ओपेरा, थियेटर, अखबार थे और हर तरह के सुन्दर और अक्लमन्दी के काम होते थे। कोई भी व्यक्ति सिर्फ वहीं—यहाँ नहीं—ईमानदार, अक्लमन्द, महान और पवित्र बन सकता था। उसने अपने आप को इस बात के लिए अपराधी ठहराया कि उसका न कोई आदर्श है, न जीवन का पथ प्रदर्शन करने वाला कोई सिद्धान्त है। यद्यपि अब उसे इस बात का हल्का सा आभास होने लगा था कि इसका अर्थ क्या है। दो साल पहले, जब वह नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना के प्रेम में पड़ा था, उसे ऐसा लगा था कि उसे उसको अपनी स्त्री के रूप में लेकर

सिर्फ काकेशस जाना है और उसका गन्दगी और खोखलापन से उद्धार हो जायगा। इसी तरह अब उसे इस बात का विश्वास हो गया था कि उसे सिर्फ नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना से अलग हो कर पीटर्सबर्ग चला जाना है और उसे वह सब मिल जायगा जो कुछ वह चाहता था।

"भाग चलो," उसने उठ कर बैठते हुए और अपने नाखून कुतरते हुए कहा—"भाग चलो।"

उसने अपनी कल्पना द्वारा चित्र खींचा कि कैसे वह स्टीमर पर चढ़ जायगा और फिर खाना खायेगा, थोड़ी सी ठण्डी बीयर पियेगा, डेक पर महिलाओं से बात करेगा और फिर सेवास्तपोल में रेल में बैठेगा और आगे चल देगा। स्वतन्त्रता की जय हो! एक के बाद एक स्टेशन पलक झपकते निकलते जायेंगे, हवा ठण्डी और भारी होती जायगी, फिर भोजपत्र के और चीड़ के दरख्त दिखाई देंगे, फिर कुर्स्क, मास्को ... रेस्टारेन्टों में गोभी का शोरबा, गोश्त, बीयर मिलेगी, एशियापन कहीं भी नहीं दिखाई पड़ेगा, वातावरण रूसी, विशुद्ध रूसी होगा। रेल में बैठे हुए यात्री व्यापार, नये गाने वालों, फ्रांसीसी-रूसी सन्धि की बातें करेंगे; चारों तरफ एक गहरी सांस्कृतिक, बौद्धिक, एवं उत्सुक जोश की भावना भरी होगी।...... जल्दी बढ़ो, आगे! अन्त में नेवस्की प्रास्पेक्ट और ग्रेट्मोस्कोया स्ट्रीट और फिर कोवेन्स्की प्लेस आयेंगे जहाँ वह एक समय रहा करता था जब एक विद्यार्थी था। वहाँ प्यारा भूरा आसमान, रिमझिम बरसता मेह, भीगे हुए गाड़ीवान होंगे।.........

"इवान आन्द्रेइच!" दूसरे कमरे से किसी ने बुलाया। "तुम घर पर हो?"

"मैं यहाँ हूँ, लायवस्की ने जवाब दिया। "तुम क्या चाहते हो?"

"काग़ज़।"

लायवस्की सुस्ती से उठा, उसके सिर में चक्कर आ रहा था, दूसरे कमरे में गया—जम्हाई लेता और अपने स्लीपरों को फटफटाता हुआ। वहाँ खुली हुई खिड़की पर, जो सड़क की तरफ खुलती थी, उसका साथी एक जवान क्लर्क खड़ा हुआ था जिसने खिड़की की चौखट पर कुछ सरकारी कागज़ात फैला रखे थे।

"एक मिनट ठहरो, मेरे प्यारे दोस्त," लायवस्की ने कोमलता पूर्वक कहा और स्याही ढूंढने चला गया। खिड़की पर लौट कर उसने कागजों को बिना देखे हुए ही दस्तखत कर दिये और बोला— "गर्मी है!"

"हाँ, आज तुम आ रहे हो?"

"कह नहीं सकता।......मेरी तबियत ठीक नहीं है। शेश्कोवस्की से कह देना कि मैं डिनर के बाद उससे मिलूंगा।"

क्लर्क चला गया। लायवस्की फिर अपने सोफे पर लेट गया और सोचने लगा:

"मुझे सारी परिस्थति को भली प्रकार जाँचना और उस पर विचार करना चाहिए। यहाँ से जाने से पहले मुझे अपना कर्ज़ चुका देना चाहिए। मुझे लगभग दो हजार रूबल कर्ज़ के देने हैं। मेरे पास एक भी पैसा नहीं है। ..... यह ठीक है कि इतना यह महत्वपूर्ण नहीं है; मैं कुछ अभी अदा कर दूंगा, किसी न किसी तरह और बाकी बचा हुआ पीटर्सबर्ग पहुँच कर भेज दूंगा। सबसे बड़ी समस्या तो नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना की है।....... सबसे पहले हम लोगों को अपने सम्बन्धों को स्पष्ट कर लेना चाहिए।......हाँ।"

कुछ देर बाद वह सोच रहा था कि सामोलेन्को के पास उसकी सलाह लेने जाना क्या ज्यादा अच्छा नहीं होगा।

"मैं जा सकता हूँ," उसने सोचा, "परन्तु इससे लाभ क्या होगा ? मैं सिर्फ औरतों के व्यक्तिगत कमरों के बारे में, औरतों के बारे में, ईमानदारी और बेईमानी के बारे में कुछ असङ्गत बातें कह बैठूंगा। अगर मुझे अपने प्राण बचाने के लिए जल्दी करनी है, अगर इस अभागी गुलामी में मेरा दम घुटा जा रहा है और मैं अपनी हत्या स्वयं कर रहा हूँ तो ईमानदारी और बेईमानी के बारे में बातें करने से फायदा ही क्या होगा ?......आखिरकार किसी को यह तो सोचना चाहिए कि ऐसी जिन्दगी बिताना जैसी कि मैं बिता रहा हूँ, इतनी नीच और क्रूर है कि इसके अलावा और सब चीजें बहुत ही मामूली और नगण्य प्रतीत होती हैं। भाग चलो," वह बड़बड़ाया, बैठते हुए— "भाग चलो !"

विर्जन समुद्री किनारा, असह्य गर्मी और धुन्धले बकायन के रङ्ग वाले पहाड़ों का उदास दृश्य, हमेशा एक सा और खामोश, सर्वत्र एकाकी रहने वाला, आदि बातों ने उसके हृदय में एक निराशा की भावना उत्पन्न कर दी और इससे वह उनींदा हो उठा और उसकी सारी स्फूर्ति समाप्त हो गई। वह शायद बहुत चतुर, प्रतिभावान और अत्यधिक ईमानदार था। सम्भव था कि अगर वह समुद्र और पहाड़ों द्वारा चारों तरफ से घिरा हुआ न होता तो जेम्स्तवो का बहुत बड़ा नेता, राजपुरुष, व्याख्याता या राजनीतिक लेखक अथवा सन्त बनता। कौन जानता है ? अगर ऐसी बात है तो इस बात पर बहस करना बेवकूफी है कि नहीं कि यह ईमानदारी या बेईमानी का काम था कि जब एक प्रतिभावान और उपयोगी मनुष्य — एक कलाकार या गायक— मिसाल के लिए,जेल से भागने के लिए दीवार तोड़ता है और अपने जेलरों को धोखा देता है। हर चीज ईमानदारी है जब कोई आदमी ऐसी स्थितिमें होता है।

दो बजे लायवस्की और नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना डिनर पर बैठे। जब रसोइये ने उनके सामने चावल और टमाटर का शोरवा परोसा तो

लायवस्की ने कहा :

"हर रोज वही चीज। गोभी का शोरवा क्यों नहीं बना ?"

"गोभी मिलती नहीं।"

"बड़ी अजीब बात है। सामोलेन्को के यहाँ गोभी का शोरवा है और मार्या कोन्स्तेन्तीनोव्ना के यहाँ भी गोभी का शोरवा है और सिर्फ मुझे ही यह फीकी रद्दी चीज खानी पड़ती है। इस तरह हम लोगों का काम नहीं चल सकता, डार्लिंग।"

जैसा कि अधिकांश पतियों और पत्नियों के साथ आमतौर पर होता है वैसे ही न.द्येझ्दा फ्लोदोरोव्ना और लायवस्की का प्रारम्भ में एक भी डिनर ऐसा नहीं बीतता था जब कि उन लोगों ने कोई ऊधम न खड़ा कर दिया हो और एक दूसरे को गालियाँ न बताई हों। परन्तु जब से लायवस्की ने यह तय कर लिया था कि वह उसे प्यार नहीं करता, तब से उसने नाद्येझ्दा फ्योदोरोव्ना को हर बात में मनमानी कर लेने देने की कोशिश की थी, उसके साथ अच्छी तरह और नम्रता पूर्वक बातें करता था, मुस्कराता था और 'डार्लिंग' कह कर पुकारता था।

"इस शोरवे का स्वाद बारहमासी के पौधे का सा लगता है," उसने मुस्कराते हुए कहा। उसने अपने पर काबू रखने और सुशील बने रहने का प्रयत्न किया परन्तु यह कहने से अपने को न रोक सका। कोई भी घर-गृहस्थी की देखभाल नहीं करता।.........अगर तुम बहुत बीमार हो या पढ़ने में व्यस्त रहती हो, तो मुझे रसोई की देखभाल करने दो।"

पहले के दिनों में उसने लायवस्की को यह जवाब दिया होता : "जो चाहो सो करो," या, "मैं देख रही हूँ कि तुम मुझे रसोईदारिन बनाना चाहते हो;" परन्तु अब उसने लायवस्की की तरफ दीनता पूर्वक देखा और शर्म से लाल पड़ गई।

'अच्छा आज तुम्हारी तबियत कैसी है ?" उसने स्नेह पूर्वक पूछा।

"आज मैं ठीक हूँ। मामूली कमजोरी के अलावा और कोई बात नहीं है।"

"तुम्हें अपना ख्याल रखना चाहिए, डार्लिंग। मैं तुम्हारे लिए बहुत ज्यादा परेशान हूँ।"

नादयेज्दा फ्योदोरोव्ना कुछ बीमार रहती थी। सामोलेन्को ने बताया था कि उसे पारी से आने वाला बुखार था और उसे कुनैन खाने को दी थी। दूसरे डाक्टर, उस्तिमोविच ने, जो एक लम्बा, पतला और रूखा आदमी था, जो दिन में घर पर बैठा रहता था और शाम को समुद्र तट पर अपने दोनों हाथ पीठ पीछे बाँधे हुए और पीठ के सहारे एक बेंत पकड़े हुए, इधर से उधर खाँसता हुआ घूमा करता था, बताया था कि उसे एक औरतों वाली बीमारी थी जिसके लिए उसने सेकने का इलाज बताया था। पहले जब लायवस्की उसे प्यार करता था तो नादयेज़्दा फ्योदोरोव्ना की बीमारी उसके हृदय में दया और भय की भावना भर देती थी; अब वह उसकी बीमारी में भी बहाने बाजी देखता था। उसका पीला उनींदा चेहरा, निष्प्रभ आँखें, उसकी उत्साहहीनता और जम्हाइयाँ जो बुखार के दौरे के बाद उसे आया करती थीं और जब उसे बुखार आता था तो वह एक शाल ओढ़े पड़ी रहती थी और एक औरत की अपेक्षा एक लड़के की तरह अधिक दिखाई पड़ती थी। उसका कमरा बन्द और घुटा हुआ सा था—इन सब बातों ने, उसकी राय में, उस स्वप्न को नष्ट कर दिया था और प्रेम और विवाह के खिलाफ एक शक्तिशाली तर्क बन गयी थीं।

दूसरी बार उसे पालक का साग, सख्त उबले हुए अण्डों के साथ दिया गया, जब कि नादयेज़्दा फ्योदोरोव्ना ने जो बीमार थी दूध और लस्सी खाई। जब उसने गम्भीर चेहरा बनाए हुए चम्मच से लस्सी उठाई और उसे धीरे धीरे खाने लगी, दूध का घूंट भरती रही और लायवस्की ने जब निगलने की आवाज सुनी तो उसके हृदय में ऐसी भयङ्कर घृणा उत्पन्न हुई जिससे उसका दिमाग भन्ना उठा। उसने महसूस किया कि इस तरह की भावना एक कुत्ते के लिए भी

रखना उसका अपमान करना है, परन्तु वह नाराज था, अपने से नहीं बल्कि नादयेज़्दा फ्योदोरोव्ना से, जिसने उसके हृदय में ऐसी भावना पैदा कर दी थी। उसने इस बात को अब समझा कि प्रेमी कभी अपनी प्रेमिका की हत्या क्यों कर बैठते हैं। यह ठीक था कि वह उसकी हत्या नहीं करेगा परन्तु अगर इस समय वह एक जूरी होता तो ऐसे कातिल को साफ छोड़ देता।

"भगवान दया करे, डार्लिंग," डिनर के बाद लायवस्की ने कहा और नादयेज्दा फ्योदोरोव्ना के माथे पर चुम्बन किया।

अपने पढ़ने के कमरे में वापस आ कर, वह पाँच मिनट तक इधर से उधर घूमता और अपने बूटों की तरफ देखता रहा। फिर अपने सोफे पर बैठ गया और बड़बड़ाने लगा :

"भाग जाऊँ, भाग जाऊँ! हमें स्थिति को स्पष्ट कर लेना चाहिए और भाग चलना चाहिए।"

वह सोफे पर लेट गया और फिर सोचने लगा कि शायद उसी की गलती से नादयेज्दा फ्योदोरोव्ना के पति की मृत्यु हुई।

"किसी आदमी को एक औरत से प्रेम करने के लिये दोष देना या किसी औरत से प्रेम करना बन्द कर देने के लिये दोष देना, बेवकूफी है," उसने लम्बे लेटते हुए और अपनी टाँगों को ऊपर उठाते हुए जिससे कि उसके बूट ऊपर उठ जाँय अपने आप को विश्वास दिलाने की कोशिश की। "प्रेम और घृणा हमारे काबू की चीज़ें नहीं हैं। जहाँ तक उसके पति का सम्बन्ध है, यह हो सकता है कि अप्रत्यक्ष रूप से मैं उसकी मौत के कारणों में से एक रहा हूँ; परन्तु फिर भी क्या यह मेरा दोष था कि मैं उसकी स्त्री से प्रेम करने लगा और वह मुझ से प्रेम करने लगी?"

फिर वह उठ खड़ा हुआ और अपनी टोपी ढूंढ कर, अपने साथी शेस्कोवस्की के घर की तरफ चल दिया, जहाँ सरकारी क्लर्क हर रोज़ 'विन्ट' खेलने और बीयर पीने के लिये इकठ्ठे हुआ करते थे।

"मेरा अनिश्चय मुझे हेमलेट की याद दिला देता है," रास्ते में लायवस्की ने सोचा। "शेक्सपीयर ने इसे कितनी अच्छी तरह व्यक्त किया है! आह कितनी सचाई से!"

३

सामाजिक मिलनसारी के लिये और बिना परिवार वाले नये आगन्तुकों के प्रति सहानुभूति दिखाने के लिए, क्योंकि कस्बे में एक भी होटल न होने की वजह से उन लोगों को खाने पीने की बड़ी तकलीफ रहती थी, डाक्टर सामोलेन्को ने अपने घर में होटल की सी एक भोजन करने वाली मेज लगा रखी थी। इस समय वहाँ केवल दो ही व्यक्ति ऐसे थे जो रोज उसके साथ खाना खाया करते थे : इनमें एक नौजवान प्राणि शास्त्र विशारद था जिसका नाम वॉन कोरेन था, जो गर्मियों में काले समुद्र के किनारे मछलियों के भ्रूण-विज्ञान का अध्ययन करने आया था। दूसरा व्यक्ति पोविएदोव नामक एक छोटा पादरी था, जो अभी विद्यालय छोड़ कर आया था और जिसे एक बुड्ढे पादरी की जगह काम करने के लिए जो अपना इलाज कराने बाहर चला गया था। इस कस्बे में भेजा गया था। दोनों, दोनों समय के भोजन के लिए बारह बारह रूबल माहवार दिया करते थे और सामोलेन्को ने उनसे हररोज ठीक २ बजे आने का वायदा कर लिया था।

आमतौर पर वॉन कोरेन ही पहले आया करता था। वह चुपचाप बैठक में आ कर बैठ गया और मेज पर से एक एलबम उठा कर बड़े गौर से उन धुंधली तस्वीरों को देखना शुरू कर दिया जो पाजामे और लम्बे टोप पहने हुए अनजान पुरुषों और स्कर्ट और टोपियाँ पहने महिलाओं की थीं। सामोलेन्को को इनमें से बहुत कम का नाम याद रह गया था और वे लोग, जिन्हें वह भूल चुका था, उनके बारे में उसने गहरी साँस लेते हुए कहा : "बहुत अच्छा व्यक्ति है, बहुत ज्यादा होश्यार !" जब वॉन कोरेन ने एलबम पूरा देख लिया तो उसने बिना दरवाजों वाली आलमारी में से एक पिस्तौल उठा ली और अपनी बाँयी आँख सिकोड़ कर प्रिंस वोरोत्सोव के चित्र की तरफ जानबूझ कर निशाना साधा, या शीशे के सामने स्थिर खड़े हो कर अपने काले चेहरे, चौड़े

माथे और काले बालों जो हब्शी के बालों की तरह घुंघराले थे तथा अपनी फीके रङ्ग वाली सूती कमीज जिस पर पश्मी कालानों का तरह बड़े बड़े फूल बने हुए थे और चौड़ी चमड़े की पेटी जिसे वह वास्कट की जगह पहना करता था, की तरफ बहुत देर तक ग़ौर से देखता रहा। अपने प्रतिबिम्ब का ध्यान उसे उन तस्वीरों की तरफ देखने से या पिस्तौल से खेलने से अधिक सन्तोष देता हुआ प्रतीत होता था। वह अपने चेहरे, अपनी सुन्दर कटी हुई दाढ़ी, चौड़े कन्धों जो स्पष्ट रूप से उसके सुन्दर स्वास्थ्य और शारीरिक शक्ति का परिचय देते थे, से पूरी तरह सन्तुष्ट था। वह अपने सुन्दर वस्त्रों व उस पतलून से, जिसका रङ्ग उसकी कमीज के रङ्ग से मिलता था और जो उसके भूरे जूतों तक नीची थी, भी पूरी तरह सन्तुष्ट था।

जब वह एलबम को देख रहा था और शीशे के सामने खड़ा हुआ था, उस समय रसोईघर में और गलियारे में, सामोलेन्को, बिना कोट वास्कट पहने हुए, गर्दन खोले हुए, उत्तेजित और पसीने से नहाया मेजों के चारों तरफ व्यस्त था। कभी सलाद मिलाता था या कोई चटनी बनाने लगता था या ठंडे शोरबे के लिये गोश्त, ककड़ी या प्याज तैयार करने लगता था। उसने उस अर्दली की तरफ, जो उसकी मदद कर रहा था, भयङ्कर रूप से घूरा और पहले उसे चाकू दिखाया और फिर चम्मच से धमकाया।

"सिरका लाओ," उसने कहा। "यह सिरका नहीं है—सलाद का तेल है!" वह पैर पटकते हुए चीखा। "तुम किधर चले, जङ्गली?"

"मक्खन लाने, योर एक्सीलैन्सी," घबड़ाये हुए अर्दली ने काँपती आवाज में जवाब दिया।

"जल्दी करो, मक्खन आलमारी में रखा है! और दारिया से कहो कि अमृतबान में ककड़ी के साथ सोया का साग मिला दे! सोया का

साग, मलाई ढक दो, बेवकूफ सुस्त आदमी नहीं तो इसमें मक्खियाँ पड़ जाँयगी !'

सारा मकान उसकी चिल्लाहट से प्रतिध्वनित होता लग रहा था। जब दो बजने में दस या पन्द्रह मिनट रह गये तब पादरी आया। वह बाईस साल का एक दुबला पतला युवक था, जिसके बाल लम्बे, दाढ़ी सफाचट और मसें अभी भीग रही थीं। बैठक में पहुँच कर उसने पवित्र मूर्ति के सम्मुख अपने ऊपर क्रास का निशान बनाया, मुस्कराया और वॉनकोरेन की तरफ अपना हाथ बढ़ा दिया।

"गुड मॉर्निंग," प्राणि-शास्त्र-विशारद ने अनुत्साह पूर्वक कहा। "तुम कहाँ रहे ?"

"मैं बन्दरगाह में मछली पकड़ रहा था।"

"ओह, सचमुच......यह स्पष्ट है पादरी, कि तुम कभी भी काम में व्यस्त नहीं रहोगे।"

"क्यों नहीं रहूँगा ? काम कोई बीयर तो है नहीं, यह जङ्गल में भी नहीं भाग जाता।" मुस्कराते हुए और अपने सफेद कोट की जेब में दोनों हाथ पूरी तरह घुसेड़ते हुए पादरी ने कहा।

"यहाँ कोई तुम्हें कोड़े लगाने वाला नहीं है," वॉनकोरेन ने गहरी साँस ली।

इसके बाद फिर पन्द्रह या बीस मिनट बीत गये और फिर भी उन्हें डिनर के बाद नहीं बुलाया गया। वे लोग अब भी अर्दली को रसोई में और इधर उधर दौड़ते हुए देख रहे थे, दौड़ते समय जोर जोर से बूट पटक रहा था। उन्हें सोमेलेन्को के चोखने की आवाज भी सुनाई दे रही थी।

"इस मेज पर रखो! तुम्हारा दिमाग कहाँ है ? पहले इसे साफ करो।"

भूख से बेचैन पादरी और वॉन कोरेन ने फर्श पर अपनी एड़ियों को बजाना शुरू कर दिया। वे इस तरह थियेटर के दर्शकों के समान

अपनी अधीरता प्रकट कर रहे थे। आखिरकार दरवाजा खुला और परेशान अर्दली ने घोषणा की कि डिनर तैयार है। भोजन करने के कमरे में उनको मुलाकात सोमेलेन्को से हुई जिसका चेहरा लाल हो रहा था। वह गुस्से में था और रसोइघर की गर्मी को वजह से पसीने से नहा रहा था। उसने उनको तरफ कठोरतापूर्वक देखा और भयभीत सा हो कर शोरवे वाली गहरी रिकाबी का ढक्कन उठाया और एक एक प्लेट भर कर उन दोनों को दी। और सिर्फ उस समय जब उसे इस बात का यकीन हो गया कि वे लोग उसे रुचिपूर्वक पी रहे हैं, वह अपनी गहरी आरामकुर्सी पर बैठ गया। उसका चेहरा आनन्दित दिखाई पड़ रहा था और आँखें नम हो आईं।......उसने जान बूझ कर अपने लिए एक गिलास वोदका का भरा और बोला :

"नवीन सन्तति के स्वास्थ्य के लिये।"

लायवस्की के साथ हुए इस वार्तालाप के उपरांत, सुबह से लेकर भोजन के समय तक सामोज़ेन्को इस बात को अनुभव करता रहा कि उसके हृदय पर एक बोझा सा रखा हुआ है हालांकि वह बहुत खुश हो रहा था। वह लायवस्को के लिए दुखी था और उसकी मदद करना चाह रहा था। शोरये से पहले वोदका का एक गिलास पी कर उसने गहरी साँस ली और बोला :

"आज वान्या लायवस्की से मेरी मुलाकात हुई थी। आजकल वह बड़ी मुसीबत में है बेचारा, जीवन का सांसारिक पक्ष उसके लिए अधिक अच्छा नहीं है और सबसे बुरी बात यह है कि यह मनोविज्ञान उसके लिए बहुत भारी पड़ रहा है। मुझे इस लड़के के लिए दुख है।"

"अच्छा वही एक ऐसा व्यक्ति है जिसके लिए मुझे दुख नहीं है," वॉनकोरेन ने कहा "अगर वह आकर्षक व्यक्ति डूब रहा होता तो मैं उसे एक लकड़ी से और भी नीचे धकेल देता और कहता, 'डूब जाओ, भाई, डूब जाओ।'........."

"यह ग़लत है तुम ऐसा नहीं करोगे।"

"तुम ऐसा क्यों सोचते हो?" उस प्राणि-शास्त्र विशारद ने अपने कन्धे सिकोड़ते हुए कहा। "मैं उसी तरह कोई अच्छा काम करने के योग्य हूँ जितना कि तुम।"

"किसी आदमी को डुबाना क्या अच्छा काम है?" पादरी ने पूछा और हँस पड़ा।

"लायवस्की को? हाँ।"

"मेरा ख्याल है कि आज शोरवे में किसी चीज की कमी रह गई है·········" सामोलेन्को ने बात बदलने की कोशिश करते हुए पूछा।

"लायवस्की पूरी तरह से घातक प्राणी है। वह समाज के लिए उतना ही घातक है जितना कि हैजे का कीड़ा," वॉन कोरेन कहता रहा। "उसे डुबा देना एक पुण्य का काम होगा।"

"अपने पड़ोसी के बारे में इस तरह की बातें कहना तुम्हें शोभा नहीं देता। हमको यह बताओ कि तुम उससे किसलिये नफरत करते हो?"

"बेवकूफी की बातें मत करो डाक्टर, किसी कीड़े से नफरत और घृणा करना बेवकूफी है, परन्तु चाहे जो कुछ भी होता रहे हरेक को, जिससे भी हम मिलते हैं, बिना किसी भेदभाव के अपना पड़ौसी समझ लेने में और इस बात में कोई अन्तर नहीं रह जाता कि हम आलोचना करना बन्द कर दें, मनुष्यों के बारे में सीधी और खरी बातें कहना छोड़ दें और अपने को दरअसल, जिम्मेदारी से पूरी तरह मुक्त कर लें। मैं तुम्हारे लायवस्की को एक लफंगा समझता हूँ; मैं इस बात को छिपाता नहीं और मैं उसके साथ इसी तरह का बर्ताव करने में पूरी तरह से अपने को ठीक समझता हूँ। अच्छा तुम उसे अपने पड़ोसी के रूप में देखते हो—और अगर तुम चाहो तो उसका चुम्बन भी कर सकते हो: तुम उसे अपने पड़ौसी के रूप में देखते हो और उसका अर्थ यह है कि

उसके बारे में तुम्हारे विचार बिल्कुल वैसे ही हैं जैसे कि मेरे और पादरी के बारे में हैं; यह तो कोई विचार ही नहीं रहा। तुम सब के प्रति समान रूप से उदासीन हो।"

"किसी आदमी को लफङ्गा कह देना।" सामोलेन्को ने मुँह बिगाड़ कर घुमाते हुए कहा—"यह इतनी गलत बात है कि मुझे समझाने के लिए शब्द ही नहीं मिल रहे।"

"आदमी अपने कामों से समझे जाते हैं," वॉन कोरेन ने कहना जारी रखा। "अब तुम फैसला करो, पादरी।.........मैं तुमसे बात कर रहा हूँ, पादरी। मिस्टर लायवस्की का चरित्र तुम्हारे सामने एक लम्बी चीनी पहेली की तरह खुला हुआ रखा है, और तुम इसे शुरू से लेकर अन्त तक पढ़ सकते हो। वह यहां रहते हुए पिछले दो साल से क्या कर रहा है? हम उसके कामों को अपनी उङ्गलियों पर एक एक गिनेंगे। पहला काम: उसने कस्बे के रहने वालों को 'विन्ट' खेलना सिखाया है: दो साल पहले यहाँ इस खेल को कोई भी नहीं जानता था; अब सब लोग सुबह से लेकर काफी रात तक यही खेल खेलते रहते हैं; यहाँ तक कि औरतें और बच्चे भी खेलने लगे हैं। दूसरा काम: उसने कस्बे वालों को बीयर पीना सिखा दिया है; इसको भी पहले यहाँ कोई नहीं जानता था। कस्बे वाले उसके प्रति इस बात के आभारी हैं कि उसने उन्हें कई तरह की शराबों का ज्ञान करा दिया है, जिससे वे लोग अब आँख बन्द करके कोस्लेलोव की वोदका और स्मरनोव की नम्बर २१ की शराब में भेद बता सकते हैं। तीसरा काम: पहले जमाने में यहाँ के आदमी दूसरों की स्त्रियों से गुप चुप प्रेम करते थे, उसी उद्देश्य से जिससे चोर खुल कर चोरी न करके चुपचाप चीजें चुराते हैं। व्यभिचार ऐसी बात समझी जाती थी जिसे खुल कर करने में लोगबाग लज्जा का अनुभव करते थे। लायवस्की ने इस काम में पथ-प्रदर्शक का

काम किया है; वह खुल्लमखुल्ला दूसरे की स्त्री के साथ रहता है।.........
चौथा काम.........''

वान कोरेन ने जल्दी से अपना शोरबा पिया और अपनी प्लेट अर्दली को पकड़ा दी।

"मैं लायवस्की को, पहले महीने में ही, जब उससे परिचय हुआ था, समझ गया था, वह पादरी को सम्बोधित करते हुए कहता गया—"हम लोग यहाँ एक साथ ही आये थे। उस तरह के आदमी दोस्ती बढ़ाने के, आत्मीयता स्थापित करने के और परस्पर एक दूसरे पर निर्भर रहने के और इसी तरह की दूसरी बातों के बड़े शौकीन होते हैं क्योंकि उन्हें हमेशा 'विन्ट' खेलने के लिए, शराब पीने के लिए और दावतें उड़ाने के लिये साथियों की जरूरत पड़ती रहती है। साथ ही वे लोग बातूनी होते हैं और उन्हें उनकी बातें सुनने वाले चाहिए। हम लोग दोस्त बन गए—इसका नतीजा यह हुआ कि वह हर रोज मेरे पास आने लगा, मेरे काम करने में रुकावट होने लगी और मुझसे अपनी पत्नी से सम्बन्धित गुप्त बातें करने लगा। शुरू से ही उसके बहुत ज्यादा बन कर बातें करने की तरफ मेरा ध्यान गया जिससे मुझे नफरत सी होने लगी। दोस्त होने के नाते मैंने उस पर हमला शुरू कर दिया कि वह इतनी शराब क्यों पीता है, अपनी औकात से अधिक खर्च क्यों करता है और कर्जदार बनता जा रहा है, वह कोई काम क्यों नहीं करता और किताबें क्यों नहीं पढ़ता, उसकी चाल ढाल इतनी भद्दी क्यों है और उसका ज्ञान इतना कम क्यों है; और मेरे इन सब सवालों के जवाब में वह बुरी तरह मुस्कराता, गहरी साँस लेता और कहता 'मैं असफल और बेकार आदमी हूँ;' या : 'मेरे प्यारे दोस्त, तुम हम लोगों से जो जमींदार वर्ग के ध्वंसावशेष मात्र हैं, क्या आशा करते हो?' या : 'हम लोग पतित हो गए हैं.........' या वह ओनीजिन, पेकोरिन, बायरन की केन या बजारोव के बारे में बेकार की लम्बी कहानी शुरू कर

देता और उनके बारे में कहता : 'वे लोग शरीर और आत्मा के रूप में हमारे पुरखे हैं।' इसलिए हम लोगों को यह बात समझ लेनी चाहिए कि यह उसका दोष नहीं था कि आफिस में सरकारी लिफाफे हफ्तों तक बन्द पड़े रहते और यह कि वह खुद शराब पीता था और दूसरों को पीना सिखाता था बल्कि इसकी जिम्मेदारी श्रोनीजिन, पेल्कोरिन और तुर्गनेव पर थी जिन्होंने असफलता और बेकार व्यक्ति का आविष्कार किया था। उसकी अत्यधिक विषयासक्ति और अयोग्यता का कारण, तुम जानते थे, स्वयं उसी में निहित नहीं था बल्कि कहीं दूसरी ही जगह था। और इसलिए—कितना बढ़िया विचार है!—यह अकेला वही नहीं है जो विलासी, झूठा और घृणास्पद है, परन्तु हम लोग......... हम लोग आठवें दशक में रहने वाले,' 'हम लोग जो जमींदार वर्ग की निर्जीव और अशक्त उपज हैं,' 'सभ्यता ने हमें अपंगु बना दिया है'... दरअसल हमें इस बात को समझना है कि लायवस्की जैसा महान् व्यक्ति अपने पतन में भी महान् है: कि उसकी विषयासक्ति, उसमें संस्कृति और नैतिक पवित्रता का अभाव, प्राकृतिक इतिहास की एक ऐसी घटना है जो अवश्यम्भावी थी; कि इसके कारण विश्वव्यापी और तत्व-पूर्ण हैं; और हमें लायवस्की के सामने एक लैम्प लटका देना चाहिए क्योंकि वह अपने युग का, प्रभावों का, वंशपरम्परागत प्राप्त गुणों का, और इसी तरह की अन्य बातों का शिकार है। सारे अधिकारी और उनकी स्त्रियाँ मंत्रमुग्ध से हो गये थे जब उन लोगों ने उसकी बातें सुनीं और मैं बहुत समय तक यह समझने में असमर्थ रहा था कि मुझे किस तरह के आदमी से पाला पड़ा था—एक कुटिल व्यक्ति से या एक चालाक बदमाश से। उसकी तरह के व्यक्ति जो अपने अल्प ज्ञान के कारण ऊपरी रूप से विद्वान मालूम पड़ते हैं और जो अपनी योग्यताओं के बारे में बहुत बात करते हैं, अपने को अप्रत्याशित रूप से दुरूह चरित्र वाला सिद्ध करने में बड़े चालाक होते हैं।"

"जबान बन्द करो !" साम्रोलेन्को उबल पड़ा। "मैं अपने सामने एक भले आदमी की बुराई करने की आज्ञा नहीं दूंगा।"

"रोको मत, अलेक्ज़ेन्द्र देविदिच," वॉन कोरेन ने शान्तिपूर्वक कहा: "मैं अभी समाप्त कर रहा हूँ। किसी भी रूप में लायवस्की एक पेचीदे चरित्र वाला प्राणी नहीं है। यह है उसका चारित्रिक ढाँचा: सुबह स्लीपर, स्नान और फिर काफी फिर डिनर के समय तक स्लीपर, एक आवश्यक कार्य, और बातचीत: दो बजे स्लीपर, डिनर और शराब: पाँच बजे स्नान, चाय और शराब, फिर 'विन्ट' और सोना, दस बजे भोजन और शराब, और आधी रात के बाद सोना और औरत। उसका अस्तित्व इस संकीर्ण प्रोग्राम में उसी तरह सीमित है जिस तरह अन्डा अपने छिलके में सीमित होता है। चाहे वह चलता हो या बैठा हो, नाराज हो, लिख रहा हो, आनन्द मना रहा हो, यह सब शराब, ताश, स्लीपर और औरतों में समाप्त हो जाता है। औरत, उसके जीवन में घातक और बहुत भयंकर पार्ट अदा करती है। वह हमें खुद बताता है कि तेरह साल की उमर में वह प्रेम करने लगा था, कि जब वह फर्स्ट ईयर का विद्यार्थी था वह एक महिला के साथ रहता था जिसका उस पर बहुत प्रभाव था और जिसके प्रति वह अपनी संगीत की शिक्षा के लिए आभारी था। सैकिण्ड ईयर में वह चकले से एक वेश्या खरीद लाया था और उसे अपने समान स्तर तक उठा दिया था—इस तरह कि उसने उस वेश्या को अपनी गृहणी की तरह रख रखा था। वह उसके साथ छः महीने तक रही थी और फिर चकले वाले के पास वापिस भाग गई थी और उसके इस भाग जाने ने उसे बहुत आत्मिक-क्लेश पहुँचा। था अफसोस ! उसकी वेदना इतनी गहरी थी कि उसे युनिवर्सिटी छोड़ देनी पड़ी थी और घर पर बेकार पड़े हुए दो साल काटने पड़े थे। परन्तु यह सब अच्छे के लिए ही हुआ था। घर पर उसने एक विधवा से दोस्ती कर ली थी

जिसने उसे यह सलाह दी थी कि वह धर्मशास्त्र का अध्ययन छोड़ कर कला का अध्ययन करे। और उसने ऐसा ही किया। जब वह अपनी डिग्री ले चुका था, वह अपनी इस वर्तमान······क्या नाम है उसका ? के प्रेम में बुरी तरह पड़ गया।········एक विवाहिता स्त्री; और उसके साथ यहाँ, काकेशस को भाग आने के लिये मजबूर हो गया। वह हमें विश्वास करने को कहता है कि ऐसा उसने अपने सिद्धान्तों की खातिर किया था, यह देखते हुए······कल अगर आज नहीं तो, वह उससे ऊब उठेगा और पीटर्सबर्ग को वापिस उड़ जायगा, और यह भी, उसके सिद्धान्तों के लिए ही होगा।"

"तुम कैसे जानते हो ?" प्राणी-शास्त्र-विशारद की तरफ गुस्से से देखता हुआ सामोलेन्को घुर्राया। "अच्छा तो यह है कि तुम अपना खाना खाओ।"

दूसरी बार उबले हुए 'मुल्लट' के साथ पोलैंड की चटनी परोसी गई। सामोलेन्को ने दोनों को एक एक पूरा 'मुल्लट' दिया और उन पर अपने हाथ से चटनी डाली। दो मिनट खामोशी में बीत गए।

"औरत हर आदमी की जिन्दगी में बड़ा महत्वपूर्ण भाग अदा करती है," पादरी ने कहा "तुम इससे बच नहीं सकते।"

"हाँ ठीक है, लेकिन किस हद तक ? हम सब में से हरेक के लिए औरत का मतलब है माँ, बहिन, पत्नी, मित्र। लायवस्की के लिये यह सब कुछ है परन्तु दूसरी तरफ प्रेमिका के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। औरत—यानी कि उसके साथ रहना—उसके जीवन का सुख और उद्देश्य है; वह प्रसन्न है, दुखी है, परेशान है, जादू टोने के प्रभाव से मुक्त है—केवल औरत की वजह से। उसकी जिन्दगी अरुचिकर हो उठती है—इसके लिए औरत जिम्मेदार है; एक नए जीवन की सुनहली आभा दिखाई देने लगती है, आदर्श सामने आ खड़े होते हैं—इसके

लिए फिर औरत की तरफ देखना पड़ता है।.........वह सिर्फ उन्हीं किताबों और तस्वीरों में मजा लेता है जिसमें औरत होती है। हमारा जमाना, उसके ख्याल से, चौथे दशक और छटे दशक के मुकाबले बहुत नीचा और निर्धन है क्योंकि हम लोग यह नहीं जानते कि प्रेम की वासना और हर्षोन्माद से किस तरह पूरी तरह से छुटकारा पाएं। इन विलासी लोगों के मस्तिष्क में भ्रूण के नाल पर के गुल्म की तरह का कोई खास कीड़ा होता होगा जो मस्तिष्क को दबा देता है और उनके सम्पूर्ण मनोविज्ञान का सञ्चालन करता है। लायवस्की को गौर से देखना जब वह कहीं भी समाज में बैठा हो। तुम देखोगे जब कोई उसकी उपस्थिति में कोई भी साधारण प्रश्न उठाता है, मिसाल के तौर पर जैसे तहखाना या प्रवृत्ति, वह अलग बैठा रहता है, न बोलता है और न सुनता है; वह सुस्त और माया जाल से मुक्त सा दिखाई देता है; कोई भी वस्तु उसके लिये कोई आकर्षण नहीं रखती, हर चीज गन्दी और तुच्छ है। परन्तु जैसे ही तुम मर्द या औरत की बातें करने लगते हो, जैसे कि, यह तथ्य कि मकड़ी, बच्चे देने के बाद, मकड़े को खा जाती है—उसकी आँखें उत्सुकता से चमकने लगती हैं, उसका चेहरा खिल उठता है और दरअसल वह आदमी पुनः जी उठता है। उसके सारे विचार, कितने ही अच्छे, ऊँचे या तटस्थ क्यों न हों, उनमें एक बात की समानता होती है। मान लो कि तुम उसके साथ सड़क पर जा रहे हो और तुम्हें एक गधा मिलता है।..... "कृपया यह बताइये," वह पूछता है, "अगर एक गधे और ऊँटनी का सम्भोग कराया जाय तो क्या होगा? और उसके स्वप्न! तुमसे उसने अपने स्वप्नों के बारे में बताया है? यह बड़े ऊँचे होते हैं। पहली बात: वह स्वप्न देखता है, कि चाँद के साथ उसकी शादी हो गई है, फिर यह कि उसे पुलिस के सामने बुलाया जाता है और आज्ञा दी जाती है कि वह एक सारंगी के साथ रहे.........."

पादरी कहकहा मार कर हँस पड़ा। सोमोलेन्को घुम्राया और गुस्से से अपना चेहरा ऐसा बिगाड़ लिया जिससे हँस न उठे। परन्तु वह अपने को रोक न सका और हँसने लगा।

"और यह सब बेवकूफी की बातें हैं!" उसने अपने आँसू पोंछते हुए कहा। "हाँ, भगवान की कसम, यह बेवकूफी है।"

४

पादरी बड़ी जल्दी खुश हो उठता था। वह हर मामूली बात पर तब तक हँसता रहता था जब तक कि उसकी पसलियों में दर्द न होने लगता था, जब तक कि वह रुकने के लिये मजबूर न हो जाता था। ऐसा लगता था मानो वह आदमियों की संगत में इसीलिए बैठता था क्योंकि उनके चरित्र का एक हास्यास्पद पक्ष भी था और क्योंकि उसे उनके नाम धरने का मौका मिलता था। उसने सामोलेन्को का नाम रखा था "बड़ा मकड़ा," उसके अर्दली का "बत्तक।" वह हर्षोन्मत्त हो उठा था जब एकबार वॉनकोरेन ने लायवस्की और नादयेज़्दा फ्योदोरोव्ना को "जापानी बन्दर" कहा था। वह आदमियों की शकलों को ललचाई निगाहों से देखता था, बिना पलक झपकाए बातें सुनता था और यह देखा जा सकता था कि उसकी आँखें हँसी से भर उठती थीं और उसका चेहरा उस क्षण की आशा से कठोर हो उठता था जब वह निर्द्वन्द हो कर खिलखिला कर हँस सकता।

"वह एक बिगड़ा हुआ और नीच किस्म का आदमी है," प्राणी-शास्त्र-विशारद कहता रहा जब कि पादरी उसके चेहरे पर अपनी आँखें गड़ाये रहा, इस आशा में कि वह कोई मज़ेदार बात कहेगा। "ऐसा अवसर नहीं होता जब कि किसी को ऐसे प्रभाव से पाला पड़ता हो। शरीर से वह आलसी, कमजोर, समय से पहले वृद्ध है जब कि बुद्धि के क्षेत्र में वह किसी भी दशा में एक मोटे दूकानदार की उस बीवी से भिन्न नहीं है जो कि सिर्फ खाने, शराब पीने और परों के गद्दों पर सोने के अलावा और कोई भी काम नहीं करती और अपने गाड़ीवान को प्रेमी की तरह रखती है।"

पादरी फिर हँसने लगा।

"हँसो मत, पादरी," वॉन कोरेन ने कहा। "अन्त में यह बेवकूफी लगने लगती है। मुझे उसकी तुच्छता की तरफ ध्यान नहीं देना चाहिये था" वह कहता गया, और इन्तजार करता रहा जब तक कि पादरी ने हँसना बन्द नहीं कर दिया;" मैं उसकी उपेक्षा कर देता अगर वह इतना खतरनाक न होता। उसकी घातकता सबसे पहले इस बात में है कि उसे औरतों के मामले में बहुत अधिक सफलता मिल जाती है और वह उत्तराधिकारी छोड़ जाने की धमकी देता है—मतलब यह कि संसार को एक दर्जन ऐसे ही लायवस्की सौंप जाना चाहता है। दूसरी बात यह कि वह पूरी तरह से कलुषित व्यक्ति है। मैं तुमसे 'विस्ट' और बीयर की बातें बता चुका हूँ। अगली एक या दो साल में वह सारे काकेशस के समुद्री तट पर छा जायगा। तुम जानते हो कि जनता, खासतौर से मध्यवर्गीय जनता बौद्धिकता में, युनीवर्सिटी की शिक्षा में, भले आदमियों की सी चाल ढाल में, और साहित्यिक भाषा में विश्वास करती है। चाहे वह कितना ही गन्दा काम क्यों न करे, वे सब यह विश्वास करेंगे कि वह वैसा ही था जैसा कि होना चाहिए क्योंकि वह एक बुद्धिमान, उदार विचारों वाला और युनिवर्सिटी की शिक्षा पाया हुआ व्यक्ति था। इससे भी बड़ी बात यह है कि वह एक असफल, बेकार, दुर्बल, युग का शिकार व्यक्ति है और इसका मतलब यह है कि वह कुछ भी कर सकता है। वह एक आकर्षक व्यक्ति है, हमेशा अच्छा बना रहता है, वह इन्सानी कमजोरियों में सच्चे रूप में डूबा रहता है; संकोची सबसे निभाने वाला, सीधा व्यक्ति है और घमण्ड नहीं करता; कोई भी उसके साथ शराब पी सकता है, गप्पें लड़ा सकता है और और आदमियों की बुराइयाँ कर सकता है।........."जनता जो सदैव ईश्वर को मनुष्य के आकार में मानने के सिद्धान्त की तरफ झुकी रहती है—धर्म और नैतिकता के क्षेत्र में—उन सब छोटे छोटे देवताओं में से उन्हें

सबसे अधिक पसन्द करती है जिनमें मनुष्यों की सी कमजोरियां होती हैं। जरा इस बात की तरफ ध्यान दो कि उसकी भ्रष्टता का क्षेत्र कितना विस्तृत है। साथ ही, वह एक बुरा अभिनेता भी नहीं है और एक चालाक धोखेबाज़ है। वह, चीजों को किस तरह मोड़ा जाता है इस बात को अच्छी तरह जानता है। मिसाल के लिए सिर्फ उसके साधनों, धोखेबाजियों, सभ्यता के प्रति उसके दृष्टिकोण को ही ले लो। उसने मुश्किल से ही सभ्यता के दर्शन किये होंगे, फिर भी: 'आहः—इस सभ्यता ने हमें कितना पंगु बना दिया है! आह मुझे उन जंगलियों से, प्रकृति के उन पुत्रों से कितनी बार जलन होती है, जो सभ्यता के बारे में कुछ भी नहीं जानते!' हमें इस बात को समझना है, तुम जानते हो, कि एक बार पुराने जमाने में वह अपनी पूरी आत्मा से सभ्यता का भक्त था, सभ्यता की सेवा की थी, उसकी पूरी गहराई को नापा था, परन्तु इसने उसकी शक्ति को समाप्त कर दिया, उसकी आँखें खोल दीं, उसे धोखा दिया; वह एक 'फाउस्ट' है, तुम इस बात को देख रहे हो?—एक दूसरा तालस्ताय है।.........जहाँ तक शोपेनहावर और स्पेन्सर का सम्बन्ध है वह उन्हें बच्चा समझता है और वात्सल्य भाव से उनके कन्धों को थपथपाता है: 'अच्छा, तुम्हारा क्या विचार है, स्पेन्सर?' असली बात यह है कि उसने स्पेन्सर को नहीं पढ़ा परन्तु उस समय वह कितना आकर्षक लगता है जब वह मामूली, लापरवाही के साथ किए हुए व्यंग से अपनी नारी–मित्र के विषय में कहता है: उसने स्पेन्सर पढ़ा है! और वे सब उसकी बातें सुनते हैं और कोई भी इस बात को समझने की कोशिश नहीं करता कि यह धोखेबाज़ स्पेन्सर के पैर का तलुवा चूमने की भी योग्यता नहीं रखता, उसके बारे में इस तरह की बातें करना तो बहुत दूर की बात है सभ्यता की, अधिकारों की, दूसरे व्यक्तियों की पवित्र भावनाओं की जड़ें खोदना, उनके ऊपर कीचड़ उछालना, अपनी गन्दगी और चारित्रिक हीनता

को छिपाने के लिए और उसे ठीक साबित करने के लिये उनका मजाक उड़ाना, सिर्फ एक अत्यन्त झूठे, नीच और कमीने आदमी के लिए ही सम्भव हो सकता है।

"मैं नहीं जानता कि तुम उससे किस बात की अपेक्षा करते हो, कोल्या," वॉन कोरेन की ओर देखते हुए सामोलेन्को ने पूछा। इस बार उसकी वाणी में क्रोध न होकर एक अपराधी की सी भावना थी। "वह भी उसी तरह एक आदमी है जैसे कि अन्य हैं। हाँ, यह ठीक है कि उसमें अपनी कमजोरियाँ हैं, परन्तु वह वर्तमान विचारों के साथ साथ चलता है, नौकरी करता है, अपने देश की सेवा करता है। दस साल पहले, यहाँ एक बुड्ढा रहता था जो एजेन्ट का काम करता था...... और वह कहा करता था........."

"वाहियात, वाहियात!" प्राणि-शास्त्र-विशारद ने टोका ' तुम कहते हो कि वह नौकरी करता है; परन्तु वह काम कैसे करता है? क्या तुम मुझे यह बताना चाहते हो कि काम अच्छा हुआ है क्योंकि वह यहाँ रहता है और कर्मचारी अधिक नियमित, ईमानदार और सज्जन हो गये हैं, इसलिये? इसके विपरीत, उसने अपने इस सम्मान के कारण कि वह युनिवर्सिटी का निकला हुआ विद्वान है, उनके ढीलेपन को और भी बढ़ा दिया है। वह महीने की सिर्फ बीसवीं तारीख को ही ठीक समय पर आता है जब उसे अपनी तनख्वाह मिलती है; महीने के और दिनों वह स्लीपर पहने हुए घर पर पड़ा रहता है और इस तरह दिखाई देने का प्रयत्न करता है मानो वह काकेशस में रह कर सरकार की बहुत बड़ी सेवा कर रहा है। नहीं, अलेक्ज़ेन्डर देविदिच, उसके लिये परेशान मत हो। तुम शुरू से ले कर आखीर तक झूठे हो। अगर तुम सचमुच उसे प्यार करते थे और उसे अपना पड़ोसी समझते थे, तो तुम, चाहे कुछ भी होता, उसकी कमजोरियों के प्रति इतने उदासीन नहीं रह

सकते थे। तुम उनमें खुद नहीं पड़ते बल्कि उसी की खातिर उसे सीधी राह पर लाने की कोशिश करते।

"यानी ?"

"सीधी सी बात है क्योंकि वह सुधर नहीं सकता, उसे सिर्फ एक ही तरह सीधा बनाया जा सकता है ... " वॉन कोरेन ने अपने गले के चारों तरफ उङ्गली फेरी। "या उसे डुबो देना चाहिए......" उसने आगे कहा, "मानवता की खातिर और उसकी अपनी खातिर, ऐसे आदमियों को खत्म कर देना चाहिए !"

"तुम क्या कह रहे हो ?" सामोलेन्को उठ कर वॉन कोरेन के शान्त और उदास चेहरे की तरफ ताज्जुब से देखता हुआ बड़बड़ाया। "पादरी, यह क्या कह रहा है ? क्यों तुम अपने होश हवास में तो हो ?"

"मैं मौत की सजा देने पर जोर नहीं देता," वॉन कोरेन ने कहा, "अगर यह साबित हो जाय कि वह घातक है तो कोई दूसरा उपाय सोचो। अगर हम लोग लायवस्की को समाप्त नहीं कर सकते, तो उसका बहिष्कार क्यों न कर दें, उसे ऐसा बना दें कि वह नुकसान न पहुँचा सके, उससे कठिन काम लेना शुरू कर दो।"

"तुम कह क्या रहे हो ?" सामोलेन्को ने भयभीत हो कर कहा। "मिर्च के साथ, मिर्च के साथ," वह हताश स्वर में चीखा, यह देख कर कि पादरी भरवां सब्जी को बिना मिर्च मिलाये खा रहा था। "तुम अपनी गम्भीर बुद्धि से क्या कह रहे हो। अपने एक मित्र को,एक स्वाभिमानी विद्वान व्यक्ति को सपरिश्रम कारावास की सजा देना चाहते हो !"

"अच्छा, अगर वह स्वाभिमानी है और विरोध करने का प्रयत्न करता है तो उसके बेड़ियाँ डाल दो।"

सामोलेन्को एक भी शब्द नहीं कह सका। उसने सिर्फ अपनी उङ्गलियाँ उमेठीं। पादरी ने उसके भयभीत और सचमुच भद्दे दिखाई

पढ़ने वाले चेहरे की तरफ देखा और हँस पड़ा।

"इस बारे में बातें करना बन्द कर देना चाहिये," प्राणी-शास्त्र-विशारद ने कहा। "सिर्फ एक बात याद रखना, अलेक्जेन्दर देविदिच; लायवस्की जैसों से आदि-मानव की रक्षा, अस्तित्व के लिये संघर्ष द्वारा और प्राकृतिक चुनाव द्वारा हुई थी। अब हमारी सभ्यता ने उस संघर्ष और चुनाव को बहुत निर्बल बना दिया है और हमें जीर्ण-शीर्ण और व्यर्थ के पदार्थों को अपने आप ही नष्ट कर देना चाहिये; नहीं तो जब लायवस्कियों की संख्या बढ़ जायगी सभ्यता नष्ट हो जायगी और भयंकर मनुष्य जाति का पतन हो जायगा। यह हमारी गलती होगी।"

"अगर ऐसा पानी में डुबाने या फाँसी पर चढ़ा देने से ही होगा," सामोलेन्को ने कहा, "तो तुम्हारी सभ्यता जहन्नुम में जाय, तुम्हारी मानवता नर्क में जा गिरे! यह सब नर्क के योग्य है! मैं तुमसे कहता हूँ: तुम बहुत ज्यादा पढ़े लिखे और विद्वान आदमी हो और हमारे देश के गौरव हो, परन्तु जर्मनों ने तुम्हें बर्बाद कर रखा है। हाँ, जर्मनों ने! जर्मनों ने!"

जबसे सामोलेन्को ने दोरपात नगर छोड़ा था, जहाँ उसने चिकित्सा-शास्त्र का अध्ययन किया था, उसने शायद ही कभी किसी जर्मन को देखा था और न एक भी जर्मन भाषा की किताब पढ़ी थी, परन्तु उसकी राय में, राजनीति या विज्ञान का प्रत्येक हानि कारक विचार जर्मनों की ही देन थी। उसने यह विचार कहाँ से पाया था इसे वह स्वयं नहीं बता सकता था परन्तु इस पर उसको पूर्ण विश्वास था।

"हाँ, जर्मनों ने!" उसने एक बार फिर दुहराया। "आओ, थोड़ी सी चाय पीलो।"

तीनों उठ खड़े हुए और अपने अपने टोप पहन कर बाहर, छोटे से बाग में निकल आये, और हल्के हरे रङ्ग के छायादार वृक्षों—नाशपाती और अखरोट के पेड़ों की छाया में आ बैठे। प्राणि-शास्त्र-विशारद और

पादरी मेज के पास पड़ी हुई बेंच पर बैठ गये और सामोलेन्को सींकों की बनी हुई एक गहरी कुर्सी में बैठ गया जिसकी पीठ ढलुवाँ थी। अर्दली ने उन्हें चाय, मुरब्बा और शीरे की एक बोतल ला दी।

गर्मी बहुत तेज थी। छाया में भी तापमान तीस डिग्री था। गर्म, जलती हुई हवा स्थिर और निस्तब्ध थी। एक विशाल मकड़ी का जाला, अखरोट के पेड़ से ले कर जमीन तक फैला हुआ कोमलता पूर्वक लटका हुआ था और बिल्कुल स्थिर था।

पादरी ने सारङ्गी उठा ली जो हमेशा मेज के पास जमीन पर पड़ी रहती थी; उसे उमेठा और पतले कोमल स्वर में गाने लगा :

"सराय के चारों ओर पाठशाला के बच्चे इकट्ठे हो गये,"

परन्तु फौरन ही उसने गाना बन्द कर दिया। गर्मी से व्याकुल हो कर उसने अपनी भौंहों का पसीना पोंछा और ऊपर चमकते हुये नीले आस्मान की तरफ देखा। सामोलेन्को ऊँघने लगा। भंयकर गर्मी, स्तब्धता और खाना खाने के बाद आने वाली मधुर तन्द्रा, जिसने शीघ्र ही उसकी सम्पूर्ण इन्द्रियों को अपने वशीभूत कर लिया, उसे तन्द्रिल और उनींदा बना दिया। उसकी बाहें बगल में लटक गईं, आँखें सिकुड़ गईं, सिर छाती पर लटक गया। उसने अश्रुपूर्ण कोमलता के साथ वॉन कोरेन और पादरी की तरफ देखा और बुदबुदाया :

"नवीन सन्तति.........एक वैज्ञानिक नक्षत्र और दूसरा चर्च का एक अपूर्व बुद्धिमान व्यक्ति।........ मुझे आश्चर्य नहीं होना चाहिये अगर लम्बी पूंछ वाला एक धूमकेतु एक पादरी के रूप में प्रकट हो। मैं यह कह सकता हूँ कि मैं उसके हाथ का चुम्बन लेने के लिये आऊँगा।.........अच्छा · ..... भगवान करे..... ...."

तुरन्त ही खर्राटे की आवाज सुनाई दी। वॉन कोरेन और पादरी ने अपनी चाय समाप्त की और बाहर सड़क पर चले गए।

"क्या तुम फिर बन्दरगाह मछली पकड़ने जा रहे हो ?" प्राणि-शास्त्र-विशारद ने पूछा।

"नहीं, बहुत गर्मी है।"

"आकर मुझसे मिलना। तुम एक पार्सल बना सकते हो और मेरे लिये कुछ नकल कर सकते हो। वैसे ही कह रहा हूँ कि हम लोगों को यह बात सोचनी चाहिये कि तुम्हें क्या करना है। तुम्हें काम अवश्य करना चाहिये," पादरी ने कहा, "परन्तु मेरा आलसीपन मेरे वर्तमान जीवन की परिस्थितियों में एक बहाना ढूंढ लेता है। तुम खुद जानते हो कि अनिश्चित स्थिति में व्यक्तियों को निरुत्साहित बना देने की बहुत बड़ी शक्ति होती है। भगवान ही जानता है कि मुझे यहाँ हमेशा के लिये भेजा गया है या थोड़े ही समय के लिये। मैं यहाँ अनिश्चयात्मक स्थिति में रह रहा हूँ जब कि मेरी बीबी अपने पिता के यहाँ रह कर साग सब्जी की खेती कर रही है और मुझसे अलग रहने के कारण व्याकुल है। और मुझे यह स्वीकार करना चाहिये कि यहाँ की गर्मी से मेरा दिमाग पिघला जा रहा है।"

"यह सब वाहियात बातें हैं," प्राणि-शास्त्र-विशारद बोला, "तुम गर्मी को बर्दाश्त करने की आदत डाल सकते हो और तुम पादरिन के बिना भी रह सकते हो। तुम्हें सुस्त नहीं रहना चाहिये, हिम्मत से काम लो।"

५

नादयेज़्दा पयोदोरोव्ना सुबह नहाने के लिये गई और उसकी रसोईदारिन ओल्गा एक जग, एक तांबे का बर्तन, तौलिया और एक स्पंज लिये हुए उसके पीछे चली। खाड़ी में दो नये स्टीमर, सफेद गन्दी नालियों वाले, खड़े हुए थे जो स्पष्ट रूप से विदेशी माल ढोने वाले जहाज थे। कुछ व्यक्ति जो सफेद पोशाक और सफेद जूते पहने हुए बन्दरगाह के बराबर टहल रहे थे, जोर जोर से फ्रांसीसी भाषा में बोलते थे। स्टीमरों पर से उनकी बातों का जवाब दिया जा रहा था। कस्बे के छोटे से गिरजे में घन्टे तेजी से बज रहे थे।

"आज इतवार है!" नादयेज़्दा पयोदोरोव्ना ने प्रसन्न होते हुए याद किया।

वह स्वयं को पूर्ण रूप से स्वस्थ अनुभव कर रही थी और आज छुट्टी होने के कारण उमङ्ग में भरी हुई थी। खुरदरे मोटे टसर सिल्क की ढीली ढाली पोशाक और एक चौड़े किनारे वाला मूंज का टोप पहने हुए, जो उसके कानों तक झुका हुआ था और जिससे उसका चेहरा ऐसा दिखाई दे रहा था मानो एक डलिया में से झाँक रहा हो, उसने सोचा कि वह बहुत सुन्दर दिखाई दे रही थी। उसने सोचा कि सारे कस्बे में सिर्फ एक ही जवान बुद्धिमती स्त्री है और वह स्वयं यही है। और यह कि सिर्फ वही अकेली इस बात को जानती है कि पोशाक किस तरह सस्ती, सुन्दरता के साथ रुचि पूर्वक पहनी जाती है। मिसाल के लिये उसकी उसी पोशाक की कीमत सिर्फ बाईस रूबल थी और फिर भी वह कितनी आकर्षक थी। सारे कस्बे में सिर्फ वही अकेली ऐसी थी जो आकर्षक लग सकती थी। यहाँ बहुत से आदमी थे, इसलिये उन सब को चाहे वह चाहें या न चाहें, लायवस्की से जलना ही चाहिए।

वह खुश थी कि पिछले कुछ दिनों से लायवस्की का उसके प्रति व्यवहार उदासीनता पूर्ण,सीमित,नम्र और कभी २ कठोर और निर्दयता पूर्ण हो उठा था। शुरू २ में उसने लायवस्की की सम्पूर्ण सनकों,सम्पूर्ण नफरत भरी, उदासीन या विचित्र, दुर्बोध निगाहों को आँसू बहाते हुए, डाटते हुए और उसे छोड़ कर चली जाने की या भूखी रह कर प्राण दे देने की धमकी देते हुए, सहा था। अब, वह केवल शर्माती, उसकी तरफ अपराधिनी की तरह देखती और इस बात से खुश थी कि वह उससे प्रेम नहीं करता। अगर लायवस्की ने उसका अपमान किया होता या धमकाया होता तो यह व्यवहार ज्यादा अच्छा और प्रसन्नता देने वाला होता क्योंकि वह अपने को उसके प्रति बहुत बड़ी गुनाहगार महसूस करती थी। उसने अनुभव किया कि उसे दोष देना चाहिए क्योंकि पहली बात तो यह थी कि उसने लायवस्की के कठोर जीवन के स्वप्न के प्रति सहानुभूति नहीं दिखाई थी, जिसके लिए उसने पीटर्सबर्ग छोड़ा था और यहाँ काकेशस में आकर रहा था और उसे इस बात का पूरा विश्वास था कि वह सिर्फ इसी की वजह से, पिछले कुछ दिनों से उससे नाराज रहता था। जब वह काकेशस की तरफ सफर कर रही थी तो ऐसा लगा था कि उसे यहाँ पर, पहले दिन, समुद्र के पास एक एकान्त सुखकर स्थान, एक आरामदेह, छायादार छोटा सा बाग मिल जायगा जिसमें चिड़ियाँ और छोटे २ झरने होंगे, जहाँ वह फूल और तरकारियाँ बोयेगी, बत्तख और मुर्गियाँ पालेगी, अपने पड़ोसियों का मनोरंजन करेगी, गरीब किसानों का इलाज करेगी और उनमें छोटी २ किताबें बांटेगी। परन्तु यहाँ आकर देखा कि काकेशस में नंगे पहाड़ों, जङ्गलों, गहरी घाटियों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है और यहाँ कोई भी चीज पाने और बसने के लिए बहुत अधिक समय और कठोर परिश्रम की आवश्यकता है; कि यहाँ किसी तरह के पड़ोसी नहीं थे, कि यहाँ सख्त गर्मी पड़ती थी और किसी के भी लुट जाने का अन्देशा रहता था। लायवस्की को जमीन का टुकड़ा खरीदने की कोई भी जल्दी नहीं थी, इस बात से वह खुश थी,

और ऐसा लगता था कि अब उन लोगों में इस बात की मूक सन्धि हो गई थी कि वे अब कठोर जीवन के प्रति कभी संकेत भी नहीं करेंगे। उसने सोचा कि लायवस्की इस विषय में चुप था क्योंकि वह उससे इस बारे में खामोश रहने की वजह से नाराज था।

दूसरी बात यह थी कि पिछले दो सालों में उसने लायवस्की को बिना बताये हुए आत्चमियानोव की दूकान से तीन सौ रूबल की छोटी मोटी बहुत सी चीजें खरीद ली थीं। उसने यह चीजें धीरे-धीरे खरीदी थीं। कभी मामूली सामान,कभी सिल्क या एक छाता खरीदा था और इस प्रकार अलक्षित रूप से कर्ज बढ़ता चला गया।

"मैं आज उसे इस बारे में बता दूंगी......" वह सोचा करती थी परन्तु फौरन ही उसे इस बात का ध्यान आ जाता था कि लायवस्की की वर्तमान मानसिक स्थिति में, उससे कर्ज की बातें करना उचित नहीं होगा।

तीसरी बात यह थी कि लायवस्की की अनुपस्थिति में दो बार उसने पुलिस-कप्तान किरिलिन से मुलाकात की थी : एक बार सुबह जब लायवस्की नहाने चला गया था और दूसरी बार आधी रात को जब वह ताश खेल रहा था। इस बात को याद कर नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना लज्जा से लाल हो उठी और चारों तरफ रसोईदारिन को देखा कि कहीं उसने उसके विचारों को सुन न लिया हो। लम्बे, असह्य रूप से गर्म, थका देने वाले दिन, सुन्दर तन्द्रिल संध्यायें और दम घोटने वाली रातें, और रहने का सारा ढङ्ग, जब कि सुबह से लेकर रात तक किसी को यही नहीं सूझता कि समय कैसे काटें और हमेशा रहने वाले इस विचार ने कि वह कस्बे की सबसे सुन्दर स्त्री है और यह कि उसकी जवानी बीती जा रही है और बर्बाद हो रही है, और लायवस्की खुद भी, यद्यपि ईमानदार और आदर्शवादी, सदैव एक सा रहने वाला, हमेशा स्लीपर पहने हुए ऊँघता रहता, नाखून कुतरा करता और अपनी चपलता से उसे परेशान

करता रहता और धीरे-धीरे वह इस बात की आदी हो चली थी जैसे कि वह पागल हो गई हो—वह रात दिन इन बातों के अलावा और कुछ भी नहीं सोचती थी। सांसें लेते हुए, देखते हुए, घूमते हुए वह इस वासना के अतिरिक्त और किसी भी बात का अनुभव नहीं करती थी। समुद्र के गर्जन ने उससे कहा कि उसे प्रेम करना ही चाहिए, शाम का अन्धकार वही कहता, पहाड़-वही कहते।......और जब किरिलिन ने उसकी तरफ ध्यान देना शुरू किया तो उसमें विरोध करने की न तो शक्ति ही थी और न इच्छा, इसलिए उसने उसके सामने आत्म-समर्पण कर दिया।......

इस समय उन विदेशी स्टीमरों और सफेद पोशाक पहने हुए उन आदमियों ने किसी कारण वश उसे एक विशाल हॉल की याद दिला दी। फ्रांसीसी भाषा की उन चीख पुकारों के साथ उसने नृत्य का संगीत सुना और उसकी छाती अवर्णनीय आनन्द से फूल उठी। वह नाचने और फ्रांसीसी भाषा बोलने के लिए लालायित हो उठी।

प्रसन्नता-पूर्वक उसने सोचा कि उसकी अधार्मिकता में कुछ भी बुराई नहीं है। उसकी आत्मा इस अधार्मिकता में कोई भाग नहीं लेती। वह अब भी लायवस्की को प्रेम करती थी, और यह इस बात से साबित होता था कि वह उससे ईर्ष्या करती थी, उसके लिए दुःखी थी और जब वह दूर होता था तो उसके लिए व्याकुल हो उठती थी। किरिलिन बहुत ही साधारण कोटि का व्यक्ति निकला-बहुत रूखा यद्यपि खूबसूरत। उससे सारे सम्बन्ध इस समय तक टूट चुके थे और भविष्य में अब कुछ भी होने की सम्भावना नहीं थी। जो कुछ हुआ था वह समाप्त हो चुका था, इससे किसी का भी कोई सम्बन्ध नहीं था और अगर लायवस्की को इसका पता भी लग जाता तो वह इसका विश्वास नहीं करता।

समुद्र के किनारे पर औरतों के नहाने का सिर्फ एक ही स्नान-गृह था। आदमी खुले में नहाते थे। स्नान-घर में जाकर नाद्येज़्दा फ्योदो-

रोव्ना की एक अधेड़ महिला, मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा, और उसकी लड़की कात्या से मुलाकात हुई। कात्या पन्द्रह साल की स्कूल में पढ़ने वाली लड़की थी। दोनों एक बेंच पर बैठी हुई कपड़े उतार रही थीं। मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा एक अच्छे स्वभाव वाली, उत्साही और सुशील महिला थी जो धीमे और दयनीय स्वर में बातें करती थी। बत्तीस साल की उमर तक वह अध्यापिका रही थी और फिर उसने बित्युगोव से शादी की थी जो एक सरकारी नौकर था—एक गंजा छोटा सा आदमी जिसके बाल कनपटियों तक कढ़े रहते थे और स्वभाव अत्यन्त दब्बू था। वह अब भी उसे प्यार करती थी, ईर्ष्या करती थी, 'प्रेम' शब्द सुनकर शर्मा जाती थी और हरेक को बताती रहती थी कि वह बहुत सुखी है।

"मेरी प्यारी," नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना को देख कर, अपने चेहरे पर एक ऐसा भाव लाती हुई, जिसे उसके परिचित "बादाम के तेल जैसा" कहा करते थे, उत्साहपूर्वक चीख उठी। "मेरी प्यारी, कितनी खुशी की बात है कि तुम आ गईं। हम साथ ही नहाऐंगे—बड़ा मजा रहेगा।"

ओल्गा ने शीघ्रतापूर्वक अपनी पोशाक और शेमीज अलग फेंक दीं और अपनी मालकिन के कपड़े उतारने लगी।

"आज उतनी गर्मी नहीं है जितनी कि कल थी?" नौकरानी के खुरदरे हाथों के स्पर्श से संकुचित होते हुए नाद्येजदा फ्योदोरोव्ना ने कहा। "कल तो मैं गर्मी के मारे मर ही गई थी।"

"हाँ, यही बात है, मेरी प्यारी; मैं खुद मुश्किल से सांस ले पा रही थी। तुम इस बात का यकीन करोगी? कल मैं तीन बार नहाई थी। जरा सोचो तो सही, तीन बार! निकोदिम अलेक्जेन्द्रिच बहुत परेशान थे।"

"क्या इतना बदसूरत होना भी सम्भव है? नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने ओल्गा और उस अफसर की बीबी की तरफ देखते हुए सोचा। उसने कात्या पर निगाह डाली और सोचा. "छोटी लड़की की उठान बुरी नहीं है।"

"तुम्हारा निकोदिम अलेक्जेन्द्रिच बड़ा आकर्षक व्यक्ति है!" वह बोली, "मैं निष्कपट हृदय से उसे प्यार करती हूँ।"

"हा, हा, हा!" जबरदस्ती की हँसी हँसते हुए मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा चीखी: "यह बड़ी मजेदार बात है।"

अपने कपड़ों से मुक्त होकर नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने हवा में उड़ने की इच्छा अनुभव की। और उसे ऐसा लगा कि अगर वह अपने हाथ हिलाये तो ऊपर उड़ जायगी। जब वह कपड़े उतार चुकी तो उसने देखा कि ओल्गा उसके गोरे शरीर की तरफ घृणापूर्वक देख रही थी। ओल्गा, एक जवान सिपाही की बीबी, अपने विवाहित पति के साथ रहती थी इसलिए स्वयं को अपनी मालकिन से श्रेष्ठ समझती थी। मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा और कात्या उससे डरती थीं और उसका सम्मान नहीं करती थीं। यह बहुत अरुचिकर स्थिति थी। अपने को उन लोगों की निगाह में ऊँचा उठाने के लिए नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना बोली:

"घर पर, पीटर्सबर्ग में आजकल ग्रीष्म गृहों का जीवन अपने पूरे यौवन पर होगा। मेरे और मेरे पति के अनेक दोस्त हैं! हमें वहाँ जाकर उनसे मिलना चाहिए!"

"मेरा ख्याल है कि तुम्हारे पति इंजीनियर हैं?" मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा ने सहमते हुए कहा।

"मैं लायवस्की के बारे में कह रही हूँ। उसके बहुत से मित्र हैं। परन्तु दुर्भाग्यवश उसकी माँ एक घमन्डिन अमीर औरत है जो ज्यादा अक्लमन्द नहीं है..."

नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना बिना वाक्य पूरा किए पानी में कूद पड़ी; मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा, और कात्या ने भी उसका अनुसरण किया।

"दुनिया में बहुत से रूढ़ विचार प्रचलित हैं," नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना कहती रही, "और जिन्दगी इतनी आसान नहीं जितनी कि दिखाई देती है।"

मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा, जो एक उच्च वर्गीय अमीर परिवार में अध्यापिका रह चुकी थी, और सामाजिक मामलों की विद्वान मानी जाती थी, ने कहा :

"हाँ, ठीक है ! तुम मेरी बात का यकीन करोगी, मेरी प्यारी, गारात्यन्स्की परिवार में मुझे दोनों समय के भोजन के अवसरों पर,एक्ट्रेस की तरह पोशाकें पहननी पड़ती थीं। अपनी तनख्वाह के अलावा मुझे अपने कपड़ों के लिये अलग एलाउन्स मिलता था ।"

वह नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना और कात्या के बीच में खड़ी हुई थी मानो नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना को स्पर्श करने वाले जल से अपनी बेटी को बचा रही हो।

समुद्र की तरफ वाले खुले दरवाजों से होकर उन्होंने सौ कदम की दूरी पर किसी को तैरते हुए देखा ।

"माँ, यह अपना कोस्त्या है।" कात्या ने कहा।

"हाय, हाय !" मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा भयभीत होकर बोल उठी। "हाय, कोस्त्या !" वह चिल्लाई, "वापस लौट ! कोस्त्या, वापस लौट।"

चौदह वर्षीय कोस्त्या ने अपनी माँ और बहिन के सामने अपनी बहादुरी दिखाने के लिए डुबकी लगाई और आगे बढ़ गया परन्तु थकने लगा और जल्दी से पीछे लौटा। उसके थके हुए और गम्भीर चेहरे से यह प्रकट हो रहा था कि वह स्वयं अपनी शक्ति पर विश्वास नहीं कर सका था ।

"इन लड़कों के मारे नाक में दम रहती है, मेरी प्यारी !" शान्त होते हुए मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा बोली। "जब तक कि तुम पीछे मुड़ो,वह अपनी गर्दन तोड़ लेगा। आह, मेरी प्यारी, यह कितना मधुर होता है फिर भी माँ बनना कितना कठिन है ! हर तरह का डर लगा रहता है।"

नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने अपना मूंज वाला टोप लगाया और खुले समुद्र में आगे बढ़ गई। वह लगभग तीस फुट दूर तक तैरी और फिर चित हो गई। वह समुद्र को क्षितिज तक, स्टीमरों को, तट पर घूमने वाले व्यक्तियों को, कस्बे को देख सकती थी, और इस सबने, अत्यधिक गर्मी और कोमल, पारदर्शक लहरों के साथ मिल कर उसे उत्तेजित कर दिया और उसके कान में फुसफुसा कर कहा कि उसे जीना चाहिए, जीना चाहिए......एक पाल वाली नाव तेजी से, उत्साहपूर्वक लहरों और हवा को चीरती हुई उसके बगल में से निकल गई। पतवार पर बैठे हुए आदमी ने उसकी तरफ देखा और यह देखा जाना उसे अच्छा लगा।......

नहाने के बाद महिलाओं ने कपड़े पहने और साथ साथ बाहर निकलीं।

"मुझे हर तीसरे दिन बुखार आ जाता है और फिर भी मैं पतली नहीं होती," नाद्येज्दा फयोदोरोव्ना ने, नहाने से नमकीन होगए अपने होठों को चाटते हुए और अपने परिचितों की सलामों के उत्तर में मुस्कराते हुए कहा। "मैं हमेशा से मोटी रही हूँ और अब मेरा विश्वास है कि पहले से और भी ज्यादा मोटी हो गई हूँ।"

"यह, मेरी प्यारी, प्रकृति से सम्बन्धित है। अगर मेरी तरह, कोई स्वाभाविक रूप से मोटा नहीं होता, तो खाने पीने से कोई फायदा नहीं हो सकता।......परन्तु तुमने अपना टोप भिगो लिया है, मेरी प्यारी।"

"कोई बात नहीं, सूख जायगा।"

नाद्येज्दा फयोदोरोव्ना ने फिर सफेद पोशाक वाले आदमियों को देखा जो समुद्र के किनारे पर टहल रहे थे और फ्रांसीसी भाषा में बातें कर रहे थे, और पुनः अकस्मात उसने अपने मन में प्रसन्नता की लहर उठती हुई अनुभव की और किसी विशाल हॉल की धुंधली सी याद

हो आई जिसमें वह एक बार नाची थी, या शायद जिसका उसने एक बार स्वप्न देखा था। और उसकी आत्मा की गहराई में से किसी ने उससे धीरे से और अस्पष्टतापूर्वक फुसफुसाते हुए कहा कि वह एक सुन्दर, साधारण, दुःखी, बेकार स्त्री है।......

मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा अपने दरवाजे पर रुकी और उससे भीतर चल कर कुछ देर तक बैठने का आग्रह किया।

"अन्दर चलो, मेरी प्यारी," उसने प्रार्थना सी करते हुए कहा और उसी समय नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना की तरफ व्यग्रता और आशा के साथ देखा कि शायद वह मना कर दे और भीतर न आए।

"खुशी के साथ," नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना ने स्वीकार करते हुए कहा, "तुम जानती हो कि मैं तुम्हारे साथ रहना कितना अधिक पसन्द करती हूँ।"

और वह घर में भीतर चली गई। मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा ने उसे बिठाया और कॉफी पीने को दी, दूध की मिठाई खिलायी, फिर गारात्यन्स्की परिवार के अपने शिष्यों की तस्वीरें दिखाईं जिनकी अब शादी हो गई थी। उसने कात्या और कोस्त्या का परीक्षा फल भी दिखाया। परीक्षाफल बहुत अच्छा था परन्तु उन्हें और भी अच्छा सिद्ध करने के लिए उसने गहरी सांस लेते हुए शिकायत की कि आजकल स्कूल में कैसे मुश्किल सबक पढ़ाये जाते हैं।......उसने अपने अतिथि का खूब सत्कार किया और उसके लिए दुखी भी हुई, हालांकि दूसरी तरफ यह सोच कर वह बैचेन हो उठी कि कात्या और कोस्त्या के चरित्रों पर उसका बुरा प्रभाव भी पड़ सकता है। और वह इस बात से खुश थी कि उसका पति घर पर नहीं था। यह देख कर कि उसकी राय में सब आदमी उस तरह की औरतों को चाहते हैं, तो नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना निकोदिम अलेक्जेन्द्रिच पर भी बुरा प्रभाव डाल सकती है।

अपने मेहमान से बातें करती हुई मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा बराबर सोचती रही कि उस शाम को उन्हें एक पिकनिक पर जाना है और वॉन कोरेन ने उसे खास तौर पर इस बात के लिए आगाह कर दिया था कि वह उन 'जापानी बन्दरों' से इसका जिक्र भी न करे। परन्तु वह अनजान में ही इस बारे में एक शब्द कह गई, कह कर लाल पड़ गई और परे-शान होकर बोली :

"मुझे आशा है कि तुम लोग भी चलोगे।"

६

यह तय हुआ था कि सड़क पर दक्खिन की तरफ, कस्बे से बाहर पाँच मील चला जायगा और एक पहाड़ी के पास जहाँ दो नदियाँ—काली नदी और पीली नदी—मिलती हैं, ठहरा जायगा। वहाँ मछली का शोरबा बनाएँगे। वे पाँच बजते ही रवाना हो गए। इस दल के सबसे आगे सामोलेन्को और लायवस्की एक छोटी सी गाड़ी में चल रहे थे। उनके पीछे तीन घोड़ों वाली एक बग्घी में अपने साथ बर्त्तन और सामान से भरी हुई एक टोकरी लिए हुए मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा, नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना, कात्या और कोस्त्या चल रहे थे। इसके बाद वाली गाड़ी में पुलिस-कप्तान किरिलिन और युवक आत्शेमियानोव—उस दूकानदार का लड़का जिसके नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना पर तीन सौ रूबल कर्ज के चाहिए थे—बैठे हुए थे। उनके सामने एक छोटी सी सीट पर पैर सिकोड़े हुए निकोदिम अलेक्जेन्द्रिच गुड़मुड़ी हुआ बैठा था। वह एक साफ सुथरा छोटा सा आदमी था जिसके बाल कनपटियों तक कढ़े हुए थे। सब से पीछे वॉन कोरेन और पादरी आ रहे थे। पादरी के पैरों के पास मछलियों की एक टोकरी रखी थी।

"दा-या-आ-हिनी तरफ!" सामोलेन्को अपनी पूरी ताकत लगा कर चिल्लाता जब उसे गाड़ी या गधे पर बैठा हुआ कोई पहाड़ी मिल जाता।

"दो साल बीतते बीतते, जब मेरे पास साधन इकट्ठे हो जायंगे और आदमी मिल जायंगे, मैं एक यात्रा पर चल पड़ूंगा," वॉन कोरेन पादरी से कह रहा था। "मैं ब्लाडीवोस्टक के समुद्र-तट से ले कर बेहरिंग जलडमरूमध्य तक जाऊंगा और फिर वहाँ से

येनिसी नदी के मुहाने तक पहुँचूंगा। हम लोग नक्शे बनाएंगे, पशुओं और वनस्पतियों का अध्ययन करेंगे और विस्तार के साथ प्राणि—विज्ञान, मानव-शरीर-रचना-शास्त्र, नृवंश-शास्त्र पर खोज करेंगे। मेरे साथ जाना या न जाना तुम्हारे ऊपर निर्भर है।"

"यह नामुमकिन है," पादरी बोला!

"क्यों?"

"मैं घर-गृहस्थी वाला आदमी हूँ।"

"तुम्हारी बीवी तुम्हें जाने की आज्ञा दे देगी; हम लोग उसका इन्तज़ाम कर देंगे। इससे भी अच्छा तो यह होगा कि जनता की भलाई के नाम पर तुम इसे मठ में जाने को तैयार कर सको; ऐसा करने से तुम्हारे लिए यह सम्भव हो सकेगा कि तुम बड़े पादरी बन जाओ और हमारे दल के साथ पादरी के रूप में चल सको। मैं तुम्हारे लिए इसका प्रबन्ध कर सकता हूँ।"

पादरी चुप रहा।

"तुम अपनी अध्यात्म-विद्या को भली प्रकार जानते हो न?" प्राणि-शास्त्र-विशारद ने पूछा।

"नहीं, अच्छी तरह नहीं।"

"हूँ!...... मैं इस बारे में तुम्हें कोई सलाह नहीं दे सकता क्यों कि मैं खुद भी अध्यात्म विद्या के बारे में ज्यादा नहीं जानता। जिन किताबों की तुम्हें जरूरत हो उनकी एक सूची मुझे दे देना। मैं जाड़ों में पीटर्सबर्ग से तुम्हारे पास भेज दूँगा। तुम्हारे लिए धार्मिक यात्रियों के विवरण पढ़ना भी बड़ा जरूरी होगा। उनमें कुछ उच्च कोटि के अध्यात्म-शास्त्री और पूर्वी देशों के विशेषज्ञ रहे हैं। जब तुम उनकी कार्य-पद्धति से परिचित हो जाओगे

तुम्हारे लिए काम करना बहुत आसान हो जायगा। और जब तक तुम्हें किताबें मिलें तब तक समय बर्बाद करने की जरूरत नहीं। मेरे पास आ जाया करो। हम लोग कुतुबनुमा का अध्ययन करेंगे और अन्तरिक्ष-विद्या का ज्ञान प्राप्त करेंगे। यह सब बहुत जरूरी है।"

"निस्सन्देह······" पादरी बुदबुदाया और हँसा। "मैं केन्द्रीय रूस में एक जगह प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा था और मेरे चाचा ने, जो बड़े पादरी हैं, मेरी मदद करने का वायदा किया था। अगर मैं तुम्हारे साथ चलूँ तो उन्हें बेकार में परेशान करूँगा।"

"तुम्हारी हिचकिचाहट मेरी समझ में नहीं आती। अगर तुम एक मामूली पादरी ही बने रहना चाहते हो जो छुट्टियों वाले दिन सिर्फ प्रार्थना कराया करता है और बाकी के दिनों में आराम से, बिना काम के पड़ा रहता है, तो तुम दस साल तक ऐसे ही रहोगे जैसे कि अब हो और दाढ़ी और मूँछों के अलावा तुम्हारे पल्ले और कुछ भी नहीं पड़ेगा, जब कि इस यात्रा से लौटकर दस साल में ही तुम एक दूसरे ही आदमी बन जाओगे, तुम अपनी इस चेतना द्वारा समृद्ध बन जाओगे कि तुम्हारे द्वारा कुछ काम हुआ है।"

औरतों वाली गाड़ी से भय और प्रसन्नता की चीखें आ रही थीं। गाड़ियाँ एक ऐसी सड़क पर होकर गुजर रही थीं जो एक सीधी खड़ी हुई चट्टान में एक चौड़ी नाली सी खोदकर बनाई गई थी और हर एक को ऐसा लग रहा था कि वे एक ऊँची दीवाल में बने हुए खाने में भागते जा रहे हैं और यह कि क्षण भर में ही गाड़ियाँ नीचे घाटी में लुढ़क पड़ेंगी। दाहिनी तरफ समुद्र फैला हुआ था, बाँयी तरफ एक मामूली भूरी दीवाल खड़ी हुई थी जिस पर काले चकत्ते और लाल दरारें पड़ी हुई थीं और जङ्गली बेलें चढ़ी हुई थीं। करार पर घने चीड़ के पेड़ झुके हुए खड़े थे मानो जिज्ञासा और भय से आतंकित होकर

नीचे की तरफ देख रहे हों। एक मिनट बाद फिर चीखें और हंसी की आवाजें सुनाई पड़ीं। वे लोग एक विशाल, ऊपर लटकती हुई चट्टान के नीचे होकर गुजर रहे थे।

"मैं नहीं जानता कि मैं तुम्हारे साथ क्यों जा रहा हूं," लाय-यस्की बोला, "यह कितनी बेवकूफी और फूहड़पन से भरी हुई बात है। मैं उत्तर की तरफ जाना चाहता हूँ, भागने के लिए, बचने के लिए, परन्तु किसी कारणवश हूँ यहाँ पर, इस बेवकूफी से भरी पिकनिक पर।"

"मगर देखो तो सही, कितना सुन्दर दृश्य है!" सामोलेन्को ने कहा जैसे ही घोड़े बाँयी तरफ को मुड़े और पीली नदी की घाटी और खुद नदी धूप में चमकती हुई पीली, गदली और पागल की तरह भागती हुई दिखाई पड़ी।

"मुझे इसमें कोई सौन्दर्य नहीं दिखाई पड़ता, साशा" लाय-यस्की ने जवाब दिया "हमेशा प्रकृति के सौन्दर्य को देखकर हर्षोन्मत्त रहना कल्पना के अभाव का प्रतीक है। मेरी कल्पना जो दे सकती है उसकी तुलना में ये झरने और चट्टानें सब रद्दी के अलावा और कुछ भी नहीं हैं।"

गाड़ियाँ अब नदी के किनारे आ गई थीं। ऊँचे पहाड़ी किनारे क्रमशः एक दूसरे के नजदीक आते गये, घाटी संकुचित होती गई और अन्त में एक संकरे दर्रे की सी दरार खुली रह गई। वह पहाड़, जिसका चक्कर खाते हुए वे लोग जा रहे थे, प्रकृति द्वारा विशाल चट्टानों को एक दूसरे के ऊपर रख कर बनाया गया था। वे चट्टानें एक दूसरे को इतनी भयंकर शक्ति से दबाये हुए थीं कि सामोलेन्को हर बार उनकी तरफ देख कर आश्चर्य से मुँह फाड़ देता था। वह काला और सुन्दर पर्वत स्थान स्थान पर छोटी छोटी दरारों और संकुचित दर्रों के रूप में कटा हुआ था जिनमें होकर ओस की सी गन्ध भरी हुई नम और रहस्यपूर्ण हवा

आ रही थी। उन दर्रों में होकर भूरे, गुलाबी, बकायन के से रङ्ग के, धूम धुंआरे या हलकी धूप में नहाते हुए बादल दिखाई दे रहे थे। रह रह कर जब वे किसी दर्रे के पास होकर गुजरते उन्हें ऊँचाई से गिरते हुए पानी की, जो चट्टानों से टकरा कर शोर पैदा कर रहा था, आवाज सुनाई पड़ती।

"ओह कैसे मनहूस पहाड़ हैं।" लायवस्की ने गहरी आह भरी, "मैं इनसे ऊब उठा हूँ।" उस स्थान पर जहाँ काली नदी पीली नदी में गिरती है और उसका काला पानी पीले पानी को रङ्ग देता है और उससे संघर्ष करता है, तातार केरबालाय का 'दूहान' खड़ा हुआ था जिसकी छत पर रूसी झण्डा लहरा रहा था और खड़िया से यह लिखा हुआ था, "सुन्दर दूहान।" उसके पास ऊँची नीची चहार दीवारी से घिरा हुआ एक छोटा सा बाग था और रद्दी कांटेदार झाड़ियों के झुंड के बीच एक एकाकी सायप्रस का काला और सुन्दर पेड़ खड़ा हुआ था।

केरबालाय एक फुर्तीला छोटा सा तातार, नीली कमीज और सफेद 'एप्रन' पहने हुए सड़क पर खड़ा हुआ था। उसने अपना पेट पकड़े हुए, नीचे झुक कर सलाम करते हुए गाड़ियों का स्वागत किया और अपने चमकीले सफेद दाँतों को दिखाते हुए मुसकरा उठा।

"गुड ईवनिंग, केरबालाय" सामोलेन्को चिल्ला उठा, "हम लोग कुछ दूर और आगे जा रहे हैं। तुम समोवार और कुर्सियाँ ले आओ! जल्दी लाना!"

केरबालाय ने अपना घुटा हुआ सिर हिलाया और कुछ बड़बड़ाया जिसे सिर्फ सबसे पीछे वाली गाड़ी में बैठे हुए लोग ही सुन सके, "हमारे पास 'ट्राउट' मछली है, योर एक्सलेन्सी।" "उन्हें ले आओ" वॉन कोरेन बोला।

'दूहान' से पाँच सौ कदम आगे चल कर गाड़ियाँ रुक गईं। सामोलेन्को ने घास का एक छोटा सा मैदान चुना जिसके चारों ओर पत्थर बिखरे पड़े थे जिन पर आराम से बैठा जा सकता था। वहीं तूफान में जड़ से उखड़ा हुआ एक पेड़ पड़ा था जिसकी जड़ों पर काई और सूखी पीली सुइयाँ सी उगी हुई थीं। यहीं नदी के ऊपर एक लचकीला काठ का पुल बना हुआ था और बिल्कुल उसके सामने दूसरे किनारे पर एक छोटा सा खलिहान था जिसमें मक्का सुखाई जाती थी। यह खलिहान चार खम्भों पर खड़ा हुआ था जो परियों की कहानी में बताई गई उस झोंपड़ी की तरह लग रहा था जो मुर्गियों की टाँगों पर खड़ी थी। इसके दरवाजे पर एक छोटी सी सीढ़ी तिरछी रखी हुई थी।

सब लोगों पर पहला प्रभाव यह पड़ा कि वे सब सोचने लगे कि इस स्थान से बाहर फिर नहीं निकल सकेंगे। चारों तरफ, जहाँ कहीं भी नजर जाती थी, पहाड़ ऊपर उठ कर उनके चारों तरफ खड़े हुए थे और संध्या की छायायें 'दूहान' और काले सायप्रस पर से तेज़ी से चुपचाप गायब होती चली जा रही थीं जिससे काली नदी की घुमावदार घाटी और भी संकरी और पहाड़ और भी ऊँचे होते चले जा रहे थे। उन लोगों को नदी की कलकल और टिड्डों की निरन्तर बजने वाली झंकार सुनाई दे रही थी।

"अद्भुत!" मार्या कोन्स्तन्तीनोवा ने हर्षोन्मत्त होकर गहरी साँस ली। "बच्चो, देखो! कितना सुन्दर! कितना शान्तिमय!"

"हाँ, यह सचमुच सुंदर है," लायवस्की ने स्वीकार किया जिसने उस दृश्य को पसन्द किया और किसी कारणवश दुख का अनुभव किया जैसे ही उसने आकाश की तरफ और फिर 'दूहान' की चिमनी से उठते हुए धुंए की तरफ देखा। "हाँ, यह सुंदर है," उसने दुहराया।

"इवान आन्द्रिइच, इस दृश्य का वर्णन करो," मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा ने आंसू भरी आँखों से कहा।

"क्यों ?" लायवस्की ने पूछा, "प्रभाव किसी भी वर्णन से ज्यादा अच्छा है। दृश्यों और शब्दों का सौन्दर्य, जो प्रत्येक, प्रकृति से सीधा सम्पर्क स्थापित कर, प्राप्त करता है वह लेखकों द्वारा बड़े भयंकर और अपरिचित रूप में व्यक्त किया जाता है।"

"सचमुच ?" वॉन कोरेन ने अपने लिये पानी के पास सबसे बड़ा पत्थर छाँट कर और उस पर चढ़ कर बैठने का प्रयत्न करते हुए शान्ति पूर्वक पूछा। "सचमुच ?" उसने सीधा लायवस्की की तरफ देखते हुये दुहराया। "रोमियो और जुलियट ?' या मिसाल के तौर पर, पुश्किन की "यूक्रेन की रात्रि" के बारे में क्या ख्याल है ? प्रकृति को आकर उनके कदमों में सिर झुकाना चाहिये।"

"शायद," लायवस्की ने कहा जो सोचने या उसका विरोध करने में बहुत सुस्त था। "हांलाकि 'रोमियो और जुलियट,'आखिर है क्या ?" उसने कुछ रुक कर आगे कहा, "काव्य का सौन्दर्य और प्रेम की पवित्रता गुलाब के वे फूल हैं जिनकी आड़ में वे इसकी गन्दगी को छिपाने की कोशिश करते हैं। रोमियो उसी तरह का जानवर है जैसे कि हम सब लोग।"

"कोई भी तुमसे चाहे जिस विषय पर बातें करे तुम हमेशा घुमा फिरा कर उसे......" वॉन कोरेन ने कात्या की तरफ देखा और चुप हो गया।

"मैं घुमा फिरा कर किस तरफ ले गया हूँ ?" लायवस्की ने पूछा।

"उदाहरण के लिये जैसे कोई तुमसे कहता है कि 'अँगूरों का गुच्छा कितना सुन्दर है,' और तुम जवाब देते हो : 'हाँ, परन्तु जब इसे खाकर पचा लिया जाता है तब यह कितना कुरूप होता है !' ऐसा क्यों कहते हो ? यह नई बात नहीं है और...यह बड़ी अजीब आदत है।"

लायवस्की जानता था कि वॉन कोरेन उसे पसन्द नहीं करता इसलिए उससे डरता था और उसकी उपस्थिति में ऐसा अनुभव करता था मानो सब लोग विवश हैं और कोई उसके पीछे खड़ा है। उसने कोई जवाब नहीं दिया और वहाँ से हट गया, इस बात के लिए अफसोस करता हुआ कि वह यहाँ क्यों आया।

"सज्जनो, जल्दी से आग जलाने के लिए लकड़ियाँ बीन लाओ!" सामोलेन्को ने फौजी आदेश दिया। वे सब विभिन्न दिशाओं में चले गये। वहाँ किरिलिन, आत्शमीयानोव और निकोदिम अलेक्जेंद्रिच के अलावा और कोई भी नहीं रुका। केरबालाय कुर्सियाँ लाया, जमीन पर एक कालीन बिछाया और शराब की कुछ बोतलें रख दीं।

पुलिस कप्तान किरिलिन, एक लम्बा, सुन्दर आदमी, जो हर एक मौसम में अपनी वर्दी के ऊपर अपना ओवर कोट लादे रहता था, जिसका व्यवहार बड़ा रूखा होता था, जिसकी गाड़ी शानदार थी, जिसकी आवाज मोटी और भारी थी, प्रान्तीय पुलिस का नौजवान अधिकारी सा दिखाई देता था। उसका चेहरा रोता हुआ और उनींदा सा रहता था मानो उसे अभी कच्ची नींद से उसकी मर्जी के खिलाफ जगा दिया गया हो।

"यह तुम किस लिए लाये हो, जङ्गली?" उसने एक एक शब्द का स्पष्ट उच्चारण करते हुए केरबालाय से पूछा। "मैंने तुम्हें 'क्वारेल' लाने की आज्ञा दी थी और तुम उठा क्या लाये 'बदसूरत' तातार? क्यों? क्या ले आये?"

"हमारे पास अपनी बहुत सी शराब है, येगोर अलेक्सीइच," निकोदिम अलेक्जेन्द्रिच ने डरते हुए और नम्रतापूर्वक अपनी राय जाहिर की।

'क्या कहा ? परन्तु मैं चाहता हूँ कि हम लोग मेरी अपनी शराब भी पीएँ, मैं पिकनिक में भाग ले रहा हूँ और मेरा ख्याल है कि मुझे अपना हिस्सा लाने का पूरा अधिकार है। मेरा ऐसा ख्या...।...। ल है। 'क्वारेल्ड' की दस बोतलें लाओ ।"

"इतनी ज़्यादा क्यों ?" निकोदिम अलेक्जेन्द्रिच ने आश्चर्य-चकित होकर पूछा, यह जानते हुए कि किरिलिन के पास पैसा नहीं है।

"बीस बोतलें ! बीस !" किरिलिन चीखा।

"कोई बात नहीं, उसे ले आने दो," आत्शमियानोव ने फुसफुसा कर निकोदिम अलेक्जेन्द्रिच से कहा, "मैं पैसे दूँगा।"

नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना उल्लसित थी और शैतानी करने के मूड में थी। वह उछलना कूदना, हँसना, चीखना, परेशान करना और नखरे दिखाना चाह रही थी। अपनी सस्ती सूती पोशाक जिस पर बनफ्शे के नीले फूल बन रहे थे, लाल जूते और उसी मूंज के टोप को पहने हुए वह स्वयं अपनी ही नजर में अपने को छोटी, साधारण, हल्की, तितली की तरह आकाश में उड़ने वाली सी लगी। वह उस कमजोर पुल पर दौड़ी गई और एक मिनट तक नीचे पानी को देखती रही जिससे कि उसे चक्कर आ जांय, फिर चीखती और हँसती दूसरी तरफ अनाज सुखाने वाली झोंपड़ी की तरफ दौड़ गई और यह, कल्पना करने लगी कि सब लोग उस पर मुग्ध हो रहे हैं यहाँ तक कि वेरबालाय भी। जब तेजी से घिरते हुए अन्धकार में पेड़ पिघल कर पहाड़ों में, और घोड़े गाड़ियों में गायब होने लगे और 'दूहान' की खिड़कियों में रोशनी चमक उठी, एक टेढ़ी मेढ़ी पगडंडी से जो पत्थरों और कांटेदार झाड़ियों में होकर बल खाती हुई चली गई थी, वह पहाड़ के ऊपर चढ़ गई और एक पत्थर पर जा बैठी। नीचे, 'कैम्प-फायर' जल रही थी। आग के पास, अपनी बाहें ऊपर चढ़ाये पादरी इधर उधर टहल रहा था और

उसकी लम्बी काली छाया उसके चारों तरफ बराबर एक घेरा बना रही थी; उसने लकड़ियां डालीं और एक लम्बी लकड़ी से बंधी हुई चम्मच द्वारा देगची को चलाया। सामोलेन्को तांबे की तरह लाल मुँह किये, आग के चारों तरफ व्यस्त होकर इस तरह घूम रहा था मानो वह अपने रसोईघर में हो और चीख रहा था, "नमक कहाँ है, महाशयो? मैं शर्त लगाता हूँ तुम भूल आये हो? तुम सब लोग नवाब की तरह क्यों बैठे हो जब कि मैं काम कर रहा हूँ?"

लायवस्की और निकोदिम अलेक्जेन्द्रिच गिरे हुए पेड़ पर पास पास बैठे हुए आग की तरफ गौर से देख रहे थे। मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा, कात्या और कोस्त्या टोकरी में से कप, पिर्चें और प्लेटें निकाल रहे थे। वॉन कोरेन अपने हाथ बाँधे और एक पैर पत्थर पर रखे हुए, किनारे पर बिल्कुल पानी के पास खड़ा हुआ कुछ सोच रहा था। आग से उठते हुए लाल धब्बे, जमीन पर पड़ी परछाइयों के साथ मनुष्यों की काली मूर्तियों के पास घूम रहे थे और पहाड़ पर, पेड़ों पर, पुल पर, अनाज सुखाने की झोंपड़ी पर कांप रहे थे। दूसरी तरफ सीधा ऊपर उठा हुआ किनारा प्रकाशित हो रहा था और नदी की धारा में चमक रहा था। तेजी से बहता हुआ गदला पानी इसके प्रतिबिम्ब को खण्ड-खण्ड कर रहा था।

पादरी उन मछलियों को लेने के लिए गया जिन्हें केरबालाय किनारे पर धो और साफ कर रहा था परन्तु वह बीच ही में चुप-चाप खड़ा हो गया और अपने चारों तरफ देखने लगा।

"हे भगवान, यह कितना सुन्दर है!" उसने सोचा। "मनुष्य, चट्टानें, आग, हल्का प्रकाश, विशालकाय वृक्ष—सिर्फ इतना ही और फिर भी कितना सुन्दर।"

दूर किनारे पर कुछ अपरिचित आदमी सुखाने वाली झोंपड़ी के पास दिखाई पड़े। काँपती हुई रोशनी और उस आग में से उठते हुए

धुंए ने, जो उसी तरफ जा रहा था, तुरन्त ही उन लोगों को अच्छी तरह देखने में बाधा डाली परन्तु अब कभी एक मोटे कपड़े वाले टोप और एक भूरी दाढ़ी की, कभी एक नीली कमीज की, कभी एक मूर्त्ति की जो कन्धे से लेकर नीचे तक कम्बल ओढ़े और एक कटार लगाये हुए थे, की झलक दिखाई देने लगी। फिर एक नौजवान का काला चेहरा जिसकी भौंहें काली, और इतनी घनी और मोटी थीं मानो उन्हें कोयले से बनाया गया हो दिखाई दिया। उनमें से पाँच एक घेरा बना कर जमीन में बैठ गये और दूसरे पाँच उस अनाज सुखाने वाली झोंपड़ी में चले गये। एक व्यक्ति दरवाजे पर, आग की तरफ पीठ किये खड़ा था और हाथ पीठ पीछे बाँधे हुए कुछ कह रहा था जो बहुत ही मजेदार बात होगी क्योंकि जब सामोलेन्को ने लकड़ियाँ डालीं और आग तेजी से जल उठी, उसमें से चिनगारियाँ उठने लगीं और उस झोंपड़ी पर तेज रोशनी पड़ी, तो दो खामोश निगाहें गहरी एकाग्रता का भाव लिए दिखाई पड़ीं जो दरवाजे से बाहर देख रही थीं जब कि वे लोग जो घेरा बनाए हुए थे मुड़े और उसकी बातें सुनने लगे। कुछ देर बाद ही वे लोग, जो घेरा बनाये बैठे थे, धीमे और मधुर स्वर में गाने लगे जिसकी ध्वनि 'लेन्टन चर्च संगीत' की तरह थी।......उनका गाना सुनते हुए पादरी ने कल्पना की कि दस साल बाद उसकी क्या स्थिति होगी जब वह यात्रा से लौट कर वापस आयेगा, वह एक नौजवान पुजारी और बड़ा पादरी, एक लेखक जिसका नाम होगा और जिसका भूतकालीन इतिहास भव्य और सुन्दर होगा, बन जायगा। उसका पद बढ़कर एक 'आर्कीमैंड्राइट' का हो जायगा और फिर वह सबसे बड़ा पादरी बन जायगा। फिर वह कैथेड्रल में प्रार्थना कराया करेगा, सुनहली टोपी पहने अनेक पदाधिरियों के साथ अपने सीने पर पवित्र मूर्ति लटकाए हुए बाहर निकला करेगा और जनता को अपनी छड़ी और दुहरे 'केन्डेलाबरा' द्वारा आशीष देकर घोषणा करेगा "हे ईश्वर, स्वर्ग से नीचे देख, निरी-

कर और अपनी आँखों से अँगूर के इस बाग को देख जिसे तेरे हाथों ने लगाया था," और बच्चे अपनी फ़रिश्तों जैसी आवाज में, उसके जवाब में गायेंगे : "पवित्र ईश्वर... ..."

"पादरी, वह मछली कहाँ है?" उसने सामोलेन्को की आवाज सुनी।

जब वह आग के पास वापस जा रहा था, पादरी ने गिरजे के जुलूस की कल्पना की जो जुलाई में एक सुहावने दिन धूल से भरी हुई सड़क पर जा रहा था; सामने वाले हिस्से में किसान झंडे, और औरतें तथा बच्चे पवित्र मूर्तियाँ लिए हुए जा रहे थे, फिर गाने वाले लड़के और गिरजे के सामान की पवित्रताकी देखभाल करने वाला कर्मचारी मुँह बांधे और अपने बालों में मूंज बाँधे हुए चल रहा था, और फिर स्थिति के अनुसार वह स्वयं और उसके पीछे 'केलोट' पहने हुए और हाथ में क्रॉस पकड़े हुए पुजारी और उन सबके पीछे पैर पटपटाकर चलता हुआ किसानों का एक समूह जिसमें मर्द, औरतें, बच्चे थे, चल रहा था। समूह में उसकी स्त्री और पुजारी की स्त्री सिर पर रूमाल बाँधे हुए थीं। गाने वालों ने गाया, बच्चे रोये, खेत में बैठी हुई चिड़ियाँ चीखीं, लावा चहचहाया।...फिर वे खड़े हो गये और झुंड पर पवित्र जल छिड़का। ....वे फिर आगे चल दिये और फिर घुटनों के बल बैठ कर पानी के लिए प्रार्थना करने लगे। फिर भोजन और बातचीत। . ...

"और यह भी अच्छा है ....." पादरी ने सोचा।

७

किरिलिन और आल्शमियानोव पगडंडी से होकर पहाड़ पर चढ़ गये। आल्शमियानोव पीछे रह गया और खड़ा हो गया जबकि किरिलिन ऊपर नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना के पास पहुँच गया।

"गुड ईवनिंग," उसने अपनी टोपी छूते हुये कहा।

"गुड ईवनिंग।"

"हाँ!" किरलिन ने आसमान की तरफ देख कर सोचते हुये कहा।

" 'हाँ' क्यों?" यह देखकर कि आल्शमियानोव उन दोनों को देख रहा था, नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने कुछ रुक कर पूछा।

"और कैसा लगता है," अफसर धीरे से बोला, "जैसी कि कहावत है कि हमारा प्रेम खिलने से पहले ही मुरझा गया। तुम क्या चाहती हो? मैं इसे क्या समझूँ? यह सिर्फ तुम्हारा नखरा है या तुम मुझे मूर्ख समझती हो जिसके साथ तुम मनचाहा व्यवहार कर सकती हो?"

"यह एक गलती थी! मुझे अकेला छोड़ दो।" नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने सख्ती से कहा, उस सुन्दर मनमोहक संध्या को उसकी तरफ भयाक्रान्त होकर देखते हुए स्वयं से आश्चर्यचकित होकर पूछते हुये कि कभी एक क्षण ऐसा भी आया था जब इस व्यक्ति ने उसे आकर्षित किया था और उसके इतने पास आ चुका था?

"तो यह बात है!" किरिलिन ने कहा। वह कुछ देर चुपचाप सोचता रहा और बोला "अच्छा, मैं इन्तजार करूँगा जब तक कि तुम्हारा मिजाज ठीक होगा और तब तक मैं तुम्हें इस बात का विश्वास दिलाने

का प्रयत्न करता हूँ कि मैं एक भला आदमी हूँ और मैं किसी को भी इसमें सन्देह करने की आज्ञा नहीं देता। विदा!"

उसने फिर अपनी टोपी छुई और झाड़ियों में से अपना रास्ता बनाता हुआ चला गया। थोड़ी देर बाद आशमियानोव हिचकता हुआ आया।

"कितनी खूबसूरत शाम है!" उसने हल्के आरमिनियन लहज़े में कहा।

वह देखने में सुन्दर था, फैशनेबुल कपड़े पहने हुए था और बिना बनते हुए एक युवक का सा व्यवहार कर रहा था, परन्तु नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना ने उसे पसन्द नहीं किया, क्योंकि उस पर उसके बाप के तीन सौ रूबल कर्ज़ के चाहिए थे। इस बात से उसे और भी बुरा लगा था कि एक दुकानदार को पिकनिक में साथ लाया गया था। वह इस बात से क्रोधित हो उठी कि ऐसी सुन्दर सन्ध्या को, जब कि उसका हृदय पवित्र था, वह उसके पास आया!

"कुल मिला कर पिकनिक सफल रही," कुछ देर रुक कर वह बोला।

"हाँ," उसने सहमति प्रकट की और जैसे कि उसे अचानक कर्ज़ का ध्यान आ गया हो। उसने लापरवाही से कहा: "ओह, अपनी दुकान में उन लोगों से कह देना कि इवान आन्द्रियच एक दो दिन में आएगा और तीन सौ रूबल दे देगा।......मुझे ठीक तरह से याद नहीं कि कितने हैं।"

"मैं आपको तीन सौ रूबल और दे दूँगा, अगर आप हर समय उस कर्ज़ की बातें न करें। इतना रूखा क्यों बना जाय?"

नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना हंसी। उसके दिमाग में यह मजेदार ख्याल आया कि अगर उसकी रज़ामन्दी होती और वह पूरी तरह से चरित्रहीन बन सकती तो वह एक मिनट में ही अपने को इस कर्ज़ से मुक्त कर लेती। मान लो, अगर वह इस खूबसूरत मूर्ख नौजवान का दिमाग

बिगाड़ दे ! यह सचमुच कितना मजेदार, भद्दा और जङ्गलीपन का काम होता ? और अचानक उसके मन में तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई कि वह उसे स्वयं से प्रेम करने को मजबूर कर दे, उसे बरबाद कर दे, उसे उजाड़ दे और फिर वह देखे कि इसका क्या परिणाम निकलता है।

"मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं आपसे एक सलाह की बात कर सकूँ," आत्शमियानोव ने संकुचित होकर कहा। "मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप किरिलिन से सावधान रहें। वह आपके बारे में चारों तरफ भयानक बातें कहता फिरता है।"

"मुझे यह जानने में कोई रुचि नहीं कि कोई बेवकूफ मेरे बारे में क्या कहता है," नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना ने उदासीनतापूर्वक कहा और इस सुन्दर जवान आत्शमियानोव के साथ खेलने का मजेदार ख्याल अचानक अपना आकर्षण खो बैठा।

"हम लोगों को नीचे चलना चाहिए," वह बोली—"वे लोग हमें बुला रहे हैं।"

इस समय तक मछली का शोरवा तैयार हो चुका था, वे चम्मच से उठाकर प्लेट भर-भर कर उसे धार्मिक गम्भीरता के साथ खा रहे थे जैसा कि सिर्फ पिकनिक में ही किया जाता है। और हरेक ने सोचा कि मछली का शोरवा बहुत अच्छा बना है और सोचा कि उन लोगों ने अपने घर पर ऐसी सुन्दर चीज कभी भी नहीं खाई। जैसा कि आमतौर से पिकनिकों में होता है, चारों तरफ डिनर के समय इस्तैमाल किये जाने वाले रूमालों, पार्सलों, बेकार के इधर उधर उड़ते हुए चिकने कागजों के ढेर में किसी को भी इस बात का पता नहीं रहा कि उसका गिलास कहाँ या रोटी कहाँ है। वे लोग शराब को गलीचे पर और अपने घुटनों पर उड़ेल रहे थे और नमक बिखेर रहे थे जब कि उनके चारों तरफ अन्धकार छा रहा था और आग और भी धीमी हो गई थी। साथ ही हरेक आदमी इतना सुस्त हो उठा था कि उठकर किसी

ने भी आग में और लकड़ियाँ नहीं डालीं। उन सबने शराब पी; यहाँ तक कि कोल्या और कोस्त्या को भी आधा आधा गिलास पिलाई। नाद्‌येज़्दा फ्योदोरोव्ना ने एक गिलास पिया, फिर दूसरा पिया। उसे थोड़ा सा नशा चढ़ा और वह किरिलिन के बारे में सब कुछ भूल गई।

"एक सुन्दर पिकनिक, एक जादू भरी शाम," शराब से उल्लसित होकर लायवस्की ने कहा। "परन्तु मैं इन सबसे सुन्दर जाड़े के मौसम को ज्यादा पसन्द करूँगा। उसका छज्जेदार कालर सफेद पाले से रुपहला हो गया है।"

"हरेक व्यक्ति इसकी रुचि के लिए एक एक गिलास पिये," वॉन कोरेन ने कहा।

लायवस्की बेचैन हो उठा। आग की गर्मी उसकी पीठ को झुलसा रही थी और वॉन कोरेन की घृणा उसके सीने और चेहरे पर चोट कर रही थी—इस घृणा ने जो एक सभ्य और चतुर मनुष्य की थी, एक ऐसी भावना जिसमें एक दृढ़ तर्क छिपा हुआ था, ने उसे परेशान और दुर्बल बना दिया। और इसे सहन करने में असमर्थ होकर उसने शान्त स्वर में कहा—

"मैं प्रकृति से बहुत गहरा प्रेम करता हूँ और मुझे अफसोस है कि मैं एक प्राणि-विद्या का अध्ययन करने वाला नहीं हूँ। मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है।"

"अच्छा, परन्तु मुझे तुमसे ईर्ष्या नहीं है और इसके लिए अफसोस भी नहीं है," नाद्‌येज़्दा फ्योदोरोव्ना ने कहा। "मेरी समझ में यह नहीं आता कि कोई व्यक्ति कीड़े–मकोड़ों और वीरबहूटियों में कैसे रुचि ले सकता है, जब कि मनुष्य दुःख उठा रहे हैं।"

लायवस्की ने उसकी राय का समर्थन किया। उसे प्राणि–शास्त्र का रंचमात्र भी ज्ञान नहीं था, इसलिए वह अपनी बातों में वह अधिकार

पूर्ण स्वर और मनुष्यों की सी विद्वत्तापूर्ण गम्भीर भावना भरने में पूर्णतः असमर्थ रहा, जिन्होंने अपना पूरा जीवन चींटियों की मूँछों और कीड़ों के पंजों के अध्ययन में लगा रखा था। उसे सदैव यह सोच कर परेशानी होती थी कि ये लोग इन मूँछों, पंजों और उस चीज पर जिसे वे वनस्पति तथा प्राणियों के जीवन का आधार–तत्व कहते थे वह इसकी हमेशा एक घोंघे के रूप में कल्पना किया करता था), विश्वास करते हैं, उन्हें मनुष्य की उत्पत्ति और जीवन से सम्बन्धित समस्याओं को उठाना चाहिये। परन्तु नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना के शब्दों में उसने कृत्रिमता की झलक पाई और केवल उसका खंडन करने के लिए बोला।

"सवाल वीर बहूटियों का नहीं है परन्तु उसके ऊपर प्रयोग कर हम किस व्यापक तथ्य से व्यक्तिगत तथ्य तक पहुँचते हैं, इस बात का है।"

—०—

८

काफी देर हो चुकी थी—ग्यारह बज रहे थे जब वे लोग घर लौटने के लिए गाड़ियों पर सवार हुए। वे लोग अपनी अपनी जगहों पर बैठ गए और गायब होने वालों में सिर्फ नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना और आत्शमियानोव दो ही प्राणी थे जो नदी के दूसरे किनारे पर हँसते हुए एक दूसरे के पीछे भाग रहे थे।

"जल्दी करो, मित्रो," सामोलेन्को चीखा।

"तुम्हें महिलाओं को शराब नहीं पिलानी चाहिये," वॉन कोरेन ने धीमी आवाज में कहा। लायवस्की पिकनिक से, वॉनकोरेन की घृणा से और अपने खुद के विचारों से पस्त होकर नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना से मिलने गया और जब प्रसन्न और सुखी, अपने को पंख के समान हल्का अनुभव करती हुई हांफती और हंसती हुई नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने उसे दोनों बाँहों में भर कर उसके सीने पर अपना सिर रख दिया तो वह पीछे हट गया और रूखेपन से बोला:

"तुम एक छिनाल का सा व्यवहार कर रही हो।"

यह सुनने में बहुत भद्दा लगा जिससे वह उसके लिए तुरन्त दुःखी हो उठा। उसके क्रुद्ध, थके हुए चेहरे पर उसने स्वयं के प्रति घृणा दया और व्यग्रता के भाव देखे और एक दम उसका दिल बैठ गया। नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने तुरन्त अनुभव किया कि वह बहुत बढ़ चुकी थी, अपने व्यवहार में बहुत ज्यादा शोख और उच्छृंखल हो उठी थी। और दुःख से अभिभूत होकर, अपने को शिथिल, मजबूत, भद्दी और नशे में अनुभव करती हुई आत्शमियानोव के साथ पहली खाली गाड़ी में बैठ

गई। लायवस्की किरलिन के साथ बैठा, वॉन कोरेन सामोलेन्को के साथ, पादरी औरतों के साथ और यह दल चल पड़ा।

"तुमने देखा कि ये 'जापानी बन्दर' कैसे हैं" वॉन कोरेन ने अपने को लबादे में लपेटते और आँखें बन्द करते हुए कहना प्रारम्भ किया। "तुमने सुना कि वह कीड़े मकोड़ों और बीर बहूटियों में कोई रुचि नहीं लेना चाहती क्योंकि मनुष्य दुखी हैं। इसी तरह ये सब'जापानी बन्दर' हम जैसे व्यक्तियों को देखते हैं। ये लोग गुलाम मनोवृत्ति वाले, चालाक, हंटर और घूंसे से दस पुश्तों तक भयभीत रहने वाले व्यक्ति हैं, ये सिर्फ हिंसा के सामने ही कांपते और उसकी पूजा करते हैं, परन्तु बन्दर को स्वतंत्र कर दो जहाँ कोई भी उनके गले में रस्सी बाँधने वाला न हो तो वह फौरन स्वच्छन्द हो उठता है और अपने असली रूप में आ जाता है। देखो, ये लोग चित्र-प्रदर्शनियों में, अजायबघरों में, थियेटरों में जाते हैं या जब साइन्स की बातें करते हैं तो कैसा सीना फुलाकर चलते हैं, वे फूल उठते हैं और उत्तेजित हो उठते हैं, बुराई करते हैं और आलोचना करते हैं...उन्हें आलोचना करनी ही पड़ती है-यह गुलामी का लक्षण जो है इसलिए। जरा सुनने की बात है, स्वतंन्त्र देशों वाले लोग जेब कतरों से भी ज्यादा झूठी कसम खाते हैं—इसका कारण है कि समाज का तीन चौथाई हिस्सा गुलामों का बना है, ऐसे ही बन्दरों का। यह कभी नहीं देखा गया कि एक गुलाम तुम्हारे सामने हाथ बढ़ाकर सच्चाई के साथ तुमसे तुम्हारे काम के लिये कहता है 'धन्यवाद'।"

"मैं नहीं जानता कि तुम क्या चाहते हो," सामोलेन्को ने जम्हाई लेते हुए कहा, "वह बेचारी, अपनी हार्दिक सरलता के साथ तुमसे वैज्ञानिक विषयों पर बातें करना चाह रही थी और तुमने उससे यह निष्कर्ष निकाल लिया। तुम किसी कारणवश लायवस्की से नाराज

हो और उस महिला से भी कि वह उसके साथ रहती है। वह एक बहुत अच्छी औरत है।"

"आह, वाहियात बात है। एक मामूली रखैल औरत, अभागी और गन्दी। सुनो, अलेक्जेन्डर देविदिच, जब तुम एक सीधी सादी किसान औरत से मिलते हो जो अपने पति के साथ नहीं रह रही होती है, जो सिर्फ खीसें निपोरने के अलावा और कुछ भी नहीं करती तो तुम उससे चले जाने और काम करने के लिए कह उठते हो। तुम इस मामले में इतने संकोची और सत्य कहने में इतने भयभीत क्यों होते हो? सिर्फ इसलिए कि नाद्येज़्दा एक मल्लाह की रखैल न होकर एक अफसर की रखैल है।"

"मुझे इससे क्या मतलब," सामोलेन्को ने नाराज़ होते हुए कहा—"मैं उसे पीटूँ या क्या करूँ?"

"बुराई की खुशामद मत करो। हम बुराई का खंडन केवल उसकी पीठ पीछे करते हैं और यह किसी कोने में छिपकर किसी को मुँह चिढ़ाना होता है। मैं प्राणी–विद्या–विशारद या समाज-शास्त्री हूँ, जो कि एक ही बात है; तुम एक डाक्टर हो; समाज हम लोगों पर विश्वास करता है। हमें इस भयंकर बुराई से, जो समाज को धमकी देती है, सबको और आने वाली सन्तति को नाद्येज़्दा इवानोव्ना जैसी स्त्रियों के अस्तित्व के प्रति आगाह कर देना चाहिये।"

"फ्योदोरोव्ना," सामोलेन्को ने संशोधन किया। "लेकिन समाज को क्या करना चाहिए?"

"समाज को? यह उसका काम है। मेरे विचार से सबसे सच्चा और सीधा तरीक़ा यह है—बाध्यता फौजी शिक्षा की, उसे अपने पति के पास लौट जाना चाहिए, और अगर उसका पति उसे स्वीकार न करे तो उसे सज़ा मिलनी चाहिए या किसी सुधार-गृह में भेज दिया जाना चाहिए।"

"उफ !" सामोलेन्को ने आह भरी। उसने सोचा और जल्दी से पूछा, "तुमने उस दिन यह कहा था कि लायवस्की जैसे व्यक्तियों को नष्ट कर देना चाहिए।……मुझे बताओ कि अगर तुम… अगर सरकार या समाज तुम्हें उसके नष्ट करने के लिये भेजता, तो तुम ऐसा कर सकते थे……तुमसे ऐसा काम हो सकता था?"

"मेरे हाथ कभी नहीं काँपते।"

—:o:—

८

जब वे घर पहुँच गए तो नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना और लायवस्की अपने अंधेरे, दम घोंटने वाले, गन्दे कमरों में चले गये। दोनों खामोश थे। लायवस्की ने एक मोमबत्ती जलाई जब कि नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना बैठ गई और बिना अपना लबादा और टोप उतारे हुए उसने अपने अवसाद पूर्ण नेत्र अपराधिनी की तरह उसकी तरफ उठाये।

वह जानता था कि वह उससे सफाई देने की उम्मीद कर रही है परन्तु कोई भी सफाई देना कष्टकारक, व्यर्थ और थका देने वाला होता। और उसका हृदय भारी था क्योंकि उसने अपना संयम खो दिया था और उसके साथ कठोर व्यवहार किया था। अचानक उसका हाथ जेब में पड़े हुए उस खत पर जा पड़ा जिसे वह प्रतिदिन उसे दिखाने का इरादा किया करता था और उसने सोचा कि अगर वह इस खत को उसे इस समय दिखा दे तो उसकी विचारधारा दूसरी तरफ मुड़ जायगी।

"यह समय है कि हम लोग अपने सम्बन्धों को स्पष्ट कर लें," उसने सोचा, "मैं उसे यह खत दे दूँगा, जो होगा सो हो जायगा।"

उसने खत निकाला और उसे दे दिया।

"इसे पढ़ लो। यह तुमसे सम्बन्धित है।"

यह कहता हुआ वह अपने कमरे में चला गया और अंधेरे में ही अपने सोफे पर बिना तकिया लगाये लेट गया। नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने खत पढ़ा और उसे ऐसा लगा मानो छत गिर रही थी और दीवारें उसे दबाती चली आ रही थीं। अचानक ऐसा प्रतीत हुआ कि चारों ओर अन्धकार छाता जा रहा है, दम घुट रहा है और

वातावरण भयानक हो उठा है। उसने जल्दी से तीन बार अपने ऊपर क्रास का निशान बनाया और कहा--

"उसे शान्ति देना, भगवान...... उसे शान्ति देना। ......"

और वह रोने लगी।

"वान्या," उसने पुकारा। "इवान आन्द्रिइच!"

कोई जवाब नहीं मिला। यह सोचते हुए कि लायवस्की भीतर आ गया है और उसकी कुर्सी के पीछे खड़ा हुआ है वह एक बच्चे की तरह सिसक उठी और बोली:

"तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया कि वह मर चुका था? मैं पिकनिक के लिये नहीं जाती, मुझे इतनी बुरी तरह नहीं हँसना चाहिए था।......उन लोगों ने मुझसे भयानक बातें कही थीं। कितनी पाप की बात है, कितना पाप! मुझे बचाओ...वान्या, मुझे बचाओ... मैं पागल हो गई थी...... मैं बर्बाद हो गई......"

लायवस्की ने उसकी सिसकियाँ सुनीं। उसका दम सा घुटने लगा और दिल बुरी तरह धड़क उठा। दुखी होकर वह उठ खड़ा हुआ, कमरे के बीच में खड़ा हुआ, अन्धेरे में टटोल कर मेज के पास रखी हुई आराम कुर्सी के पास पहुँचा और बैठ गया।

"यह जेल है..." उसने सोचा! "मुझे इसमें से निकल जाना चाहिए...... मैं इसे सहन नहीं कर सकता।"

ताश खेलने जाने के लिये बहुत देर हो चुकी थी। कस्बे में रेस्टोरेन्ट भी नहीं थे। वह दुबारा लेट गया और अपने कान बन्द कर लिए जिससे उसका सुबकना न सुन सके और एकाएक उसे याद आयी कि वह सामोलेन्को के यहाँ जा सकता है।

नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना के नजदीक जाने से बचने के लिए वह खिड़की में होकर बाग में कूदा, चहारदीवारी पार की और सड़क पर चल दिया। अन्धकार छा रहा था। एक स्टीमर जिसकी रोशनियों से

वह एक यात्री स्टीमर सा मालूम पड़ता था, अभी आया था।······ उसने लङ्गर वाली जंजीर की खड़खड़ाहट सुनी। किनारे से एक लाल रोशनी स्टीमर वाली दिशा में तेजी से घूम रही थी, यह चुङ्गी की नाव थी जो स्टीमर के पास जा रही थी।

"मुसाफिर अपने केबिनों में सो रहे हैं·····," लायवस्की ने सोचा और उसे दूसरे मनुष्यों की मानसिक शान्ति से ईर्ष्या हो उठी।

सामोलेन्को के मकान की खिड़कियाँ खुली हुई थीं। लायवस्की ने उनमें से एक में होकर भीतर झाँका और फिर दूसरी में होकर देखा, कमरों में स्तब्धता और अन्धकार छा रहा था।

"अलेक्जेन्डर देविदिच, क्या सो रहे हो?" उसने पुकारा। "अलेक्जेन्डर देविदिच!" उसे खाँसी और चिड़चिड़ाहट से भरी हुई चीख सुनाई दी।

"कौन है? कौन शैतान है?"

"यह मैं हूँ, अलेक्जेन्डर देविदिच, माफ करना।"

थोड़ी देर बाद दरवाजा खुला। लैम्प की हलकी रोशनी चमकी और सामोलेन्को का विशाल शरीर, सिर से पैर तक सफेद, सिर पर सफेद नाइट कैप लगाये हुए दिखाई पड़ा।

"अब क्या हुआ?" नींद के कारण गहरी साँस लेते और खुजाते हुए उसने पूछा। "एक मिनट ठहरो, मैं अभी दरवाजा खोलता हूँ।"

"तकलीफ मत करो; मैं खिड़की में होकर आजाऊँगा······"

लायवस्की खिड़की पर चढ़ गया और जब सामोलेन्को के पास पहुँचा तो उसका हाथ पकड़ लिया।

"अलेक्जेन्डर देविदिच," उसने काँपती हुई आवाज में कहा, "मुझे बचाओ! मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ, मिन्नत करता हूँ। मुझे समझो! मेरी हालत बड़ी दुखदाई है। अगर और दो दिन तक ऐसी

ही हालत रही तो मैं गला घोंट कर मर जाऊँगा··· एक कुत्ते की तरह।"

"ज़रा ठहरो ! ···तुम ठीक ठीक किस बारे में बातें कर रहे हो ?"

"एक मोमबत्ती जला लो।"

"ओह···ओह ! ··" सामोलेन्को ने मोमबत्ती जलाते हुए आह भरी। "मेरे भगवान, मेरे भगवान······ क्यों, एक बज गया है भाई !"

"माफ करना भाई लेकिन मैं अपने घर में नहीं ठहर सकता," उस रोशनी और सामोलेन्को की उपस्थिति से पूर्ण सुरक्षा का अनुभव करते हुए लायवस्की ने कहा, "तुम मेरे सबसे अच्छे एकमात्र मित्र हो अलेक्जेन्दर देवित्रिच।······ तुम्हीं मेरी एकमात्र आशा हो। भगवान के लिए मेरी रक्षा करो, चाहे तुम चाहो या न चाहो। मुझे यहाँ से मुक्ति पानी ही चाहिए, चाहे जो कुछ हो।··· मुझे रुपया उधार दे दो !"

"ओह, मेरे भगवान, मेरे भगवान !···खुजाते हुए सामोलेन्को ने आह भरी। "मैं सो रहा था कि स्टीमर की सीटी सुनाई दी और अब तुम · क्या तुम्हें ज्यादा चाहिए ?"

"कम से कम तीन सौ रूबल। मुझे उसके लिये सौ रूबल छोड़ जाने चाहिये और दो सौ रूबल अपनी यात्रा के लिये चाहिये।·· मुझ पर तुम्हारे चार सौ तो पहले से ही चाहिये परन्तु मैं यह सब भेज दूँगा······ सब·······"

सामोलेन्को ने अपने एक हाथ में दोनों गलमुच्छे पकड़ लिए और पैर फैला कर खड़ा हुआ सोचने लगा।

"हाँ ·" सोचते हुये वह बड़बड़ाया। "तीन सौ···अच्छा··· परन्तु मेरे पास इतने तो हैं नहीं। मुझे किसी से उधार लेने पड़ेंगे।"

"उधार ले लो, भगवान के लिए !" लायवस्की ने कहा, सामोलेन्को के चेहरे से यह भांप कर कि वह उसे उधार देना चाहता है और शर्तिया उधार दे देगा। "उधार ले लो, और मैं यकीनन वापस कर दूँगा। मैं जैसे ही पीटर्सबर्ग पहुँचूगा, भेज दूँगा। तुम इस बारे में निश्चिन्त रहना। मैं तुमसे क्या कहूँ, साशा," वह अधिक सचेत होता हुआ कहने लगा, 'थोड़ी सी शराब पी ली जाय।'

"हाँ .... हम लोग थोड़ी सी शराब भी पी सकते हैं।"

वे दोनों भोजन-गृह में गए।

"और नादूयेज़्दा फ्योदोरोव्ना का क्या होगा,' मेज पर तीन बोतलें और मटर की एक प्लेट रखते हुए सामोलेन्को ने पूछा। "निश्चित रूप से वह यहाँ नहीं ठहर रही है ?"

"मैं वह सब ठीक कर लूँगा, सब ठीक कर लूँगा," लायवस्की ने अप्रत्याशित उल्लास का अनुभव करते हुए कहा। "मैं उसके लिए फिर रुपया भेज दूँगा और वह मेरे पास पहुँच जायगी .... तब हम लोग अपने सम्बन्धों को स्पष्ट कर लेंगे। तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए, मित्र !"

"जरा ठहरो," सामोलेन्को बोला। "पहले यह पीओ ।...... यह मेरे अँगूरों के बाग की है। यह बोतल नवारिड्ज की है और यह अहातुलोव के यहाँ की है।......तीनों को चखो और मुझे ईमानदारी से बताओ ....मेरी शराब में कुछ तीखापन है। क्यों ? तुम्हें नहीं लग रहा ?"

"हाँ। तुमने मुझे सान्त्वना दी है, अलेक्जेन्दर देविदिच। शुक्रिया .....अब मेरी तबयित पहले से अच्छी है।"

"क्या इसमें कुछ तीखापन है ?"

"भगवान ही जान सकता है, मुझे नहीं मालूम। परन्तु तुम एक बहुत अच्छे और अद्भुत व्यक्ति हो।"

उसके पीले, उत्तेजित, भले चेहरे को देखकर सामोलेन्को को वॉन कोरेन का वह विचार याद हो आया कि इस तरह के व्यक्तियों

को नष्ट कर देना चाहिए और लायवस्की उसे एक निर्बल, असहाय बच्चे की तरह लगा जिसे कोई भी नुकसान पहुँचा सकता है और नष्ट कर सकता है।

"तुम कब जा रहे हो, अपनी माँ से मेल कर लेना," उसने कहा, "यह ठीक नहीं है।"

"हाँ, हाँ, निश्चित रूप से मैं मेल कर लूँगा।"

वे कुछ देर खामोश रहे। जब उन्होंने पहली बोतल समाप्त कर ली, सामोलेन्को ने कहा :

"तुम्हें वॉन कोरेन से भी मेल कर लेना चाहिए। तुम दोनों ही इतने अच्छे, चतुर मनुष्य हो और फिर भी एक दूसरे की तरफ भेड़ियों की तरह घूरते हो।"

"हाँ, वह एक अच्छा और बहुत विद्वान व्यक्ति है," लायवस्की ने स्वीकार करते हुए कहा। वह इस समय किसी की भी तारीफ करने और हरेक को क्षमा करने को तैयार था। "वह एक विशिष्ट व्यक्ति है परन्तु उसको निभाना मेरे लिए असम्भव है। नहीं! हम लोगों की प्रकृति बहुत भिन्न हैं। मैं एक सुस्त, कमजोर और दब्बू स्वभाव का व्यक्ति हूँ। सम्भव है कि अभी मैं उसके सामने अपना हाथ बढ़ा दूँ परन्तु वह मेरी तरफ से मुँह फेर लेगा ··नफरत से।"

लायवस्की ने शराब की एक चुस्की ली, एक कोने से दूसरे कोने तक घूमा और फिर कमरे के बीचोंबीच खड़े होकर कहने लगा :

"मैं वॉन कोरेन को खूब अच्छी तरह जानता हूँ। उसकी प्रकृति दृढ़, शक्तिशाली और निरंकुश है। तुमने उसे हमेशा 'यात्रा' की बातें करते सुना होगा और यह सिर्फ बातें ही नहीं हैं। वह निर्जनता चाँदनी से नहाती हुई रात चाहता है ; चारों तरफ छोटे छोटे तम्बुओं में खुले आसमान के नीचे, उसके बीमार और भूखे कज्जाक, पथ-प्रदर्शक, कुली, डाक्टर, पादरी आदि सभी लेटे हुए हैं जो सबके सब लम्बी यात्राओं से थक गए हैं जबकि सिर्फ वही अकेला जाग रहा है, स्टेनली की तरह

एक कैम्प-स्टूल पर बैठा हुआ, स्वयं को रेगिस्तान का सम्राट और इन मनुष्यों का मालिक समझता हुआ। वह बढ़ता चला जाता है, आगे और आगे, उसके आदमी कराहते हैं और मर जाते हैं—एक के बाद एक, और वह आगे बढ़ता चला जाता है और अन्त में खुद अपने को भी समाप्त कर लेता है परन्तु अब भी रेगिस्तान का सम्राट और शासक है क्योंकि उसकी कब्र पर लगा हुआ क्रॉस का निशान रेगिस्तान में चलते हुए कारवाँ को तीस या चालीस मील की दूरी से ही दिखाई देने लगता है। मुझे अफ़सोस है कि यह व्यक्ति फ़ौज में क्यों न हुआ। वह एक बहुत दक्ष सेनापति बन सकता था। वह अपनी घुड़सवार सेना को नदी में डुबाने और मृतकों के शरीरों का पुल बनाने में नहीं हिचकता। और इस तरह की कठोरता किसी भी तरह की क़िलेबन्दी और पेचीदा मामलों की अपेक्षा युद्ध में अधिक अपेक्षित है। ओह, मैं उसे खूब अच्छी तरह समझता हूँ! यह बताओ कि वह अपनी शक्ति को यहाँ क्यों बर्बाद कर रहा है? वह यहाँ क्या चाहता है?"

"वह समुद्री जीवों का अध्ययन कर रहा है।"

"नहीं, नहीं भाई नहीं!" लायवस्की ने गहरी साँस ली। "एक वैज्ञानिक ने जो स्टीमर पर था, मुझे बताया था कि पशुओं के मामले में कालासागर अच्छा स्थान नहीं है और यह कि इसके गहरे स्थानों में गन्धक से उत्पन्न हाइड्रोजन की अधिकता को धन्यवाद है कि वहाँ प्राणीमात्र का जीवित रहना असम्भव है। प्राणि-विज्ञान के सभी गम्भीर अध्येता नेपल्स के या विलेफ्रैंची के प्राणि-विज्ञान केन्द्रों में अध्ययन करते हैं। परन्तु वॉन कोरेन स्वच्छन्द और अक्खड़ है, वह कालासागर में इसलिये

अध्ययन करता है क्योंकि और कोई यहाँ काम नहीं कर रहा, यूनि-वर्सिटी में उसके साथ मूर्ख काम करते हैं। वह अपने दूसरे साथियों और वैज्ञानिकों को जानने की चिन्ता नहीं करता क्योंकि वह पहले एक स्वेच्छाचारी है और बाद में प्राणि-विज्ञान का विद्यार्थी। और तुम देखोगे कि वह कुछ न कुछ करेगा ज़रूर। वह अभी यह स्वप्न देखने लगा है कि जब वह अपनी यात्रा से लौट आयेगा तो हमारी युनिवर्सि-टियों को षडयन्त्रों और कर्तव्यहीनता की भावनाओं से मुक्त कर देगा और वैज्ञानिकों को अपने काम में ध्यान लगाने के लिये मजबूर कर देगा। कर्त्तव्यहीनता वैज्ञानिक क्षेत्र में भी इतनी ही प्रबल है जितनी कि फौज में। और वह अपनी दूसरी गर्मियाँ बदबूदार कस्बे में इस-लिये बिता रहा है क्योंकि वह एक शहर की बनिस्बत एक गाँव में प्रथम स्थान आसानी से पा सकेगा। वह यहाँ एक राजा या नवाब की तरह है। वह यहाँ के सम्पूर्ण रहने वालों को अपने अँगूठे के नीचे दबाए रखता है और अपने अधिकार से उन्हें सताता रहता है। उसने हरेक पर कब्जा रखा है, हरेक के मामले में दखल देता है, हर चीज उसके लिए काम की है और हरेक उससे डरता है। मैं उसके पंजे में से निकला जा रहा हूँ। वह इसको महसूस करता है और मुझसे नफरत करता है। क्या उसने तुमसे यह नहीं कहा कि मुझे नष्ट कर देना चाहिए या कठोर परिश्रम करने के लिए जेल भेज दिया जाना चाहिए ?"

"बताया है," सामोलेन्को हँसा।

लायवस्की भी हँसा और थोड़ी सी शराब पी।

"उसके विचार भी स्वेच्छाचारी हैं," उसने हँसते हुए और एक आह् खाते हुए कहा। "साधारण मनुष्य अपने पड़ौसियों के बारे में सोचते हैं—मैं, तुम, जो सचमुच आदमी हैं—अगर वे जनसाधारण के

कल्याण के कार्य करते हैं। वॉन कोरेन की नज़र में मनुष्य कठपुतली हैं और अस्तित्वहीन होते हैं। वे उसके जीवन के लक्ष्य बनने के लिए बहुत ही तुच्छ हैं। वह काम करता है, अपनी यात्रा पर जायगा और वहाँ अपनी गर्दन तोड़ बैठेगा, अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम के लिये नहीं बल्कि ऐसी विभिन्न वस्तुओं के लिए जैसे मानवता, भावी सन्तति, एक आदर्श मानव जाति। वह मनुष्य जाति की उन्नति के लिए प्रयत्नशील है और हम लोग उसकी नज़र में गुलाम, तोपों की खुराक, बोझा ढोने वाले जानवर मात्र हैं। कुछ को वह मरवा डालेगा या साइबेरिया में जलावतन कर देगा, दूसरों को वह अराक्चीव की तरह अनुशासन की कठोरता से झुका देगा। वह उन्हें मजबूर कर देगा कि वे लोग नगाड़े की आवाज पर उठें और उसी पर सोयें। हमारे ब्रह्मचर्य और नैतिकता की रक्षा के लिये हिजड़े नियुक्त करेगा, उन्हें उस व्यक्ति को फौरन गोली से उड़ा देने की आज्ञा देगा जो उस रूढ़िवादी नैतिकता के संकुचित घेरे से बाहर निकलने का प्रयत्न करेगा—और यह सब मानव जाति की उन्नति के नाम पर किया जायगा। और मानव-जाति है क्या? भ्रम, मृग-मरीचिका" अत्याचारी, सदैव मायाजाल में विश्वास करने वाले होते हैं। मैं उसे खूब अच्छी तरह जानता हूँ, भाई। मैं उसे पसन्द करता हूँ और उसके महत्व को अस्वीकार नहीं करता; यह संसार उसी जैसे व्यक्तियों पर टिका हुआ है और अगर संसार को हम जैसे व्यक्तियों के हाथों में छोड़ दिया जाय तो अपने अच्छे स्वभाव और सद्‌भावनाओं के रहते हुये भी, हम लोग इसे इतना गन्दा बना डालेंगे जितना कि मक्खियों ने उस तस्वीर को गन्दा बना डाला है; हाँ!"

लायवस्की सामोलेन्को के पास बैठ गया और पूरी सचाई से कहने लगा, "मैं एक मूर्ख, बेकार का, दुराचारी व्यक्ति हूँ। मैं हवा में साँस लेता हूँ। यह शराब, प्रेम, दरअसल पूरा जीवन इन्हीं के लिए

है ! मैं अबतक इसके प्रतिपादन में कुछ भी नहीं दे सका हूँ सिवाय इसके कि सोता रहता हूँ, आलसी हूँ और कायर हूँ। मैं इसके लिए दुखी हुआ हूँ और मेरा दुख उथला और साधारण रहा है। मैं वॉन कोरेन की घृणा के सम्मुख ससम्मान अपना मस्तिष्क झुकाता हूँ क्योंकि कभी कभी मैं खुद अपने आपसे घृणा करने लगता हूँ।"

लायव्स्की फिर उत्तेजित होकर कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक घूमने लगा और बोला—

"मुझे खुशी है कि मैं अपनी बुराइयों को स्पष्ट रूप से देख लेता हूँ और उसके लिए सतर्क रहता हूँ। इससे मुझमें अपना सुधार करने और दूसरी ही तरह का व्यक्ति बनने में सहायता मिलेगी। मेरे प्यारे दोस्त, काश तुम जानते कि मैं कितनी उत्सुकतापूर्वक, कितनी वेदना सहकर, इस परिवर्तन के लिए इच्छुक रहता हूँ। और मैं तुमसे वायदा करता हूँ कि मैं एक आदमी बनूँगा ! मैं बनूँगा ! मैं नहीं जानता कि मेरे भीतर पहुँची हुई शराब बोल रही है या सचमुच ही यह ठीक है, परन्तु मुझे ऐसा लगता है कि बहुत दिन बाद मैंने ऐसे पवित्र और शान्त क्षणों का अनुभव किया है जैसे कि आज तुम्हारे साथ कर रहा हूँ।'

"सोने का समय हो गया, भाई" सामोलेन्को ने कहा।

"हाँ, हाँ, माफ करना, मैं अभी जा रहा हूँ।"

लायव्स्की तेजी से फर्नीचर से टकराता हुआ खिड़की की तरफ अपनी टोपी ढूँढता हुआ बढ़ा।

"शुक्रिया," वह आह भरते हुए बड़बड़ाया। "शुक्रिया···कोमल और आत्मीयता पूर्ण शब्द, दान से अच्छे होते हैं। तुमने मुझे नया जीवन दिया है।"

उसने अपनी टोपी ढूँढ ली, रुका और अपराधी की तरह सामोलेन्को की तरफ देखने लगा।

"अलेक्ज़ेन्द्र देविदिच," उसने आग्रह के से स्वर में कहा।

"क्या बात है ?"

"मुझे अपने साथ रात भर के लिये ठहर जाने दो, मेरे प्यारे दोस्त !"

"शौक से, क्यों नहीं।"

लायवस्की सोफे पर लेट गया और डाक्टर से बहुत देर तक बातें करता रहा।

१०

पिकनिक के तीन दिन बाद, मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा अचानक नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना से मिलने चली आई और उसे बिना नमस्ते किए या अपना टोप उतारे हुये, उसे दोनों हाथों से पकड़ लिया, अपनी छाती से लगाया और अत्यधिक उत्तेजित होकर कहने लगी—

"मेरी प्यारी, मैं बहुत ज्यादा दुखी और परेशान हो उठी हूँ, हमारे दयालु डाक्टर ने मेरे निकोदम अलेक्जेन्द्रिच को कल बताया था कि तुम्हारे पति का स्वर्गवास हो गया। मुझे बताओ, मेरी प्यारी···मुझे बताओ, क्या यह सच है ?"

"हाँ, यह सच है, वह मर गया, "नाद्ज्येदा फ्योदोरोव्ना ने जवाब दिया।

"यह बड़ा भयानक है, बड़ा भयानक, मेरी प्यारी ! परन्तु हरेक बुराई में कुछ न कुछ अच्छाई छिपी रहती है। इसमें कोई शक नहीं कि तुम्हारा पति एक महान, अद्भुत, पवित्र आदमी था, और ऐसों की पृथ्वी की अपेक्षा स्वर्ग में अधिक ज़रूरत रहती है।"

मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा के चेहरे की प्रत्येक रेखा कांपने लगी मानो उसकी त्वचा के नीचे छोटी छोटी सुइयां उछल कूद मचा रही हों। उसके चेहरे पर बादामी मुस्कराहट छा गई और वह हांफते हुये, उत्साहित हो कर कहने लगी—

"और अब तुम स्वतन्त्र हो मेरी प्यारी। अब तुम अपना सिर ऊँचा उठा कर चल सकती हो और लोगों से आंखें मिला कर बातें कर सकती हो। इसके बाद भगवान और मनुष्य इवान आन्द्रेइच के साथ तुम्हारे रहने का आशीर्वाद देंगे। यह बड़ा आकर्षक है। मैं खुशी से

काँप रही हूँ, मुझे शब्द नहीं मिल रहे। मेरी प्यारी, मैं तुम्हें सौंप दूँगी·· निकोदिम अलेक्जेन्द्रिच और मैं तुम्हें बहुत प्यार करते हैं, तुम हमें आज्ञा दोगी कि हम लोग तुम्हारी पवित्र और न्यायानुमोदित एकता को आशीर्वाद दे सकें। तुम्हारा शादी करने का कब का इरादा है ?"

"मैंने इस बारे में सोचा ही नहीं है," नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने अपने हाथ छुड़ाते हुए कहा।

"यह असम्भव है, मेरी प्यारी ! तुमने इस बारे में सोच लिया है, तय कर लिया है।"

"अपनी कसम, मैंने नहीं सोचा," नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने हँसते हुए कहा, "हम लोग किसलिए शादी करें ! मैं इसकी ज़रूरत ही नहीं देखती। हम लोग जैसे रहते आये हैं उसी तरह रहते रहेंगे।"

"तुम क्या कह रही हो ?" मार्या कोन्स्तेन्तीनोव्ना भयभीत होकर चीख उठी, "भगवान के लिए बताओ, यह तुम क्या कह रही हो ?"

"हम लोगों के शादी कर लेने से स्थिति कोई अधिक अच्छी नहीं हो जायगी। बल्कि और भी बुरी हो जायगी। हम लोग अपनी आज़ादी खो बैठेंगे।"

"मेरी प्यारी, मेरी प्यारी, तुम क्या कह रही हो ?" पीछे हटते हुए और हाथ फैलाते हुए मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा ने कहा। तुम जङ्गलियों की सी बातें कर रही हो। सोचो तो सही, तुम कह क्या रही हो। तुम्हें घर बसा लेना ही चाहिए।"

"घर बसाना।' तुम्हारा मतलब क्या है!? अभी मैंने जीवन में देखा ही क्या है जो तुम मुझसे घर बसाने के लिए कह रही हो।"

नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने सोचा कि दरअसल उसने अभी जिन्दगी में कुछ भी नहीं देखा है। उसने छात्रावास में रहकर अपनी पढ़ाई समाप्त की थी और एक ऐसे आदमी से ब्याह दी गई थी जिसे

वह प्यार नहीं करती थी, फिर उसने अपना भाग्य लायवस्की के साथ बाँध दिया था और अपना सारा समय, उसके साथ, इस निर्जन, रूखे तट पर हमेशा किसी अच्छी बात की आशा करते हुए बिताया था। क्या यह जीवन था ?

"फिर भी मुझे शादी कर लेनी चाहिये," उसने सोचा परन्तु किरिलिन और आत्कामियानोव को याद कर वह शर्मा गई और बोली :

"नहीं, यह असम्भव है। अगर इवान आन्द्रिइच घुटनों के बल बैठकर मुझसे प्रार्थना भी करता तो भी मैं इन्कार कर देती।"

मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा एक मिनट तक सोफे पर खामोश,गम्भीर और दुखी बैठी हुई शून्य में आंखें गड़ा कर देखती रही। फिर उठ खड़ी हुई और उदासीनतापूर्वक बोली :

"विदा, मेरी प्यारी ! तकलीफ देने के लिये मुझे क्षमा करना। हालांकि यह आसान नहीं है फिर भी यह मेरा कर्त्तव्य है कि तुम्हें बता दूँ कि आज से हम लोगों के सब सम्बन्ध समाप्त हो गए और इवान आन्द्रिइच के लिए गहरे सम्मान की भावना होते हुए भी, आज से मेरे घर का दरवाजा तुम्हारे लिए बन्द हो चुका।"

उसने इन शब्दों का उच्चारण बड़ी गम्भीरतापूर्वक किया और अपने गम्भीर स्वर से स्वयं ही व्याकुल हो उठी। उसका चेहरा पुनः काँप उठा। उस पर एक बादामी तेल की सी चिकनाहट का भाव झलक उठा। उसने अपने दोनों हाथ नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना की ओर बढ़ा दिये जो परेशान और आतंकित हो उठी थी, और प्रार्थना के से स्वर में कहा :

"मेरी प्यारी, आज्ञा दो कि केवल क्षण भर के लिए मैं तुम्हारी माँ या बड़ी बहिन बन जाऊँ ! मैं तुमसे एक माँ की तरह खुलकर बातें करूँगी।"

नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने अपने हृदय में उत्साह, प्रसन्नता और अपने प्रति दया का अनुभव किया जैसे कि उसकी माँ कब्र से उठ खड़ी हुई हो और उसके सामने खड़ी हो। उसने अभिभूत होकर मार्या कोन्स्तेन्तीनोव्ना को भुजाओं में भर लिया और अपना चेहरा उसके कन्धे पर टिका दिया। दोनों आँसू बहाने लगीं। वे सोफे पर बैठ गईं और कुछ मिनट तक बिना एक दूसरे की तरफ देखे हुए या बिना एक भी शब्द कहने में समर्थ होकर, सिसकती रहीं।

"मेरी प्यारी बच्ची," मार्या कोन्स्तेन्तीनोव्ना ने कहना शुरू किया, "मैं तुमसे कुछ कठोर सत्य कहूँगी बिना तुम्हें बख्शे हुए।"

"भगवान के लिए, भगवान की खातिर कहो।"

"मेरा विश्वास करना, मेरी प्यारी। तुम याद करो कि यहाँ की सब महिलाओं में से, सिर्फ मुझ अकेली ने ही तुम्हारा स्वागत किया था। तुमने पहले ही दिन से मुझे भयभीत कर रखा था परन्तु मेरा दिल ऐसा नहीं था कि मैं दूसरों की तरह तुमसे नफरत कर सकती। मैं, प्यारे, अच्छे इवान आन्द्रिइच के लिये, दुखी हुई मानो वह मेरा ही बेटा था— एक नौजवान, एक अजीब जगह में, अनुभवहीन, कमजोर, बिना माँ का; और मैं चिन्तित हो उठी, बुरी तरह चिन्तित हो उठी····· मेरे पति उससे परिचय बढ़ाने के खिलाफ थे, परन्तु मैंने उससे बातें की···उन्हें मजबूर किया····हम लोगों ने इवान आन्द्रिइच का स्वागत करना प्रारम्भ कर दिया और निस्सन्देह उसके साथ तुम्हारा भी हम न करते तो उसका अपमान होता। मेरे एक बेटी, एक बेटा है····· तुम कोमल मस्तिष्क को जानती हो, बचपन के निरछल हृदय को जानती हो।··· जो कोई भी इन बच्चों में से किसी को भी सताता है··· मैंने अपने घर में तुम्हारा स्वागत किया और अपने बच्चों के लिए काँप उठी। ओह, जब तुम माँ बनोगी, तुम मेरे भय को समझ सकोगी। तुम्हारा स्वागत करने पर सब लोग मुझ पर ताज्जुब करते थे, मुझे

यह कहने के लिये क्षमा करना कि एक सम्मानित महिला के समान तुम्हारा स्वागत करने के लिए, और मुझसे कहा'''खैर, निस्सन्देह वे सब कलङ्क लगाने वाली बातें और कल्पनायें थीं अपने भीतरी मन से मैंने तुम्हें दोष दिया परन्तु तुम दुखी थीं, चंचल थीं, रहम के काबिल थीं, और मेरा हृदय तुम्हारे प्रति दया से उद्वेलित हो उठा।"

"मगर क्यों, क्यों?" बुरी तरह काँपते हुये नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने पूछा, "मैंने किसी का क्या बिगाड़ा है?"

"तुम एक भयंकर पापिष्ठा हो। तुमने वेदी के सम्मुख अपने पति से की हुई प्रतिज्ञा को तोड़ दिया था। तुमने एक भले नौजवान को फुसलाया था, जो अगर तुमसे न मिला होता तो अपने ही वर्ग के किसी अच्छे खानदान की लड़की को जीवनसंगिनी बना लेता और इस समय दूसरों की ही तरह रहता होता। तुमने उसकी जवानी बर्बाद कर दी। बोलो मत, बोलो मत, मेरी प्यारी! मैं कभी भी विश्वास नहीं कर सकती कि हमारे पापों के लिए पुरुष जिम्मेदार है। गलती हमेशा औरत की होती है। पुरुष घरेलू जीवन में बेकार होते हैं, वे लोग अपने दिमाग से शासित होते हैं न कि अपने हृदय से। ऐसी बहुत सी बातें हैं जिन्हें वे नहीं समझते, औरत सब समझती है। सब कुछ उसी पर निर्भर रहता है। उसे बहुत कुछ दिया गया है और उससे बहुत कुछ की आशा की जाती है। ओह, मेरी प्यारी अगर उस पक्ष में वह मनुष्य से अधिक मूर्ख और निर्बल होती तो भगवान उस पर लड़के और लड़कियों की शिक्षा का भार नहीं सौंपता। और दूसरी बात यह, मेरी प्यारी, कि तुमने बुराई के रास्ते पर कदम बढ़ाया, शालीनता को पूरी तरह भुलाते हुए। तुम्हारी स्थिति में कोई भी दूसरी औरत अपने को आदमियों से छिपाती फिरती, घर में बन्द हो कर के बैठ जाती, और सिर्फ भगवान के मन्दिर में पीले, काले कपड़े पहिने हुए, रोती दिखाई पड़ती और हर कोई सच्ची हमदर्दी से कह उठता, यह गुमराह फरिश्ता

फिर तेरे पास वापस आ रहा है ..' परन्तु तुमने, मेरी प्यारी, सम्पूर्ण विवेक को खो दिया; खुल्लमखुल्ला रहीं, ऐश के साथ; अपने पाप के लिए तुम गर्वित प्रतीत हुईं; प्रसन्न और हँसती हुई रहीं और मैं तुम्हारी तरफ देख कर भय से कांप उठी। मुझे यह भय हुआ कि हमारे घर पर बिजली गिर पड़ेगी जब कि तुम यहाँ हमारे साथ बैठी हुई थीं। मेरी प्यारी, बोलो मत,' यह देख कर कि नाद्येज्दा कोन्स्तेन्तीनोवा बोलना चाह रही है मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा चिल्ला उठी: 'मेरा विश्वास करो, मैं तुम्हें धोखा नहीं दूँगी। मैं तुमसे एक भी सत्य नहीं छिपाऊँगी। मेरी बात सुनो, मेरी प्यारी भगवान बड़े पापियों को निगाह में रखता है और तुम्हारे ऊपर उसकी निगाहें हैं, सिर्फ सोचो तो सही तुम्हारे कपड़े हमेशा भय उत्पन्न करने वाले रहे हैं।"

नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने, अपने कपड़ों के बारे में जिसकी राय हमेशा ऊँची रहती थी, रोना बन्द कर दिया और उसकी तरफ आश्चर्य से देखने लगी।

"हाँ, भयभीत करने वाले" मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा कहती गई, कोई भी व्यक्ति तुम्हारी पोशाक की तड़क भड़क और फैलाव से तुम्हारे चरित्र का पता चला सकता था। लोग बाग तुम्हारी तरफ देखकर हँसते थे और कन्धे उचकाते थे और मैं दुखी होती थी, दुखी ... और माफ करना, मेरी प्यारी, तुम्हारे शरीर की गठन भी अच्छी नहीं है। जब हम लोगों की स्नान-घर में मुलाक़ात हुई थी तो मैं देखकर कांप उठी थी। तुम्हारे ऊपरी कपड़े काफी अच्छे थे परन्तु तुम्हारा पेटीकोट, तुम्हारी शेमीज़......मेरी प्यारी, मैं शर्म से गढ़ गई! बेचारा इवान आन्द्रिइच! कोई भी कभी उसके कपड़ों को ठीक नहीं करता और उसके बूट और कमीज़ों से तो कोई भी यह देख सकता है कि घर पर कोई भी उसकी देखभाल नहीं करता। और वह हमेशा भूखा रहता

है, मेरी प्यारी और यह ठीक भी है कि जब घर पर कोई भी समोवार और कॉफी की चिन्ता करने वाला नहीं होता तो दूसरे को मजबूर होकर अपना आधा वेतन होटल में खत्म कर देना पड़ता है। और यह सब बड़ा भयानक है, तुम्हारे घर की दशा बड़ी भयानक है। कस्बे में किसी के भी यहाँ मक्खियाँ नहीं हैं परन्तु तुम्हारे कमरों में तो इनसे पीछा छुड़ाना दुश्वार है। सारी प्लेटें और तश्तरियाँ उनसे काली हो रही हैं। अगर तुम खिड़कियों और कुर्सियों को देखो तो वहाँ धूल, मरी हुई मक्खियाँ और गिलासों के अलावा और कुछ भी नहीं है।··· तुम गिलासों को इधर उधर क्यों पड़ा रहने देती हो? और मेरी प्यारी, मेज इस समय तक भी साफ नहीं हुई है। और किसी को भी तुम्हारे सोने के कमरे में आने में शर्म आती है। चारों तरफ नीचे पहनने वाले कपड़े हैं, दीवालों पर भारतीय रबड़ के ब्यूब लटक रहे हैं, बाल्टियाँ और बर्तन इधर-उधर पड़े हैं··मेरी प्यारी! एक पति को इनके बारे में कुछ भी नहीं मालूम होना चाहिए और उसकी पत्नी को उसके सामने एक नन्हे फरिश्ते की तरह साफ सुथरा रहना चाहिए। मैं रोज सूरज निकलने से पहले उठती हूँ और ठंडे पानी से अपना चेहरा साफ करती हूँ जिससे मेरा निकोदिम अलेक्जेन्द्रिच मुझे उनींदा न देख सके।"

"यह सब वाहियात बातें हैं," नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना सिसक उठी। "काश कि मैं सुखी होती, मगर मैं इतनी दुखी हूँ।"

"हाँ, हाँ, तुम बहुत दुखी हो।" मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा ने गहरी सांस ली, अपने को बड़ी मुश्किल से रोने से रोकते हुए कहा "और भविष्य में तुम्हारे लिये और भी अधिक दुख उठाना बदा है। एक एकाकी वृद्धावस्था, टूटा हुआ शरीर, और फिर तुम्हें उस भयानक न्याय सिंहासन के सम्मुख जवाब देना पड़ेगा।' यह भयानक है,

भयानक है। इस समय भाग्य तुम्हारी सहायता के लिये हाथ बढ़ा रहा है और तुम पागल की तरह से इसे दूर धकेल रही हो। विवाह कर लो, शीघ्रता करो और शादी कर लो।"

"हाँ, हम लोगों को कर लेनी चाहिए, अवश्य कर लेनी चाहिए," नादयेज्दा फ्योदोरोव्ना बोली, "परन्तु यह असम्भव है।"

"क्यों?"

"यह नामुमकिन है। ओह, काश, तुम जानती होतीं।"

नादयेज्दा फ्योदोरोव्ना के मन में आया कि वह उससे किरिलिन के बारे में बतादे और यह कि किस तरह पिछली शाम को बन्दरगाह पर सुन्दर नवयुवक आत्शमियानोव से मिली थी और किस तरह पागलों का वाहियात विचार उसके मन में उठा था कि वह अपना तीन सौ रूबल का कर्ज समाप्त करादे। इससे उसका बहुत मनोरंजन हुआ था और वह शाम को बहुत देर बाद यह अनुभव करती घर लौटी थी कि उसने अपने को बेच दिया था और वह बुरी तरह बर्बाद हो चुकी थी। और उसके मन में आया कि वह मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा से कसम खाकर कहे कि वह कर्ज जरूर अदा कर देगी परन्तु सिसकियों और शर्म ने उसे बोलने से रोक दिया।

"मैं यहाँ से जा रही हूँ," वह बोली, "इवान आन्द्रिइच ठहर सकता है, मगर मैं जा रही हूँ।"

"कहाँ?"

"रूस!"

"मगर वहाँ तुम रहोगी कैसे? तुम्हारे पास तो कुछ भी नहीं है।"

"मैं अनुवाद करूँगी, या...... या एक लाइब्रेरी खोल लूँगी......।"

"अपनी कल्पना को इतना अधिक मत दौड़ाओ, मेरी प्यारी, लाइब्रेरी खोलने के लिए तुम्हारे पास पैसा होना चाहिये।

खैर अब मैं चलूँगी। तुम अपने को शान्त करो और परिस्थिति पर गौर करो तथा कल स्वस्थ और प्रसन्न होकर मेरे यहाँ मिलने के लिए आना। यह बड़ा सुन्दर रहेगा। अच्छा, गुड बाई, मेरी परी। मुझे एक चुम्बन दो।"

मार्था कोन्स्तेन्तीनोव्ना ने नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना को माथे पर चूमा, उस पर क्रॉस का निशान बनाया और धीरे से चली गई। अन्धेरा बढ़ता आ रहा था। ओल्गा ने रसोई-घर में लैम्प जला दी थी। अब भी रोती हुई नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना अपने सोने वाले कमरे में चली और बिस्तर पर जा लेटी। उसे बहुत तेज बुखार चढ़ने लगा। उसने बिना उठे हुए कपड़े उतारे, पैरों के नीचे कपड़ों को गुड़ी मुड़ी किया और बिस्तर में सिकुड़ कर लेट गई। वह प्यासी थी और वहाँ उसे कुछ पिलाने के लिए कोई भी नहीं था।

"मैं इसे चुका दूँगी!" उसने स्वयं से कहा और उसे सन्निपात की अवस्था में ऐसा लगा कि वह किसी बीमार स्त्री के पास बैठी है और उसने पहचाना कि वह औरत स्वयं वह ही है। "मैं इसे चुका दूँगी। यह सोचना मूर्खता होगी कि यह पैसे के लिए मैंने किया था·········मैं यहाँ से चली जाऊँगी और पीटर्सबर्ग पहुँच कर उसे पैसे भेज दूँगी। पहले एक सौ ··· फिर सौ और और फिर तीसरी बार सौ ··· "

जब लायव्स्की भीतर आया तो काफी रात बीत चुकी थी।

"पहले एक सौ ······" नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना ने उससे कहा, "फिर सौ और······"

"तुम्हें थोड़ी कुनैन खा लेनी चाहिए," लायवस्की ने कहा और सोचा, "कल बुधवार है, स्टीमर कल जाता है और मैं उसमें नहीं जा रहा हूँ। इसलिए मुझे शनिवार तक यहीं रहना पड़ेगा।"

नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना बिस्तर पर उकड़ूँ बैठ गई।

"मैंने अभी कुछ भी नहीं कहा था, कहा था कुछ?" मुस्कराते

और रोशनी की तरफ देखकर अपनी आँखें सिकोड़ते हुए उसने पूछा

"नहीं, कुछ भी नहीं। हमें कल डाक्टर बुलाना ही पड़ेगा। सो जाओ।"

उसने अपना तकिया उठाया और दरवाजे की तरफ चला। जब से उसने नाद्येझ्दा फ्योदोरोव्ना को छोड़कर भाग जाने का अन्तिम निश्चय कर लिया था, लायव्स्की के मन में उसके प्रति दया और अपराध की भावना जागृत होने लगी थी। वह उसकी उपस्थिति में थोड़ा सा लज्जित होने लगा था जैसे कि किसी बीमार और बुड्ढे घोड़े के सामने उसका मालिक होता है जिसे गोली मार देने का निश्चय किया जा चुका है। वह दरवाजे पर रुक गया और उसकी तरफ मुड़कर देखने लगा।

"पिकनिक में मैं उद्विग्न हो उठा था और तुम से कुछ कड़ी बातें कही थीं। भगवान के लिए, मुझे क्षमा कर देना।"

यह कहते हुए वह अपने पढ़ने वाले कमरे में चला गया, लेटा और बहुत देर तक सोने में असमर्थ रहा।

दूसरे दिन सुबह जब सामोलेन्को सजा-धजा, क्योंकि छुट्टी का दिन था इसलिए अपनी पूरी यूनीफार्म पहने, कन्धों पर पद सूचक निशान लगाए और सीने पर तमगे लटकाए हुए, नाद्येझ्दा फ्योदोरोव्ना की नब्ज और जीभ देखने के बाद कमरे से बाहर निकला तो लायव्स्की ने जो दरवाजे में खड़ा हुआ था, उत्सुक होकर पूछा : "क्यों ? क्या हुआ ?"

उसके चेहरे पर भय, व्याकुलता और आशा के भाव छा रहे थे।

"परेशान मत हो; खतरे की कोई बात नहीं है," सामोलेन्को बोला, "मामूली बुखार है।"

"मैं यह नहीं पूछ रहा," लायव्स्की अधीर होकर घुर्राया, "तुम्हें रुपये मिल गए या नहीं ?"

"मेरी जान, माफ करना," वह दरवाजे की तरफ देखते हुए

असमंजस में पड़ कर बुदबुदाया। "भगवान के लिए मुझे क्षमा करो ! किसी के पास एक कौड़ी भी फालतू नहीं है और मैं अब तक दस-दस, पाँच-पाँच करके कुल एक सौ दस रूबल जुटा सका हूँ। आज मैं किसी और से बात करूँगा। धीरज से काम लो।"

"मगर शनिवार आखिरी तारीख है," अधीरता से कांपते हुए लायवस्की फुसफुसाया, "तुम्हें भगवान की कसम है, शनिवार तक जुटा देना ! अगर मुझे शनिवार तक न मिले तो फिर कोई फायदा नहीं। मैं सोच नहीं सकता कि एक डाक्टर के पास पैसे न हों ?"

"भगवान हम पर रहम करे !" सामोलेन्को जल्दी से और तेजी से बोला। उसके स्वर में निराशा की एक स्पष्ट ध्वनि थी। "मेरा सब कुछ छीन लिया गया है। मेरे सात हजार दूसरों पर चाहिए और मैं खुद चारों तरफ कर्ज से घिरा हुआ हूँ। क्या यह मेरा अपराध है ?"

"तो शनिवार तक तुम्हें रुपए मिल जायँगे न ? क्यों ?"

"कोशिश करूँगा।"

"मैं प्रार्थना करता हूँ, मेरे प्यारे मित्र ! जिससे कि शुक्रवार की सुबह तक मेरे हाथ में रुपया आ जाय।"

सामोलेन्को बैठ गया और नुस्खा लिखने लगा जिसमें कुनैन, कालो ब्रोमाटी, रबार्ब का टिंक्चर, टिंक्चर जेनटियानो, एक्वा फोनीक्युली आदि को मिलाकर एक मिक्स्चर प्रस्तुत करना था और उसे मीठा बनाने के लिए उसमें थोड़ा सा कोई गुलाबी रंग का शर्बत मिलाना था। वह नुस्खा लिख कर चला गया।

—:०:—

११

"तुम ऐसे दिखाई दे रहे हो मानो मुझे गिरफ्तार करने आये हो," पूरी यूनीफार्म पहने हुए समोलेन्को को भीतर आते हुये देखकर वॉन कोरेन ने कहा।

"मैं इधर से गुज़र रहा था और सोचा, 'मान लो कि मैं भीतर चलूँ और प्राणि-विज्ञान को नमस्कार करलूँ'," बड़ी मेज पर बैठते हुए सामोलेन्को ने कहा जिसे वॉन कोरेन ने तख्तों को जोड़कर खुद ही बनाया था।

"गुड मार्निङ्ग, पवित्र पिता," उसने पादरी से कहा जो खिड़की पर बैठा हुआ कुछ नकल कर रहा था। "मैं एक मिनट ठहरूँगा और फिर डिनर की तैयारी करने के लिए घर दौड़ जाऊँगा। समय हो चला ... मैं कोई बाधा तो नहीं डाल रहा?"

"क़तई नहीं," प्राणि-शास्त्र-विशारद ने महीन लिखावट में लिखे हुए कागज़ों को मेज पर रखते हुये कहा— "हम लोग नक़ल करने में व्यस्त हैं।"

"आह!......ओह, मेरे भगवान!...." सामोलेन्को ने गहरी साँस ली। उसने सावधानीपूर्वक मेज पर से एक मैली किताब उठाई जिस पर एक सूखी हुई मकड़ी रखी थी और बोला: 'हालाँकि सिर्फ ख्याली बातें हैं। कोई छोटी सी हरी तितली अपने काम से जा रही है कि अचानक ऐसा ही एक राक्षस उस पर टूट पड़ता है। मैं इसके भय की कल्पना कर सकता हूँ।'

"हाँ, मेरा भी ऐसा ख्याल है।"

"क्या इसमें अपने शत्रुओं से अपनी रक्षा करने के लिये जहर होता है?"

"हाँ, अपनी रक्षा करने के लिये और हमला करने के लिए भी।"

"बिल्कुल ठीक, बिल्कुल ठीक·····और मेरे प्यारे मित्र, प्रकृति में हरेक वस्तु सापेक्ष होती है और उसको समझाया जा सकता है," सामोलेन्को ने गहरी साँस ली, "परन्तु मेरी समझ में केवल एक बात नहीं आती। तुम बहुत बड़े बुद्धिमान व्यक्ति हो, इसलिए मेहरबानी करके इसे समझा दो। तुम जानते होगे कि अनेक छोटे छोटे ऐसे जानवर होते हैं जो चूहों से बड़े नहीं होते परन्तु तुम्हें बताऊँ कि देखने में बहुत सुन्दर मगर हद दर्जे के नालायक और शैतान होते हैं। मान लो कि ऐसा ही एक छोटा जानवर जङ्गल में घूमता फिर रहा है। वह एक चिड़िया को देखता है, उसे पकड़ लेता है और खा जाता है। वह आगे बढ़ता है और घास में अण्डों का एक घोंसला देखता है, वह उन्हें खाना नहीं चाहता—वह भूखा नहीं है परन्तु फिर भी वह एक अण्डा चखता है और दूसरों को पंजे से इधर-उधर घोंसले से बाहर बिखेर देता है। फिर उसे एक मेंढ़क मिलता है और उससे खेलने लगता है, जब उस मेंढक को खूब परेशान कर लेता है तो अपने को चाटता हुआ आगे चल देता और उसकी मुलाक़ात एक कीड़े होती है, वह अपने पंजे से उसे कुचल डालता है ····और इस तरह रास्ते में वह हरेक चीज को बिगाड़ता है और बर्बाद करता है।······वह दूसरे जानवरों के बिलों में घुस जाता है, चींटियों के घरों को तोड़ देता है, घोंघे के खोल को फाड़ डालता है, अगर उसकी मुलाकात किसी साँप या चूहे से हो जाती है तो उसे उनसे भी भिड़ जाना पड़ता है, और इसी तरह उसका पूरा दिन बीतता है। अब यह बताओ कि इस तरह के जानवर का क्या उपयोग है? उसका निर्माण क्यों किया गया था?"

"मैं नहीं जानता कि तुम किस जानवर की बातें कर रहे हो," वॉन कोरेन ने कहा, "सम्भव है कि न्योले की जाति का कोई जानवर हो। खैर, उसने चिड़िया को इसलिए पकड़ लिया कि वह चौकन्नी नहीं थी, उसने अण्डों वाले घोंसले को इसलिए तोड़ डाला क्योंकि वह चिड़िया चतुर नहीं थी, उसने घोंसला ठीक तरह से नहीं बनाया था और वह यह नहीं जानती थी कि इसे छिपाया कैसे जाय। सम्भव है कि मेंढक के रङ्ग में कोई खराबी हो या उसने उस जानवर को नहीं देख पाया हो। इसी तरह और सब बातें भी हो सकती हैं। तुम्हारा छोटा जानवर सिर्फ कमजोरों को, अनाड़ियों को और लापरवाहों को ही बर्बाद करता है—सचमुच उन लोगों को जिनमें ऐसी खराबियाँ होती हैं जिन्हें प्रकृति आगे आने वाली सन्तान को देना ठीक नहीं समझती। सिर्फ वे, जो चतुर हैं, ज्यादा ताकतवर हैं, ज्यादा चौकन्ने हैं और आगे बढ़े हुए हैं, जीवित रहते हैं और इस तरह तुम्हारा छोटा जानवर अनजानते हुए ही सृष्टि को पूर्णता की ओर आगे बढ़ाने में सहायक होता है।"

"हाँ, ठीक है, ठीक है ...... अच्छा भाई," सामोलेन्को ने लापरवाही से कहा, "मुझे सौ रूबल उधार दे दो।"

"अच्छा, स्तनधारी छोटे जानवरों में कुछ बड़े मजेदार होते हैं। किसान के लिये छछूँदर को ही ले लो। छछूँदर इसलिए लाभदायक समझी जाती है क्योंकि वह हानि पहुँचाने वाले कीड़ों को खा जाती है। एक कहावत है कि किसी जर्मन ने विलियम प्रथम के पास छछूँदर के चमड़े का बना हुआ एक कोट भेजा और सम्राट ने आज्ञा दी कि इतने काम के जानवर को इतनी बड़ी संख्या में हत्या करने के लिए उस जर्मन को सजा दी जाय। और फिर भी यह छछूँदर तुम्हारे उस छोटे जानवर से क्रूरता में जरा भी कम नहीं है और साथ ही बड़ी शैतान होती है क्योंकि वह चरागाहों को भयंकर हानि पहुँचाती है।"

वॉन कोरेन ने एक बक्स खोला, उसमें से सौ रूबल का एक नोट बाहर निकला। "छछूँदर का सीना बड़ा ताकतवर होता है, चमगीदड़ के सीने की तरह," वह बक्स को बन्द करते हुये कहता गया, उसकी हड्डियाँ और स्नायु अत्यधिक पुष्ट होते हैं, मुँह की गढ़न अत्यन्त शक्तिशाली होती है। अगर उसका शरीर हाथी जैसा विशाल होता तो वह सबका विध्वंस करने वाला अजेय पशु होता। यह मजेदार बात है कि जब जमीन के नीचे दो छछूंदरों की मुलाकात होती है, मानो उनमें समझौता हो गया हो, वे एक तरह छोटा सा चबूतरा बनाना शुरू कर देते हैं। उन्हें चबूतरे की जरूरत इसलिए होती है जिससे उनका युद्ध अच्छी तरह हो सके। जब वे उसे बना चुकते हैं तो उनमें भयंकर युद्ध छिड़ जाता है और तब तक होता रहता है जब तक कि कमजोर छछूँ-दर हार नहीं जाता। ये सौ रूबल लो," वॉन कोरेन ने आवाज को धीमी करते हुये कहा, "मगर इस शर्त पर कि तुम इसे लायवस्की को देने के लिए उधार नहीं ले रहे हो।"

"अगर ये लायवस्की के लिये हों तो," सामोलेन्को गुस्से से उबल कर चीखा, "इससे तुम्हें क्या मतलब?"

"मैं तुम्हें लायवस्की के लिए एक पैसा नहीं दे सकता। मैं जानता हूँ कि तुम लोगों को रुपया उधार देने के शौकीन हो। तुम इसे करीम को भी जो डाकू है, दे देते, अगर वह तुमसे माँगता तो। मगर, माफ करना, मैं इस मामले में तुम्हारी मदद नहीं कर सकता।"

"हाँ, मैं लायवस्की के लिए ही माँग रहा हूँ," सामोलेन्को ने खड़े होकर अपना दाहिना हाथ हिलाते हुए कहा, "हाँ! लायवस्की के लिए! और कोई भी पिशाच या शैतान यह अधिकार नहीं रखता कि मुझसे यह कहे कि मुझे अपना धन कैसे खर्च करना चाहिए। मुझे उधार देना तुम्हें अच्छा नहीं लगता? क्यों?"

पादरी हँसने लगा।

"उत्तेजित मत हो, समझ से काम लो," वॉन कोरेन ने कहा, "मेरी समझ में मिस्टर लायवस्की के ऊपर उपकारों की बौछार करना उतना ही बेवकूफी का काम है जितना कि सरकंडों को पानी देना या टिड्डियों को खाना खिलाना।"

"मेरे विचार से यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने पड़ौसियों की सहायता करें!" सामोलेन्को बोला।

"ऐसी दशा में उस भूखे तुर्क की मदद करो जो चहारदीवारी के नीचे पड़ा हुआ है! वह एक मज़दूर है और तुम्हारे लायवस्की से अधिक फायदेमन्द और अधिक आवश्यक है। उसे यह सौ रूबल का नोट दे दो। या सौ रूबल मेरी यात्रा के लिए चन्दा दे दो।"

"तुम मुझे रुपया दोगे या नहीं? मैं तुमसे यह पूछता हूँ।"

"मुझे साफ साफ बता दो: उसे रुपये किसलिए चाहिए?"

"यह रहस्य नहीं है, वह शनिवार को पीटर्सबर्ग जाना चाहता है।"

"तो यह बात है!" वॉन कोरेन भुनभुनाया। "आह!... हम समझ गए। और क्या वह भी उसके साथ जा रही है या मामला क्या है?"

"वह अभी यहीं ठहरेगी। वह पीटर्सबर्ग में अपना काम ठीक करेगा और उसके लिए रुपए भेज देगा और तब वह चली जायगी।"

"बहुत तेज है!" प्राणि-शास्त्र-विशारद ने कहा और धीमे से हंसा, "बहुत खूब, अच्छी स्कीम बनाई है।"

वह तेजी से सामोलेन्को के पास तक गया और उसके रूबरू खड़े हो कर उसकी आँखों में देखते हुए पूछा: "अब ईमानदारी से यह बताओ: क्या वह उससे ऊब उठा है? क्यों? बताओ क्या वह उससे ऊब उठा है? क्यों?"

"हाँ," सामोलेन्को ने पसीने पसीने होते हुए कहा।

"यह कितना घृणित है !" वॉन कोरेन ने कहा और उसके चेहरे से यह देखा जा सकता था कि उसने विरक्ति का अनुभव किया था।

"दो बातों में से एक, अलेक्ज़ेन्दर देविडिच : या तो तुम इस षडयन्त्र में उसके साथ हो, या, मेरे इस कहने को माफ करना, तुम बुद्धू हो। निश्चित रूप से तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि वह अत्यन्त बेशर्माई के साथ तुम्हें एक बच्चे की तरह खिला रहा है ! क्यों, यह दिन की रोशनी की तरह साफ है कि वह उससे पीछा छुड़ाना चाहता है और उसे यहाँ अकेला छोड़ देना चाहता है। वह एक बोझ की तरह यहाँ तुम्हारे ऊपर छोड़ दी जायगी। यह दिन की तरह स्पष्ट है कि तुम्हें अपने खर्चे से उसे पीटर्सबर्ग भेजना पड़ेगा। निश्चित रूप से तुम्हारे लायक मित्र ने अपने चकचौंध कर देने वाले गुणों से तुम्हें इतना अन्धा बना रखा है कि तुम्हें मामूली सी बात साफ नहीं दिखाई पड़ती।"

"यह सब कल्पना है," सामोलेन्को ने बैठते हुए कहा।

"कल्पना ? मगर वह उसे अपने साथ ले जाने के बजाय अकेला क्यों जा रहा है ? और उससे यह पूछना कि वह उसे पहले क्यों नहीं भेज देता। चालाक जानवर !"

अपने मित्र के विषय में अचानक शंकाओं और सन्देहों से भर कर सामोलेन्को शिथिल हो उठा और उसका स्वर नम्र पड़ गया।

"परन्तु यह असम्भव है," उसने कहा, उस रात की याद करते हुए जो लायवस्की ने उसके साथ बिताई थी, "वह बड़ा दुखी है।"

"उससे क्या हुआ ? चोर और झगड़ालू भी तो दुखी हैं।"

"यह भी मानते हुए कि तुम ठीक कह रहे हो......" सामोलेन्को हिचकिचाते हुए बोला। "हम लोगों को यह मान लेने दो...... फिर भी वह एक नौजवान है जो अपरिचित स्थान में है...... एक

विद्यार्थी। हम लोग भी विद्यार्थी रहे हैं और यहाँ हम लोगों के अलावा उसकी मदद करने वाला और कोई भी नहीं है।"

"घृणित कार्यों में उसकी मदद करना, इसलिए कि वह और तुम भिन्न भिन्न समय में युनिवर्सिटियों में पढ़ चुके हो और तुम लोगों में से किसी ने भी वहाँ कुछ भी नहीं किया, कैसी वाहियात बात है!"

"ठहरो: इस बारे में जरा ठंडे दिमाग से बातें करो। मेरा ख्याल है कि कुछ न कुछ इन्तजाम करना सम्भव हो सकता है......" सामोलेन्को ने अपनी उँगलियाँ चकटाते हुए सोचा। "देखो, मैं उसे रुपये दे दूँगा परन्तु उसे उसके ईमान की कसम दिला कर इस बात की प्रतिज्ञा करने के लिए कहूँगा कि वह हफ्ते भर में ही नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना के राह खर्च के लिए रुपये भेज देगा।"

"और वह अपने ईमान की कसम खाकर वायदा कर देगा—सचमुच वह आँसू बहाएगा और इस बात में स्वयं भी विश्वास कर लेगा, मगर उसके ईमान की कसम की कीमत क्या है? वह इसे पूरा नहीं करेगा और एक या दो साल बाद या जब 'नेवस्की प्रास्पेक्ट' पर तुम्हारी उससे मुलाकात होगी उस समय वह एक नई माशूका की बाँह में बाँह डाले घूम रहा होगा। वह इस आधार पर अपने को माफ कर देगा कि सभ्यता ने उसे नाकाम बना दिया है और यह कि वह 'रूदिन' के वर्ग का व्यक्ति है। भगवान के लिये उससे पीछा छुड़ा लो! कीचड़ से दूर रहो, दोनों हाथों से इसे उछालो मत!"

सामोलेन्को एक मिनट तक सोचता रहा फिर दृढ़तापूर्वक बोला:

"परन्तु, फिर भी मैं उसे रुपये दूँगा। जैसी तुम्हारी मर्जी। मैं केवल कल्पना के आधार पर ही किसी को रुपये देने से इन्कार नहीं कर सकता।"

"यह और भी अच्छा है। तुम चाहो तो उसका चुम्बन भी ले सकते हो।"

"तो मुझे सौ रूबल दे दो," सामोलेन्को ने सहमते हुए कहा।

"मैं नहीं दूँगा।"

कुछ देर खामोशी रही। सामोलेन्को पूरी तरह निराश हो चुका था। उसके चेहरे पर एक अपराधी की सी लज्जा और हताशा के भाव झलक उठे। और यह बड़ा अद्भुत सा लग रहा था कि बिल्ले और तमगे लगाए हुए इस विशालकाय व्यक्ति का चेहरा इतना दीन, मूर्खतापूर्ण और लज्जित दिखाई पड़ रहा था।

"यहाँ पादरी अपने क्षेत्र का दौरा करने के लिए गाड़ी के बजाय घोड़े पर बैठ कर जा रहा है," पादरी ने कलम नीचे रखते हुए कहा। उसे अपने घोड़े पर बैठा हुआ देखना बड़ा करुण दृश्य है। उसकी सादगी और परेशानी बाइबिल की उच्चता के अनुरूप है।"

"क्या वह अच्छा आदमी है?" वॉन कॉरेन ने पूछा जो इस बात से प्रसन्न था कि वार्तालाप का विषय बदल दिया गया था।

"बिल्कुल! अगर वह अच्छा आदमी न होता तो क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि वह एक बड़ा पादरी बन जाता?"

"बड़े पादरियों में भी अच्छे और योग्य व्यक्ति मिल जाते हैं," वॉन कॉरेन बोला, "एकमात्र कमी यही है कि उनमें से कुछ अपने को राजनीतिज्ञ समझने लगते हैं। कोई अपने को 'रूसीकरण' में व्यस्त कर देता है, दूसरा विज्ञान की आलोचना करने लगता है। यह उनका काम नहीं है। अच्छा तो यह है कि वे अपने काम को ही कुछ और अच्छी तरह निभाएँ।"

"एक अनाड़ी, पादरियों की आलोचना भी नहीं कर सकता।"

"ऐसा क्यों, पादरी ? पादरी भी ऐसा ही आदमी होता है जैसे कि हम और तुम हैं।"

"ऐसा ही होता है परन्तु फिर भी भिन्न होता है।" पादरी ने अपने को अपमानित अनुभव किया और कलम उठा ली। "अगर तुम वैसे ही होते तो तुम्हें भी ईश्वरीय संरक्षण प्राप्त होता और तुम स्वयं पादरी बन जाते परन्तु क्योंकि तुम पादरी नहीं हो इससे यह साबित होता है कि तुम वैसे नहीं हो।"

"मूर्खता की बात मत करो, पादरी," सामोलेन्को ने निराश होकर कहा। "मैं जो कुछ कह रहा हूँ उसे सुनो," उसने वॉन कोरेन की तरफ मुड़ते हुए कहा, "मुझे ये सौ रूबल मत दो। तुम जाड़ों से पहले तीन महीने तक मेरे यहाँ भोजन पाते रहोगे इसलिए मुझे तीन महीने का पेशगी रुपया दे दो।"

"मैं नहीं दूँगा।"

सामोलेन्को ने आँखें झपकाईं और लाल पड़ गया। उसने यन्त्रवत मकड़े वाली किताब अपनी तरफ खींची और उसे देखने लगा। फिर उठ खड़ा हुआ और अपना टोप उठा लिया।

वॉन कोरेन उसके प्रति दुख से भर उठा।

"ऐसे आदमियों के साथ रहना और इनसे व्यवहार रखना कैसा है," प्राणि-शास्त्र-विशारद ने कहा और क्रुद्ध होकर एक कागज में ठोकर मार कर कोने में फेंक दिया। तुम्हें यह समझ लेना चाहिए कि यह दया नहीं है, यह प्रेम नहीं है परन्तु कायरता, सुस्ती और जहर है! तुम जो कुछ भी अपनी बुद्धि द्वारा पाते हो उसे अपने व्यर्थ और अस्थिर हृदयों के कारण खो बैठते हो। जब मैं स्कूल में पढ़ता था उस समय मुझे मोतीझरा निकला। मेरी चाची ने सहानुभूति दिखाते हुये मुझे कुकुरमुत्ते का अचार खिला दिया और मैं उससे मरते मरते बचा। तुमको और मेरी चाची को भी यह समझ लेना चाहिए कि मनुष्य के

प्रति प्रेम हृदय, पेट या आँतों में नहीं रहता परन्तु यहाँ रहता है।'' वॉन कोरेन ने अपने माथे पर हाथ मारा।

"ये लो," वह बोला और सौ रूबल का एक नोट उसके हाथ में थमा दिया।

तुम्हें नाराज होने की ज़रूरत नहीं, कोल्या," सामोलेन्को ने नोट को मोड़ते हुए नम्रतापूर्वक कहा, "मैं तुम्हारी बात अच्छी तरह समझता हूँ, मगर······तुम्हें स्वयं को मेरी स्थिति में रख कर देखना चाहिए।"

"तुम एक बुड्ढी औरत हो, तुम उसी की तरह हो।''

पादरी खिलखिला कर हँस उठा।

"मेरी अन्तिम प्रार्थना सुनो, अलेक्जेन्दर देविदिच," वॉन कोरेन ने गर्म होते हुए कहा। "जब तुम उस बदमाश को रुपए दो तो उसके सामने यह शर्त रखना कि वह अपनी स्त्री को अपने साथ ले जाय या उसे पहले भेज दे और इसके बिना उसे रुपए मत देना। उसके साथ तकल्लुफ करने की जरूरत नहीं है। उसे यह बता देना, या अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मैं उसके दफ्तर जाऊँगा और उसे ठोकर मार कर नीचे फेंक दूँगा और तुमसे अपने सारे सम्बन्धों को समाप्त कर दूँगा। इसलिए अच्छा हो कि तुम इस बात को समझ लो।"

"अच्छा! उसके साथ जाना या उसे पहले भेज देना उसके लिए अधिक सुविधाजनक होगा," सामोलेन्को ने कहा। "वह सचमुच बड़ा खुश होगा। अच्छा, नमस्कार।"

उसने स्नेहपूर्वक नमस्कार की और बाहर निकल गया परन्तु दरवाजा बन्द करने से पहले उसने वॉन कोरेन की तरफ मुड़ते हुए, भयानक चेहरा बना कर कहा:

"ये जर्मन लोग हैं जिन्होंने तुम्हें बर्बाद कर रखा है, भाई! हाँ! जर्मनों ने।"

———

१२

दूसरे दिन, बृहस्पतिवार को, मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा कोतस्या का जन्मदिन मना रही थी। सब लोगों को दोपहर को आने, मटर खाने और शाम को चाकलेट पीने के लिए निमन्त्रित किया गया था। जब शाम को लायवस्की और नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना आए, प्राणि-शास्त्र-विशारद ने, जो बैठक में बैठा हुआ चाकलेट पी रहा था, सामोलेन्को से पूछा :

"तुमने उससे बातें कर लीं ?"

"अभी नहीं।"

"अब ध्यान रखना, तकल्लुफ मत करना। मैं इन लोगों की बदतमीजी को बर्दाश्त नहीं कर सकता ! क्योंकि, उन लोगों को इस बात का पूरा पता है कि यह परिवार उन लोगों के एक साथ रहने के बारे में कैसी राय रखता है और फिर भी वे लोग यहाँ आने से बाज नहीं आते।"

"अगर कोई व्यक्ति हर तरह के अविवेकपूर्ण विचार की तरफ ध्यान देने लगे तो," सामोलेन्को बोला, "कोई कहीं भी नहीं जा सकता।"

"क्या तुम यह कहना चाहते हो कि जनता द्वारा अनैतिक प्रेम और चरित्रहीनता के प्रति घृणा प्रदर्शित करना अविवेकपूर्ण विचार है ?"

"निस्सन्देह यह है ! यह अविवेकपूर्ण विचार और घृणा है। जब सिपाही लोग किसी चरित्रहीन लड़की को देखते हैं तो हँसते और सीटी बजाते हैं मगर उनसे जरा यह तो पूछो कि वे खुद क्या हैं ?"

"वे बिना किसी वजह के सीटी नहीं बजाते। यह बात कि

लड़कियां नाजायज बच्चों को गला घोंटकर मार डालती हैं और उसके लिए सजा भोगती हैं, और यह कि अन्ना केरेनिना + ने अपने को गाड़ी के नीचे डालकर आत्महत्या की थी, और यह कि गाँवों के दरवाजों को कोलतार से काला कर दिया जाता है और यह कि तुम और मैं, बिना यह जाने हुए कि क्यों, कात्या × की पवित्रता से प्रभावित हो उठते हैं, और यह कि हम लोगों में से हरेक पवित्र प्रेम के लिए एक अस्पष्ट सी भावना का अनुभव करता है यद्यपि वह जानता है कि ऐसा प्रेम नहीं होता—क्या यह सब अविवेकपूर्ण विचार है ? यही एक च ज है, भाई, जो प्रकृति की प्रमुख वस्तुओं में से अभी तक अन्‌ुएण चली आई है और अगर यह वह दुर्बोध शक्ति नहीं होती जो नर-नारी के सम्बन्धों को सुचारु रीति से चलाती आ रही है तो ऐसे अनेक लाय-वस्की मनमानी करते रहते और मानव जाति दो वर्ष में ही पतित हो जाती।"

लायवस्की बैठक में आया, हरेक को नमस्कार किया और वॉन कोरेन के साथ हाथ मिलाते हुए दीनता से मुस्कराया। उसने अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा की और सामोलेन्को से कहा :

"माफ करना, अलेक्जेन्दर देविदिच, मुझे तुमसे दो बातें कहनी हैं।"

सामोलेन्को उठ खड़ा हुआ, लायवस्की की कमर में हाथ डाले और दोनों निकोदिम अलेक्जेन्द्रिच के अध्ययन-कक्ष में चले गए।

"कल शुक्रवार है," लायवस्की ने अपने नाखून कुतरते हुए कहा, "जिसकी तुमसे प्रतिज्ञा की थी वह मिल गया ?"

"मुझे सिर्फ दो सौ मिले हैं। बाकी के आज या कल तक मिल जायंगे। परेशान मत हो।"

+ तालस्ताय के इसी नाम के उपन्यास की नायिका।

× तुर्गनेव के 'पिता और पुत्र' नामक उपन्यास की नायिका।

"ईश्वर को धन्यवाद है······" लायवस्की ने निश्वास खींची और उसके हाथ खुशी से काँप उठे। "तुमने मुझे बचा लिया, अलेक्जेन्द्र देविदिच, और मैं ईश्वर की कसम खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं पहुँचते ही रुपया भेज दूँगा। और मैं अपना पुराना कर्ज भी अदा कर दूँगा।"

"देखो, वान्या······" सामोलेन्को ने लाल पड़ते हुए और उसके बटन पकड़ते हुए कहा, "तुम, मुझे तुम्हारे व्यक्तिगत मामलों में दखल देने के लिए माफ करोगे, परन्तु ···· तुम अपने साथ नाद्-येज्दा फ्योदोरोव्ना को क्यों नहीं ले जाते?"

"तुम बड़े अजीब आदमी हो। यह कैसे मुमकिन हो सकता है? हम में से एक को जरूर ठहरना चाहिए वर्ना हमारे साहूकार सिर पर उठा लेंगे। तुम जानते हो कि मुझे सात सौ या उससे भी ज्यादा रूबल दूकानदारों को देने हैं। जरा इन्तजार करो। मैं सबका पैसा भेज दूँगा। मैं उनका मुँह बन्द कर दूँगा और तब वह जा सकती है।"

"यह बात है······मगर तुम उसे पहले क्यों नहीं भेज देते?"

"हे भगवान, जैसे कि यह सम्भव है!" लायवस्की भयभीत हो उठा। "क्यों, वह एक औरत है, वह अकेली वहाँ क्या करेगी? वह इस बारे में क्या जानती है? यह सिर्फ समय का नुकसान और धन की बर्बादी होगी।"

"यह ठीक बात है······" सामोलेन्को ने सोचा परन्तु वॉन कोरेन के साथ हुई अपनी बातचीत को याद करते हुए उसने नीचे की तरफ देखा और उदासीनतापूर्वक बोला: "मैं तुमसे सहमत नहीं हो सकता। या तो उसके साथ जाओ या उसे पहले भेज दो। नहीं तो ··············वर्ना मैं तुम्हें रुपए नहीं दूँगा, यह मेरे आखिरी शब्द हैं·········"

वह लड़खड़ा कर पीछे हटा, पीछे हटकर दरवाजे के सहारे खिसकता हुआ, व्याकुल हो कर बैठक में चला गया।

"शुक्रवार"......"शुक्रवार," बैठक में वापस जाते हुए लायवस्की ने सोचा। "शुक्रवार"...... "

उसे एक कप चाकलेट का दिया गया। उसने खौलती हुई चाकलेट से अपने होंठ और जीभ जला ली और सोचा: "शुक्रवार"..."

किसी कारणवश वह 'शुक्रवार' शब्द को अपने दिमाग से बाहर नहीं निकाल सका। वह 'शुक्रवार' के अलावा और कुछ भी सोचने में असमर्थ था और एकमात्र बात जो उसे स्पष्ट थी—उसके दिमाग में नहीं परन्तु उसके हृदय के किसी कोने में—वह थी कि वह शनिवार को जा नहीं सकेगा। उसके सामने निकोदिम अलेक्जेन्द्रिच खड़ा हुआ था—अत्यन्त साफ सुथरा, कनपटियों तक बाल काढ़े हुए, यह कहता हुआ:

"कृपया कुछ खाने को लीजिए..."

मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा ने मेहमानों को कात्या की स्कूल की रिपोर्ट दिखाई और भुनभुनाते हुई बोली:

"आजकल स्कूल की पढ़ाई बड़ी मुश्किल हो गई है! इतनी अधिक उम्मीद की जाती है......"

"मम्मी!" कात्या गुर्राई, यह न जानते हुए कि लोगों की प्रशंसा से उत्पन्न व्यग्रता को कैसे छिपाए।

लायवस्की ने भी रिपोर्ट को देखा और उसकी तारीफ की। धर्मशास्त्र, रूसी भाषा, चरित्र पाँच और चार, उसके नेत्रों के आगे नाचने लगे और यह सब 'शुक्रवार' की मडराती हुई भावना के साथ रुककर, निकोदिम अलेक्जेन्द्रिच के सावधानीपूर्वक काढ़े हुए बालों और कात्या के लाल कपोलों के साथ मिल कर, उसके हृदय पर इतनी गहन उदासीनता का प्रभाव डालने लगे कि वह निराशा

से व्याकुल होकर लगभग चीख उठा और स्वयं पूछने लगा : "क्या यह सम्भव है, क्या यह सम्भव है कि मैं जा नहीं सकूँगा ?"

उन्होंने ताश खेलने वाली दो मेजें बराबर बराबर लगा दीं और हाकिए का खेल खेलने बैठ गए। लायवस्की भी बैठ गया।

"शुक्रवार ... शुक्रवार" जैसे ही वह मुस्कराया और अपनी जेब से पेंसिल निकाली, बराबर सोचता रहा। "शुक्रवार..."

वह अपनी स्थिति के बारे में सोचना चाहता था और सोचने में डर रहा था। उसके लिए यह स्वीकार करना भयंकर था कि डाक्टर ने उसकी धोखेबाजी को भाँप लिया है जिसे वह इतने दिनों से और इतनी सावधानी से स्वयं अपने से भी छिपाए रहा था। हर बार जब उसने अपने भविष्य के बारे में सोचा अपने विचारों को पूरी छूट नहीं दी। वह ट्रेन में बैठेगा और चल देगा और इस तरकीब से उसके जीवन की समस्या सुलझ जायगी और उसने अपनी विचारधारा को इससे आगे नहीं बढ़ने दिया। दूर, खेतों में दिखाई पड़ने वाली धुँधली रोशनी की तरह, यह विचार कभी कभी उसके दिमाग में झलक उठता कि पीटर्सबर्ग की एक गली में, उस एकाकी भविष्य में, नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना से छुटकारा पाने के लिए और अपना कर्ज चुकाने के लिए एक छोटा सा झूठ गढ़ना पड़ेगा। वह सिर्फ एक बार ही झूठ बोलेगा और तब पूर्ण रूपेण एक नया जीवन प्रारम्भ हो जायगा। और यह ठीक था : एक छोटे से झूठ के बदले उसे इतने अधिक सत्य की प्राप्ति हो जायगी।

अब जब कि डाक्टर ने निर्दयतापूर्वक उसकी धोखेबाजी की तरफ संकेत करते हुए रुपया देने से साफ साफ इन्कार कर दिया तो वह सोचने लगा कि उसे धोखेबाजी की जरूरत उस सुदूर एकाकी भविष्य में ही न पड़कर आज, कल और महीने भर के भीतर और शायद अपनी जिन्दगी के आखिरी क्षणों तक पड़ती रहेगी। दरअसल, यहाँ

से भागने के लिए उसे नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना से, अपने साहूकारों से, अपने महकमे के बड़े अफसरों से और फिर पीटर्सबर्ग पहुँच कर रुपया पाने के लिए अपनी माँ से यह कह कर कि उसने नाद्येज़्दा फ्योदो-रोव्ना से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया है, झूठ बोलना पड़ेगा; और उसकी माँ उसे पाँच सौ रूबल से ज्यादा नहीं देगी इसलिए वह डाक्टर को तो अभी धोखा दे चुका है क्योंकि वह थोड़े ही समय में उसका पूरा कर्ज अदा नहीं कर सकेगा। बाद में जब नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना पीटर्सबर्ग आ जायगी उसे निरन्तर धोखेबाजी का सहारा लेना पड़ेगा, छोटी और बड़ी झूठी बातें गढ़नी पड़ेंगी, उससे अपना पीछा छुड़ाने के लिए। और फिर आँसू बहाना, उदासीनता, घृणित अस्तित्व, पश्चाताप प्रारम्भ हो जायेंगे और इस तरह नया जीवन स्वप्न बन जायगा। धोखेबाजी के अलावा और कुछ भी नहीं रहेगा। लायवस्की की कल्पना के सम्मुख झूठों का एक पहाड़ उठ खड़ा हुआ। एक ही छलाँग में इसे पार कर जाना और खंड खंड करके पार न करने के लिए उसे कठोर, समझौता-हीन क़दम उठाना पड़ेगा : मिसाल के लिए जैसे बिना एक शब्द कहे उठ कर, अपना टोप लगा कर तुरन्त बिना पैसे लिए और बिना सफाई दिए यात्रा पर चल देना। परन्तु लायवस्की ने अनुभव किया कि यह उसके वश की बात नहीं थी।

"शुक्रवार, शुक्रवार ....." उसने सोचा, "शुक्रवार.. "

उन्होंने छोटी छोटी चिटें लिखीं, उन्हें दुहरा मोड़ा और निको-दिम अलेक्जेन्द्रिच के पुराने लम्बे टोप में रख दिया। जब उसमें चिटों का काफी ऊँचा ढेर हो गया तो कोस्त्या, जो डाकिए का काम कर रहा था, मेज के चारों तरफ घूमा और उन्हें बाँट दिया। पादरी, कात्या और कोस्त्या, जिन्हें मजेदार चिटें मिली थीं और जिन्होंने जितनी भी मजेदार चिटें लिख सकते थे, लिखी थीं, बड़े खुश हुए।

'हमको थोड़ी सी बातें करनी चाहिए,' नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना

ने एक छोटी सो चिट में पढ़ा। उसने मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा की तरफ देखा जिसने पलट कर उसकी तरफ बादामी मुस्कान के साथ देखा और सिर हिलाया।

"क्या बातें करना ?" नाद्‌येज़्दा फ्योदोरोव्ना ने सोचा। "अगर कोई पूरी बात नहीं कर सकता तो बातें करना बेकार है।"

शाम को बाहर जाने से पहले उसने लायवस्की की पोशाक को ठीक करके रख दिया था और इस मामूली से काम ने उसके हृदय में कोमलता और उदासी उत्पन्न कर दी थी। लायवस्की के चेहरे पर छाई हुई चिन्ता, उसकी सूनी निगाहें, उसका पोलापन और उसमें उत्पन्न हुआ वह दुर्बोध परिवर्तन जो अभी कुछ दिनों से हुआ था, और यह तथ्य कि नाद्‌येज़्दा फ्योदोरोव्ना उससे एक भयंकर विद्रोहात्मक रहस्य छिपाए हुए थी और यह बात कि जब वह उसकी पोशाक ठीक कर रही थी तो उसके हाथ काँपने लगे थे—ये सब बातें उसे यह बताती प्रतीत होती थीं कि वे लोग ज्यादा दिनों से एक दूसरे से अलग नहीं हुए हैं। उसने लायवस्की की तरफ इस तरह भय और पश्चाताप से देखा मानो वह एक पवित्र मूर्ति हो और सोचने लगी: "क्षमा करो, क्षमा करो।"

उसके दूसरी तरफ आत्चमियानोव बैठा हुआ था। उसने अपनी काली, प्रेमसिक्त आँखों को उसकी तरफ से क्षण भर को भी नहीं हटाया। वह वासना से आन्दोलित हो उठी। उसे स्वयं अपने आप से घृणा हो रही थी और इस बात का भय था कि उसका दुख और उदासी भी उसे आज नहीं तो कल अपवित्र इच्छाओं के सन्मुख आत्म-समर्पण करने से नहीं रोक सकेगी—और यह कि एक शराबी की तरह उसमें अपने को रोकने की शक्ति नहीं रह जायगी।

उसने वहाँ से चले जाने का निश्चय कर लिया जिससे वह इस जिन्दगी को और आगे न बढ़ा सके जो उसके लिए शर्मनाक और लायवस्की के लिए परेशान कर देने वाली थी। वह आँखों में आँसू भरकर उससे प्रार्थना करेगी कि वह उसे चली जाने दे; और अगर वह विरोध करेगा तो वह चुपचाप चली जायगी। वह उसे यह नहीं बताएगी कि क्या हुआ था; उसके हृदय में अपनी पवित्र स्मृति ही छोड़ जायगी।

"मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ," उसने पढ़ा। यह आत्शामियानोव ने लिखा था।

वह किसी सुदूर एकान्त स्थान में जाकर रहेगी, काम करेगी और बिना अपना नाम जाहिर किए लायवस्की के लिए धन, कढ़ी हुई कमीजें और तम्बाकू भेजेगी और जब बुड्ढी हो जायगी तभी उसके पास लौटेगी, या जब वह भयंकर रूप से बीमार पड़ेगा और उसे एक नर्स की ज़रूरत होगी तब लौटेगी। जब बुढ़ापे में लायवस्की को पता चलेगा कि उसने उसे क्यों छोड़ दिया था और उसकी पत्नी बनने से क्यों इन्कार कर दिया था तो वह उसके त्याग की प्रशंसा करेगा और उसे क्षमा कर देगा।

"तुम्हारी नाक लम्बी है।" यह पादरी या कोस्त्या ने लिखा होगा।

नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने कल्पना की कि लायवस्की से बिछुड़ते समय वह किस तरह प्रेमपूर्वक उसका आलिंगन करेगी, उसके हाथों का चुम्बन लेगी और उससे जीवन भर प्रेम करते रहने की प्रतिज्ञा करेगी, और फिर अपरिचितों के बीच अज्ञातवास करती हुई वह हर रोज सोचा करेगी कि कहीं उसका एक मित्र है, कोई जिसे वह प्यार करती थी—एक महान, उच्च, पवित्र मनुष्य जो उसकी पवित्र स्मृति को अपने हृदय में संजोए हुए था।

"अगर आज तुमने मुझसे मुलाकात नहीं की तो मैं कार्यवाही करूँगा, मैं तुमसे अपने ईमान की कसम खाकर इस बात का विश्वास दिलाता हूँ। तुम भले आदमियों के साथ इस तरह का व्यवहार नहीं कर सकतीं, तुम्हें यह बात समझ लेनी चाहिए।" यह किरिलिन ने लिखा था।

—:०:—

१३

लायवस्की को दो चिटें मिलीं। उसने एक खोली और पढ़ा : "भागो मत, मेरे प्यारे।"

"यह कौन लिख सकता है ?" उसने सोचा । "निस्सन्देह सामोलेन्को नहीं है। और पादरी ने भी यों नहीं लिखा क्योंकि उसे यह नहीं मालूम कि मैं चला जाना चाहता हूँ। शायद, वॉन कोरेन हो सकता है ?"

प्राणि–शास्त्र–विशारद मेज पर झुक गया और एक पिरामिड बनाने लगा। लायवस्की को लगा कि उसकी आँखें मुस्करा रही थीं।

"बहुत सम्भव हो सकता है कि सामोलेन्को''''बातें कर रहा होगा,'' लायवस्की ने सोचा।

दूसरी चिट में, उसी बनावटी आड़ी तिरछी लिखावटों में जिसके अक्षरों की पूंछ लम्बी निकली हुई थी, लिखा हुआ था : "कोई शनिवार को बाहर जाना चाहता है।"

"बेवकूफी का मजाक,'' लायवस्की ने सोचा। "शुक्रवार, शुक्रवार ..."

उसके गले में कुछ अटक गया। उसने अपना कालर छुआ और खाँसा और खाँसी की जगह उसके गले में से एक हँसी फूट पड़ी।

"हा–हा–हा !'' वह हँसा, "हा–हा–हा ! मैं किस बात पर हँस रहा हूँ ? हा-हा–हा !''उसने अपने को रोकने की बहुत कोशिश की, हाथ से मुँह ढक लिया परन्तु हंसी से उसका सीना, गला घुटने लगा और उसका हाथ मुंह को ढंकने में असमर्थ रहा।

"यह कैसी बेवकूफी है !'' हंसी से लोट पोट होते हुए उसने सोचा "क्या मैं पागल हो गया हूँ !''

हंसी और तेज होती गई और एक छोटे कुत्ते के भौंकने की सी आवाज बदल गई। लायवस्की ने मेज से उठने की कोशिश की परन्तु उसकी टाँगों ने उसका साथ नहीं दिया और उसका दाहिना हाथ, अद्भुत रूप से उसकी इच्छा के विरुद्ध, एंठता हुआ कागज के टुकड़ों को पकड़ता और मरोड़ता हुआ नाचने लगा। उसने आश्चर्यपूर्ण निगाहें, सामोलेन्को का गम्भीर भयभीत चेहरा और वॉन कोरेन की उपेक्षित कठोरता और घृणा से भरी हुई निगाहें देखीं और अनुभव किया कि उसे हिस्टीरिया का दौरा आ गया था।

"कितना घृणित, कितना लज्जाजनक!" अपने चेहरे पर गर्म आँसुओं को अनुभव करते हुए उसने सोचा, "..........ओह, ओह, कितना अपमानजनक! मेरे साथ ऐसा कभी नहीं हुआ......"

उन लोगों ने उसे कमर से पकड़ लिया और पीछे से उसके सिर को सहारा देते हुए बाहर ले गए; एक गिलास उसकी आँखों के सामने चमका और उसके दांतों से टकरा गया। उसके सीने पर पानी फैल गया था। वह एक छोटे से कमरे में था जिसके बीच में दो बिस्तर बराबर–बराबर बिछे हुए थे जिन पर दो बर्फ जैसी सफेद रजाइयाँ पड़ी हुईं थीं। वह एक बिस्तर पर गिर पड़ा और सिसकने लगा।

"यह कुछ नहीं, यह कुछ नहीं," सामोलेन्को बराबर कहता रहा, "ऐसा हो जाता है ... ऐसा हो जाता है।"

भय से स्तम्भित, बुरी तरह कांपती और किसी भयानक वस्तु से भयभीत होती हुई नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना बिस्तर के बगल में खड़ी रही और कहती रही :

"यह क्या हुआ? क्या हुआ? भगवान के लिए मुझे बतादो।"

"क्या किरलिन ने उसे कुछ लिखा है?" उसने सोचा।

"कोई बात नहीं," हँसते और चीखते हुए लायवस्की बोला; "चली आओ, प्रिये !"

उसके चेहरे पर न तो घृणा के भाव थे और न पराजय के। इस लिए वह कुछ भी नहीं जानता था; नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना को कुछ तसल्ली हुई और वह बैठक में चली गई ।

"अपने को परेशान मत करो, मेरी प्यारी," उसके पास बैठकर उसका हाथ पकड़ती हुई मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा बोली "यह समाप्त हो जायगा। मनुष्य हम जैसी गरीब गुनाहगारों की ही तरह कमजोर होते हैं। तुम दोनों एक सङ्कट में से गुजर रहे हो......कोई भी इस बात को अच्छी तरह समझ सकता है। अच्छा, मेरी प्यारी, मैं एक जवाब का इन्तजार कर रही हूँ। आओ कुछ बातें करें।"

"नहीं, हम लोग बातें नहीं करेंगे," लायवस्की की सिसकियों की तरफ ध्यान लगाए नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना बोली। "मैं कमजोरी महसूस कर रही हूँ..... मुझे घर जाने की इज़ाजत दीजिए।"

"तुम क्या कह रही हो, तुम्हारा मतलब क्या है, मेरी प्यारी ?" मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा भयभीत होकर चीख उठी। "तुम समझती हो कि मैं तुम्हें बिना खाना खिलाए चली जाने दूँगी ? हम लोग कुछ खाना खाएँगे और तब तुम मेरा आशीर्वाद लेकर जा सकोगी।"

"मैं दुखी हूँ......" नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना बुदबुदाई और उसने नीचे गिरने से बचने के लिए कुर्सी के दोनों हत्थे पकड़ लिए।

"उसे हिस्टीरिया का दौरा हो गया है," वॉन कोरेन ने प्रसन्न मुद्रा में बैठक में आते हुए कहा; परन्तु वहाँ नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना को देखकर भौंचक सा रह गया और पीछे लौट गया।

जब दौरा समाप्त हो गया लायवस्की उस विचित्र शैया पर उठ कर बैठ गया और सोचने लगा :

"अपमान जनक ! मैं एक गन्दी लड़की की तरह चीख रहा था। मेरा व्यवहार बड़ा भद्दा और घृणित हो उठा होगा। मैं पिछले जीने से चला जाऊँगा............परन्तु इससे तो यह साबित होगा कि मैं इस दौरे को बहुत ज्यादा गम्भीर समझ रहा हूँ। मुझे इसे सिर्फ एक मज़ाक के रूप में लेना चाहिए.........।"

उसने शीशे में अपनी शक्ल देखी, वहीं देर तक बैठा रहा और बैठक में वापस चला आया।

"मैं आ गया!" उसने मुस्कराते हुए कहा; वह बहुत बुरी तरह लज्जित हो रहा था, और उसने अनुभव किया कि दूसरे उसकी उपस्थिति में लज्जा का अनुभव कर रहे थे। "सोचिए तो जरा ऐसी घटना हो रही हो," उसने नीचे बैठते हुए कहा। "मैं यहीं बैठा था और अचानक, आप जानते हैं, मैंने अपनी पसलियों में भयङ्कर पीड़ा का अनुभव किया...... असहनीय, मैं इसे सहन नहीं कर सका और......और इसकी वजह से यह मूर्खतापूर्ण नाटक हो गया। यह उत्तेजना का युग है। इससे बचाव नहीं हो सकता।"

भोजन के समय उसने थोड़ी सी शराब पी और रह रह कर अकस्मात रूप से कराहते हुए वह अपनी पसली को मल उठता था यह दिखाने के लिए कि उसके अभी तक दर्द हो रहा था। और नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना के अतिरिक्त और किसी ने भी उसका विश्वास नहीं किया और उसने इस बात को देख लिया।

नौ बजने के बाद वे लोग समुद्र तट पर घूमने चल दिए। नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना इस बात से डरती हुई कि किरिलिन उससे बातें करेगा, पूरे समय तक प्राणपण से मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा और बच्चों के साथ रहने की कोशिश करती रही। वह भय और दुख के कारण कमजोरी महसूस कर रही थी और उसने अनुभव किया कि उसे बुखार हो आया है। वह पूरी तरह थक गई थी। उसके पैर मुश्किल से

उठ रहे थे, परन्तु वह घर नहीं गई क्योंकि उसे इस बात का पूर्ण विश्वास था कि किरिलिन या आत्समियानोव या दोनों ही एक साथ फौरन उसका पीछा करेंगे। किरिलिन निकोदिम अलेक्जेन्द्रिच के साथ साथ उसके पीछे चल रहा था और धीमे स्वर में गुन-गुना रहा था :

"मैं व्य-क्तियों को अपने सा-थ खे-ल-ने की आज्ञा नहीं दे-ता। मैं आज्ञा न-हीं-देता।"

समुद्र तट से वे लोग पेवीलियन में गए और समुद्र तट पर टहलते रहे और बहुत देर तक फास्फोरस के कारण चमकते हुए पानी की तरफ देखते रहे। वॉन कोरेन ने उन्हें यह बताना प्रारम्भ कर दिया कि यह चमकता हुआ क्यों दिखाई देता है।

१४

"अब मेरा 'विन्ट' खेलने का समय हो गया ···वे लोग मेरा इन्तजार कर रहे होंगे," लायवस्की बोला, "नमस्कार मित्रो।"

"मैं तुम्हारे साथ चलती हूँ, एक मिनट ठहरो," नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने कहा और उसकी बाँह पकड़ ली।

उन्होंने उपस्थित लोगों से विदा माँगी और चल दिए। किरिलिन ने भी जाने की आज्ञा माँगी और यह कहते हुए कि वह भी उसी तरफ जा रहा है, उनके साथ साथ चल दिया।

"अब क्या होगा, क्या होगा," नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने सोचा— "होना होगा सो होगा······"

और उसे ऐसा लगा कि उसके दिमाग में छाई हुई सारी कटु स्मृतियाँ साकार हो उठी हैं और उसके साथ साथ अन्धकार में चल रही हैं, गहरी साँसें लेती हुई जब कि वह एक मक्खी की तरह जो [illegible] में गिर पड़ी है, सड़क पर अत्यन्त कष्ट के साथ रेंग रही है और लायवस्की की बगल और बाँह पर काली स्याही पोतती जा रही है।

उसने सोचा कि अगर किरिलिन कोई भयानक बात करे तो दोष किरिलिन का न होकर स्वयं उसका होगा। कोई समय था जब कोई भी आदमी उससे उस तरह बातें नहीं कर सकता था जैसी कि किरिलिन ने की थीं और उसने अपनी सुरक्षा के एक धागे को तोड़कर उसे पूर्णरूप से नष्ट कर दिया था—इसके लिए किसको दोष दिया जा सकता था? अपनी वासना से उत्तेजित होकर वह एक पूर्ण अपरिचित व्यक्ति को देखकर मुस्करा उठी थी, सम्भवतः इसलिए क्योंकि वह लम्बा और सुन्दर था। दो मुलाकातों के बाद वह उससे ऊब उठी थी और उसे एक तरफ फेंक दिया था। और उसने सोचा कि क्या उस

बात ने उसे इस बात का अधिकार नहीं दे दिया था कि वह उसके साथ मनचाहा व्यवहार करे।

"यहाँ मैं तुमसे विदा लूँगा, प्रिये," लायवस्की ने कहा, "इलिया मिहालिच तुम्हें घर तक पहुँचा देंगे।"

उसने किरिलिन की तरफ सिर हिलाया और जल्दी से सड़क को पार कर गली में शेश्कोवस्की के मकान की तरफ चल दिया जहाँ खिड़कियों में रोशनी चमक रही थी। कुछ देर बाद उन्होंने दरवाजा खुलने की आवाज सुनी और वह भीतर चला गया।

"आज्ञा दीजिये कि मैं आपके साथ अपनी सफाई कर लूँ," किरिलिन ने कहा। "मैं बच्चा नहीं हूँ और न ऐरा गैरा नत्थू खैरा ही हूँ......मैं गम्भीरता से ध्यान देने के लिए कह रहा हूँ।"

नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना का दिल बुरी तरह धड़क उठा। उसने कोई जवाब नहीं दिया।

"मेरे प्रति आपके व्यवहार में इस आकस्मिक परिवर्तन को पहले तो मैंने चोंचलेबाजी समझा।" किरिलिन कहता रहा, "अब मैं देख रहा हूँ कि आपको भद्रोचित व्यवहार करना भी नहीं आता। आप मुझसे केवल खेलना चाहती थीं जैसे कि आप उस नीच आरमेनियन लड़के के साथ खेल रही हैं, परन्तु मैं एक भला आदमी हूँ और इस बात पर जोर देता हूँ कि मेरे साथ आदमियों का सा व्यवहार किया जाय। और इसलिए मैं आपकी सेवा में हाजिर हूँ..."

"मैं दुखी हूँ," नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने रोते हुये कहा और अपने आँसुओं को छिपाने के लिए मुड़कर खड़ी हो गई।

"मैं भी दुखी हूँ," किरिलिन ने कहा, "मगर इससे क्या मतलब ?"

किरिलिन कुछ देर तक खामोश रहा फिर साफ साफ और जोर देते हुए बोला :

"मैं फिर कहता हूँ, मैडम, कि अगर आज शाम को तुम मुझसे नहीं मिलोगी तो मैं आज ही चारों तरफ ढिंढोरा पीट दूँगा।"

"आज शाम को मुझे माफ कर दो," नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना बोली और वह खुद अपनी ही आवाज को नहीं पहचान सकी; आवाज इतनी कमजोर और दयनीय थी।

"मुझे आपको एक सबक सिखाना ही चाहिए ·· मेरे स्वर की कठोरता के लिए क्षमा कीजिए, परन्तु आपको सबक सिखाना जरूरी है। हाँ, मुझे यह कहते हुए अफसोस हो रहा है कि आपको सबक सिखाना ही चाहिए। मैं दो मुलाकातों पर जोर देता हूँ—आज और कल। कल के बाद आप पूरी तरह से स्वतन्त्र हो जायंगी और कहीं भी चाहे जिसके जा साथ सकेंगी। आज और कल।"

नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना अपने फाटक तक गई और ठिठक कर खड़ी होगई।

"मुझे जाने दो," वह बुदबुदाई, सिर से पैर तक काँपती और अपने सामने अन्धकार में सिर्फ किरिलिन की सफेद पोशाक देखती हुई। "तुम ठीक कह रहे हो, मैं एक खतरनाक औरत हूँ ·····मैं ही दोषी हूँ परन्तु मुझे जाने दो · मैं तुमसे भीख माँगती हूँ।" उसने उसका ठंडा हाथ छुआ और सिहर उठी। "मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ···"

"अफसोस!" किरिलिन ने गहरी साँस खींची, "अफसोस! तुम्हें छोड़ देना मेरी स्कीम में नहीं है। मैं तुम्हें सिर्फ एक सबक देना और महसूस करा देना चाहता हूँ। और इससे अधिक और क्या कहूँ, मैडम, मैं औरतों का बहुत कम यकीन करता हूँ।"

"मैं दुखी हूँ।"

नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने समुद्र के निरन्तर होने वाले एक से स्वर को सुना, तारक-खचित प्रकाश की ओर देखा और जल्दी से इस सबको समाप्त कर देने के लिए, और जीवन के इस दुखदाई अनुभव,

इसके समुद्र, तारों, मनुष्यों और दुलार से दूर भाग जाने के लिये व्याकुल हो उठी।

"सिर्फ मेरे घर में मत करो," उसने शान्त स्वर में कहा, "मुझे कहीं दूसरी जगह ले चलो।"

"मुरीदोव के यहाँ चलो। यह ज्यादा अच्छा रहेगा।"

"वह कहाँ है ?"

"पुरानी दीवाल के पास।"

वह तेजी से सड़क पर चल दी और फिर बगल की गली में मुड़ी जो पहाड़ों की तरफ जाती थी। अँधेरा हो गया था। सड़क पर जगह जगह रोशनी की पीली धारियाँ पड़ रही थीं जो खिड़कियों में से होकर आ रही थी और उसे ऐसा लगा कि एक मक्खी की तरह वह स्याही की दावात में गिरती जा रही है और फिर रेंगती हुई रोशनी में आ जाती है। एक स्थान पर वह ठोकर खाकर लड़खड़ाया, लगभग गिर ही पड़ा था और जोर से हँसने लगा।

"वह शराब पिए हुए है," नादयेज्दा फ्योदोरोव्ना ने सोचा। "कोई बात नहीं···कोई बात नहीं जो होना है हो।"

आशमियानोव ने भी जल्दी से जाने की आज्ञा मांगी और नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना से यह पूछने के लिए उसके पीछे चल दिया कि वह नाव पर सैर करने चलेगी या नहीं। वह उसके घर गया और चहारदीवारी पर से उझक कर देखा : खिड़कियाँ चौपट खुली हुई थीं, उनमें रोशनी नहीं थी।

"नाद्येज़्दा फ्योदोरोव्ना !" उसने पुकारा।

एक क्षण बीत गया, उसने फिर पुकारा :

"कौन है ?" उसने ओल्गा की आवाज सुनी।

"नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना घर पर हैं ?"

"नहीं, वे अभी तक नहीं लौटी हैं ?"

"अजीब बात है .... अत्यन्त विचित्र," अत्यधिक बेचैनी का अनुभव करते हुए आत्मशमियानोव ने सोचा। "वह घर गई थी ......"

वह समुद्र तट वाली सड़क पर चल दिया, फिर गली में मुड़ा और शेश्कोवस्की की खिड़कियों में झाँका। लायवस्की बिना कोट पहने, अपने ताशों की ओर गौर से देखता हुआ मेज के पास बैठा हुआ था।

"अद्भुत, अद्भुत," आत्मशमियानोव बड़बड़ाया और लायवस्की के हिस्टीरिया के दौरे की याद कर लज्जित हो उठा।

"अगर वह घर पर नहीं है तो है कहाँ?"

वह फिर नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना के घर गया और अन्धकारपूर्ण खिड़कियों को देखने लगा।

"यह धोखेबाजी है, धोखेबाजी ......" उसने सोचा, यह याद करते हुए कि मार्या कोन्स्तेन्तीनोवा के यहाँ दोपहर को मिलते समय उसने यह वायदा किया था कि वह शाम को उसके साथ सैर करने चलेगी।

उस घर की खिड़कियाँ जिसमें किरिलिन रहता था, अन्धेरी थीं और फाटक पर एक छोटी सी बेंच पर बैठा हुआ पुलिस का एक सिपाही सो रहा था। आत्मशमियानोव की समझ में सब कुछ साफ साफ आ गया जब उसने खिड़कियों और सिपाही को देखा। उसने घर जाने का निश्चय किया और उसी तरफ चल पड़ा परन्तु न मालूम कैसे उसने अपने को फिर नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना के मकान के पास पाया। वह फाटक के पास पड़ी हुई बेंच पर बैठ गया और यह महसूस करते हुए कि ईर्ष्या और क्रोध के कारण उसका मस्तिष्क फटा जा रहा है, अपना टोप उतार लिया।

"कस्बे के गिरजे में लगी हुई घड़ी चौबीस घन्टों में सिर्फ दो ही बार बजती थी—दोपहर को आधीरात को। जैसे ही घड़ी ने आधी

रात का घन्टा बजाया उसके कुछ ही देर बाद उसने तेज चलते हुए कदमों की आवाज सुनी।

"तो कल शाम को फिर मुरीदोव के यहाँ," आरशमियानोव ने सुना और उसने किरिलिन की आवाज पहचान ली। "आठ बजे, नमस्कार।"

नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना बाग के पास दिखाई दी। बिना इस बात की तरफ ध्यान दिए हुए कि आरशमियानोव बेंच पर बैठा हुआ था, वह उसके पास होकर एक छाया की तरह निकल गई, फाटक खोला और उसे खुला ही छोड़कर मकान के भीतर चली गई। अपने कमरे में उसने मोमबत्ती जलाई और शीघ्रता से कपड़े उतारे परन्तु बिस्तर पर जाने के बजाय वह एक कुर्सी के सामने घुटनों के बल बैठ गई, दोनों बाहों से उसे पकड़ लिया और सिर टिका कर बैठी रही।

जब लायवस्की घर आया दो बज चुके थे।

—०—

१५

सोने का निश्चय करके, एक साथ ही नहीं बल्कि धीरे धीरे लायवस्की दूसरे दिन एक बजने के बाद ही सामोलेन्को के यहां रुपए मांगने चल दिया जिससे कि वह शनिवार को जाने के बारे में निश्चिन्त हो जाय। हिस्टीरिया के उस दौरे के बाद, जिससे उसके मस्तिष्क की निराशाजनक अवस्था को और भी गहरा बना दिया था, उसके लिए कस्बे में ठहरना असम्भव हो गया था। अगर सामोलेन्को अपनी शर्तों पर अड़ा रहता है, उसने सोचा कि इन शर्तों पर सहमत होकर रुपए ले लेना सम्भव है, और दूसरे दिन जब वह जा रहा था यह कहना कि नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना ने जाने से इन्कार कर दिया है इससे उसको सन्तोष हो जायगा। उस शाम को वह उसे इस बात के लिए तैयार कर लेगा कि यह सारा प्रबन्ध उसी की भलाई के लिए किया जा रहा है। अगर सामोलेन्को, जो स्पष्टतया वॉन कोरेन के प्रभाव में था, रुपए देने से बिल्कुल मना कर दे या नई शर्तें रखे तो वह, लायवस्की, उसी शाम को किसी लद्दू जहाज से यहाँ तक कि किसी नाव में बैठकर नोवी एकोन या नोवोरोसिस्क चला जायगा, वहाँ से एक व्यग्र कर देने वाला तार भेज देगा और तब तक वहाँ ठहरा रहेगा जब तक कि उसकी माँ सफर के लिए खर्च न भेज देगी।

जब वह सामोलेन्को के यहाँ गया तो उसने वॉन कोरेन को बैठकखाने में बैठा हुआ पाया। प्राणि-शास्त्र-विशारद् अभी भोजन करने के लिए आया था और हमेशा की तरह एल्बम को पलट रहा था और ऊँची बाढ़ वाले टोप पहने हुए मनुष्यों और टोपियां पहने हुईं महिलाओं का निरीक्षण कर रहा था।

"कितना बड़ा दुर्भाग्य है !" उसे देखकर लायव्स्की ने सोचा। 'वह बीच में हो सकता है। नमस्कार है!"

"नमस्कार," वॉन कोरेन ने उसकी तरफ बिना देखे प्रत्याभिवादन किया।

"क्या अलेक्जेन्दर देविदिच घर पर हैं?"

"हाँ, रसोईघर में हैं।"

लायव्स्की रसोईघर में गया परन्तु दरवाजे पर से ही यह देख कर कि सामोलेन्को सलाद बनाने में व्यस्त है, बैठक में वापस लौट आया और बैठ गया। वह वॉन कोरेन की उपस्थिति में सदैव बेचैनी का अनुभव करता था और अब उसे इस बात का भय था कि उसके हिस्टीरिया के दौरे के बारे में बातें होंगी। एक मिनट से ज्यादा समय तक खामोशी रही। वॉन कोरेन ने अचानक लायव्स्की की तरफ निगाहें उठाईं और पूछा :

"कल से अब तुम्हारी तबियत कैसी है?"

"सचमुच बहुत अच्छी है," लायव्स्की ने शर्म से लाल होते हुए कहा, "सचमुच यह कोई भारी बात नहीं था।"

"कल तक मैं यह सोचता था कि सिर्फ औरतों को ही हिस्टीरिया का दौरा होता है इसलिए पहले मैंने यह सोचा कि तुम सन्त वितुस का नृत्य कर रहे हो।"

लायव्स्की झेंपता हुआ मुस्कराया और सोचने लगा :

'उसके हक में यह बात कहना कितनी निर्दयता है। वह इस बात को अच्छी तरह जानता है कि मेरे लिए यह कितना दुखदायी है......'

"हाँ, वह बहुत हास्यास्पद दृश्य था," उसने अब भी मुस्कराते हुए कहा। "मैं आज पूरे समय तक इस पर हँसता रहा। हिस्टीरिया के दौरे में सबसे विचित्र बात यह है कि तुम यह जानते हो कि

यह वाहियात है और अपने मनमें इस पर हँसते रहते हो और साथ ही सिसकते भी जाते हो। हमारे इस युग में, जिसमें कि हमारे चेतना-तन्तु अत्यधिक प्रभावित हो उठते हैं, हम लोग इन चेतना-तन्तुओं के गुलाम बन गए हैं वे हमारे स्वामी हैं और हमको मनचाहा नाच नचाते हैं। इस विषय में सभ्यता ने हमारा बहुत बड़ा अहित किया है......"

जब लायवस्की बात कर रहा था तो यह बात उसे बुरी लगी कि वॉन कोरेन उसकी बात को गम्भीरतापूर्वक सुन रहा था और उसकी तरफ गौर से निगाहें गढ़ा कर देख रहा था मानो उसका अध्ययन कर रहा हो। और वह अपने आप से भी नाराज हो उठा कि वॉन कोरेन को घृणा करते हुए भी वह अपने चेहरे से उसकी मैत्र-भरी मुस्कराहट को दूर करने में असमर्थ था।

"फिर भी मुझे स्वीकार करना चाहिए," उसने आगे कहा, "कि उस दौरे के तात्कालिक और यथेष्ट कारण भी थे। कुछ दिनों से मेरी तन्दुरुस्ती काफी गिरती जा रही है। उसके साथ ही साथ बेचैनी रहना, निरन्तर आर्थिक संकट...मनुष्यों का और साधारण रुचि का अभाव रहना .....मेरी स्थिति एक गवर्नर की स्थिति से बुरी है।"

"हाँ, तुम्हारी स्थिति निराशाजनक है," वॉन कोरेन ने उत्तर दिया।

इन शान्त, शीतल शब्दों में व्यङ्ग और अनिश्चित भविष्य वाणी के बीच की सी सूचना निहित थी, जिसमें लायवस्की ने स्वयं को अपमानित अनुभव किया। उसे पिछली शाम वाली वॉन कोरेन की आँखों की याद आ गई जिनमें मजाक और घृणा भरी हुई थी। वह कुछ देर तक चुप रहा और फिर बिना मुस्कराये पूछने लगा—

"तुम मेरी स्थिति के बारे में कोई बात कैसे जानते हो?"

"तुम खुद ही तो अभी इस बारे में कह रहे थे। साथ ही, तुम्हारे मित्र तुम में इतनी गहरी रुचि लेते हैं कि मैं दिन भर तुम्हारे विषय में सुनता रहता हूँ।"

"कौनसे मित्र ? सामोलेन्को, मेरा ख्याल है ?"

"हाँ, वह भी।"

"मैं अलेक्जेन्दर देविदिच और अपने अन्य सभी मित्रों से कह दूँगा कि वे लोग मेरे विषय में चिन्ता करने का कष्ट न उठाया करें।"

"मैं तुम्हारी बात को नहीं समझ पा रहा हूँ," लायवस्की बड़बड़ाया, अचानक यह अनुभव करते हुए कि जैसे उसने अभी यह महसूस किया है कि वॉन कोरेन उससे घृणा और नफरत करता था और उसका मजाक उड़ा रहा था और उसका सबसे भयानक और पुराना दुश्मन था।

"यह व्यङ्ग किसी और के लिए सुरक्षित र[illegible]" उसने धीरे से कहा। वह उस घृणा के कारण जोर से बोलने में असमर्थ था, जो उसके सीने और गले को दबा रही थी, जैसे कि उसने गत रात्रि को उस हँसी के पहले दबा रखा था।

सामोलेन्को कमीज की बाँहें उपर चढ़ाए हुए अन्दर आया—रसोईघर की गर्मी के कारण पसीने से नहाया हुआ और लाल मुँह लिए।

"आह, तुम यहाँ ?" वह बोला, "गुडमार्निंग, मेरे प्यारे बच्चे। तुमने खाना खा लिया ? तकल्लुफ मत करना। खाना खा लिया ?"

"अलेक्जेन्दर देविदिच," खड़े होते हुए लायवस्की बोला, "यद्यपि मैंने एक व्यक्तिगत मामले में तुमसे मदद करने की प्रार्थना की थी परन्तु इसका मतलब यह तो नहीं था कि मैंने तुम्हें अन्य व्यक्तियों

के व्यक्तिगत मामलों के प्रति विवेक और सम्मान की भावना रखने से पूर्णतः स्वतन्त्र कर दिया था।'

"यह क्या मामला है ?" सामोलेन्को ने आश्चर्यचकित होते हुए पूछा।

"अगर तुम्हारे पास रुपया नहीं है,' लायवस्की कहता गया, अपने स्वर को ऊँचा उठाता हुआ और उत्तेजनावश पैरों को बदलता हुआ, "तो मत दो, इन्कार कर दो। मगर पीछे पीछे खुलकर हरेक जगह यह क्यों कहते फिरते हो कि मेरी स्थिति निराशाजनक है और इसी तरह की और बातें भी ? मैं इस प्रकार के प्रेम और मित्र की सहायता को सहन नहीं कर सकता जहाँ बातें तो मन मन भर की हों और मदद छटाँक भर की भी न हो। तुम अपनी उदारता की मनचाही डींग हाँक सकते हो परन्तु किसी ने भी तुम्हें यह अधिकार नहीं दे रखा है कि तुम मेरे व्यक्तिगत मामलों की इधर उधर चर्चा करते फिरो।"

"कैसे व्यक्तिगत मामले ?'' सामोलेन्को ने हतबुद्धि और नाराज होते हुए पूछा। "अगर तुम यहाँ गाली देने के लिए आए हो तो अच्छा हो कि यहाँ से चले जाओ। तुम बाद में फिर आ सकते हो।"

उसने उस नियम को याद किया कि जब कोई अपने पड़ोसी से नाराज हो तो उसे सौ तक गिनती गिननी शुरू कर देनी चाहिए, इससे वह शान्त हो जायगा, और उसने जल्दी जल्दी गिनना शुरू कर दिया।

"मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मेरे विषय में परेशान मत हो," लायवस्की कहता रहा। "मेरी तरफ कोई ध्यान मत दो और इससे किसी का क्या मतलब कि मैं क्या करता हूँ और कैसे रहता हूँ ? ... हाँ, मैं कर्जदार हूं, मैं शराब पीता हूं, मैं

दूसरे व्यक्ति की स्त्री के साथ रहता हूँ, मैं हिस्टीरिया का मरीज हूँ, मैं साधारण व्यक्ति हूँ। मैं अन्य व्यक्तियों की तरह गम्भीर नहीं हूँ परन्तु इससे किसी को क्या मतलब ? दूसरे व्यक्तियों के व्यक्तिगत मामलों का सम्मान करो।"

"माफ करना भाई," सामोलेन्को बोला जो पैंतीस तक गिन चुका था, "परन्तु......"

"दूसरे व्यक्तियों के व्यक्तित्व का आदर करो।" लायवस्की ने टोकते हुए कहा, "दूसरों के बारे में यह निरन्तर चर्चा करना, यह गहरी सांसें लेना और कराहना और सदैव जासूसी करना, यह छिपकर दूसरों की बातें सुनना, यह दोस्ताना हमदर्दी दिखाना......इन सब को छोड़ दो ! ये लोग मुझे रुपया उधार देते हैं और ऐसी शर्तें रखते हैं जैसे कि मैं स्कूल का छोकरा हूँ। शैतान ही जानता है कि मेरे साथ कैसा व्यवहार किया जाता है ! मैं कुछ भी नहीं चाहता" लायवस्की ने चीखते हुए कहा। वह उत्तेजना के साथ लड़खड़ा रहा था और इस बात से डर रहा था कि कहीं इसका अन्त हिस्टीरिया के दूसरे दौरे के साथ न हो। '|यही तो होगा कि मैं शनिवार को जा नहीं सकूँगा,' उसके दिमाग में यह विचार कौंध गया। "मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैं तुमसे सिर्फ यही चाहता हूँ कि मुझे अपने संरक्षण से मुक्त कर दो। मैं बच्चा नहीं हूँ और पागल भी नहीं हूँ। मैं तुमसे भीख मांगता हूं कि मेरी चिन्ता करना छोड़ दो।"

पादरी भीतर आया और लायवस्की को पीला पड़ा हुआ और नाटक सा करते हुए, अपने विचित्र व्याख्यान को प्रिंस वोरोन्त्सोव के चित्र को सुनाते हुए देखकर दरवाजे पर स्तब्ध होकर खड़ा रह गया मानो त्रस्त हो उठा हो।

"मेरी आत्मा में यह निरन्तर की झांका झूँकी करना," लायवस्की कहता गया, "मेरे मानवीय गौरव के लिए अपमान

जनक है और मैं उन स्वयंसेवक जासूसों से प्रार्थना करता हूं कि वे इस जासूसी को बन्द करदें ! बहुत हो चुका !"

"क्या बात है··· तुमने क्या कहा ?" सामोलेन्को ने कहा जो सौ तक गिन चुका था। वह लाल पड़ गया और लायवस्की के नजदीक गया।

"बहुत हो चुका !" जोर जोर से साँस लेते और झटके से अपनी टोपी उठाते हुए लायवस्की बोला।

"मैं एक रूसी डाक्टर हूं, जन्म से एक उच्च वर्ग का व्यक्ति और एक नागरिक सलाहकार," सामोलेन्को जोर देते हुए बोला। "मैंने कभी जासूसी नहीं की और मैं कसी को भी अपना अपमान करने की आज्ञा नहीं देता !" वह टूटती हुई आवाज में चीखा, अन्तिम शब्द पर जोर देते हुए "अपनी जबान बन्द करो !"

पादरी जिसने डाक्टर को कभी कभी इतना भव्य, गौरव से इतना उत्तेजित, इतना लाल और इतने भयानक रूप में पहले कभी भी नहीं देखा था, अपना मुँह बन्द कर लिया, बाहर गलियारे में भागा और जोर से उसकी हँसी फूट पड़ी।

मानो कि कुहरे में से देख रहा हो, इस तरह लायवस्की ने वॉन कोरेन को उठते हुए देखा। वह पतलून की जेबों में दोनों हाथ डाल कर, किसी घटना की सम्भावना करता हुआ स्थिर खड़ा हो गया, जैसे कि यह देखने की प्रतीक्षा कर रहा हो कि अब क्या होगा। उसकी यह शान्त मुद्रा लायवस्की को बदतमीजी और अपमान की अन्तिम सीमा प्रतीत हुई।

"महरबानी करके अपने शब्दों को वापस लो," सामोलेन्को चीखा।

लायवस्की ने, जिसे इस समय तक यही याद नहीं रहा था कि उसके शब्द क्या थे, जवाब दिया—

"मुझे अकेला छोड़ दो ! मैं कुछ भी नहीं माँगता। सिर्फ यह चाहता हूँ कि तुम और यहूदी नस्ल के नए जर्मन धनिक मुझे अकेला छोड़ दें। वर्ना मैं तुमसे ऐसा कराने के लिए कदम उठाऊँगा, मैं तुमसे युद्ध करूँगा।"

"अब हम समझे," मेज के पीछे से आगे आते हुए वॉन कोरेन बोला। "मिस्टर लायवस्की यहाँ से बाहर जाने के पहले द्वन्द युद्ध द्वारा अपना मनोरंजन करना चाहते हैं ! मैं उन्हें यह प्रसन्नता प्रदान कर सकता हूं। मिस्टर लायवस्की ! मैं आपको चुनौती को स्वीकार करता हूं।"

"चुनौती," धीमी आवाज में, वॉन कोरेन के पास जाकर और उसकी घनी भौंहों और घुँघराले बालों की तरफ घृणा-पूर्वक देखते हुए लायवस्की बोला, "चुनौती ? बेशक ! मैं तुमसे नफरत करता हूं ! तुमसे नफरत करता हूं।"

"खुशी हुई ! कल सुबह तड़के ही केरवालाय के पास। मैं विस्तार की सारी बातें आपकी रुचि पर छोड़ता हूं। और अब, यहाँ से काला मुँह करो।"

"मैं तुमसे नफरत करता हूं," हाँफते हुए लायवस्की धीरे से बोला। "मैं तुमसे बहुत दिनों से नफरत करता आ रहा था ! द्वन्द युद्ध ! हां !"

"इसे यहां से भगा दो, अलेक्जेन्डर देविदिच, वर्ना मैं ही जा रहा हूं," वॉन कोरेन ने कहा, "यह मुझे काट खाएगा।"

वॉन कोरेन के शान्त स्वर ने डाक्टर को शान्त कर दिया। ऐसा लगा जैसे अकस्मात उसने अपने ऊपर काबू पा लिया हो, अपने होश हवास ठीक कर लिए हों। उसने दोनों हाथ लायवस्की की कमर में डाल दिए और उसे वॉन कोरेन से दूर ले जाते हुए, दोस्ताना लहजे में कहा जो भावातिरेक के कारण कांप रहा था।

"मेरे दोस्तो······प्यारे, अच्छे ·····तुम लोग गुस्से में हो और इतना काफी है······और इतना काफी है, मेरे दोस्तो।"

"उसके कोमल, मित्रतापूर्ण स्वर को सुनकर लायवस्की को अनुभव हुआ कि अभी उसके साथ कोई अकल्पनीय और भयानक घटना घट चुकी है, मानो कि वह रेल के नीचे आने से बाल बाल बचा हो। वह लगभग रो उठा, अपने हाथ हिलाए और कमरे से बाहर भाग गया।

"यह अनुभव करना कि उससे नफरत की जाती है, जो आदमी नफरत करता है उसके सामने अपनी असलियत को जाहिर कर देना और वह भी अत्यन्त दयनीय, घृणित और निस्सहाय दशा में। हे मेरे भगवान, यह कितना कठोर है!" उसने कुछ देर बाद सोचा जब कि वह पैविलियन में बैठा हुआ यह अनुभव कर रहा था कि मानो उसका शरीर उस घृणा से क्षत-विक्षत हो रहा था जिसका वह अभी लक्ष्य बना था।

"यह कितना गन्दा है, मेरे भगवान!"

ब्रान्डी के साथ ठण्डा पानी पीने से उसे होश आया। उसने स्पष्ट रूप से वॉन कोरेन के शान्त, क्रुद्ध चेहरे का, पहले दिन वाली उसकी आँखों का, कम्बल जैसी उसकी कमीज का, उसकी आवाज का, उसके सफेद हाथों का चित्र खींचा, और उसके सीने में एक गहन, तीव्र, क्षुधित घृणा उद्वेलित हो उठी और अपने सन्तोष के लिए छटपटाने लगी। अपनी कल्पना में उसने वॉन कोरेन को ज़मीन पर नीचे गिरा दिया और पैरों से कुचला। उसने जो घटना घटी थी उसकी छोटी छोटी बात को याद किया और ताज्जुब किया कि वह उस नाचीज आदमी के सामने झेंपकर क्यों मुस्कराता रहा और उसने मामूली, तुच्छ व्यक्तियों की राय की चिन्ता क्यों की, जिन्हें कोई नहीं जानता, जो एक छोटे से सुनसान कस्बे में रहते हैं जिसका, उसे लगा कि,

नक्शे में कहीं नामनिशान भी नहीं है और जिसके बारे में पीटर्सबर्ग के एक भी भले आदमी ने कभी नहीं सुना। अगर यह रद्दी कस्बा अचानक आग लगाकर बर्बाद हो जाय या वैसे ही खत्म हो जाय तो इस समाचार को ले जाने वाले तार में, रूस में उतनी ही रुचि ली जायगी जितनी कि पुराने फर्नीचर की बिक्री के लिए किए जाने वाले विज्ञापन में ली जाती है। कल चाहे वह वॉन कोरेन को मार डाले या जिन्दा छोड़ दे, यह एक सी बात होगी—समान रूप से व्यर्थ और अरुचिकर। अच्छा तो यह होगा कि उसकी टाँग या बाँह में गोली मार कर घायल कर दिया जाय फिर उस पर हँसा जाय और उसे एक टांग टूटे हुए, घास में खोये हुए कीड़े की तरह, उसी के समान तुच्छ व्यक्तियों के बीच अपने दुर्भाग्य से लड़ने के लिए छोड़ दिया जाय।

लायवस्की शेश्कोवस्की के यहां गया, इस विषय में सब बताया और उससे अपना सहायक बनने के लिए कहा। फिर वे दोनों डाक और तार विभाग के सुपरिन्टेन्डेन्ट के यहां गए और उससे भी अपना सहायक बनने के लिए कहा और उसके साथ खाना खाने ठहर गए। खाने में खूब हँसी मजाक हुआ। लायवस्की ने खुद अपना ही मजाक उड़ाया, यह कह कर कि वह पिस्तौल चलाना मुश्किल से जानता है। उसने खुद को शाही धनुर्धर और विलियम टेल कहा।

'हम लोगों को इस भले आदमी को एक सबक सिखाना चाहिए ....." वह बोला।

खाना खाने के बाद वे लोग ताश खेलने बैठ गए। लायवस्की ने ताश खेले, शराब पी और सोचा कि द्वन्द युद्ध करना बेवकूफी और मूर्खता है क्योंकि यह समस्या को सुलझाती नहीं वरन् और उलझा ही देता है परन्तु कभी कभी इसके बिना काम नहीं चलता। मिसाल के लिए, इसी मामले में, निस्सन्देह कोई भी वॉन कोरेन के खिलाफ कदम नहीं उठ सकता। और वह द्वन्दयुद्ध इस सीमा तक तो ठीक था कि

इसके बाद इस कस्बे में लायवस्की का रहना असम्भव हो उठेगा। उसने थोड़ी सी शराब पी, खेल में मजा लिया और अपने को स्वस्थ अनुभव करने लगा।

परन्तु जब सूरज डूब गया और अन्धेरा होने लगा तो वह एक व्यग्रता की भावना से भर उठा। यह मृत्यु के विचार से उत्पन्न भय नहीं था क्योंकि जब वह भोजन कर रहा था और ताश खेल रहा था तो किसी कारणवश उसे इस बात का दृढ़ विश्वास हो गया था कि इस द्वन्द युद्ध का कुछ भी परिणाम नहीं निकलेगा। यह वह भय था जो किसी अनजान घटना के विचार से उत्पन्न हो रहा था जो कल सुबह उसके जीवन में पहली बार घटने वाली थी और आने वाली रात का भय था······· वह जानता था कि वह रात लम्बी होगी और बिना नींद के बीतेगी और यह कि उसे सिर्फ वॉन कोरेन और उसकी घृणा के विषय में ही नहीं सोचना पड़ेगा परन्तु झूँठ के उस पहाड़ के विषय में भी सोचना पड़ेगा जिसके नीचे होकर उसे गुजरना पड़ेगा और जिससे छुटकारा पाने की न तो उसमें शक्ति ही है और न योग्यता। यह ऐसा था मानो उसे अचानक बीमारी ने घेर लिया हो। एकाएक फौरन ही सो तारों और आदमियों के प्रति उसका आकर्षण समाप्त हो गया। वह परेशान हो उठा, और उनसे घर जाने की आज्ञा माँगने लगा। वह बिस्तर पर जाने के लिए, चुपचाप लेटे रहने के लिए और रात के लिए अपने विचारों को तैयार करने के लिए व्याकुल हो उठा। शेश्कोवस्की और डाक विभाग का सुपरिन्टेन्डेन्ट उसे घर तक पहुँचा आए और द्वन्द-युद्ध का इन्तजाम करने के लिए वॉन कोरेन के यहाँ पहुँचे। अपने घर के पास लायवस्की को आशमियानोव मिला। वह हाँफ रहा था और उत्तेजित था।

"मैं तुम्हें ढूँढ रहा था, इवान आन्द्रिइच," वह बोला, "मैं तुमसे जल्दी चलने की प्रार्थना करता हूँ·······"

"कहाँ ?"

"कोई तुमसे मिलना चाहता है, कोई जिसे तुम नहीं जानते, किसी बहुत महत्वपूर्ण मामले में वह तुमसे बहुत जोर देते हुए एक मिनट को आने के लिए प्रार्थना करता है। वह तुमसे कुछ बातें करना चाहता है ···· उसके लिए जिन्दगी और मौत का सवाल है ···· ।"

उत्तेजित होने के कारण आत्शमियानोव गहरे आरमीनिन लहजे के साथ बोल रहा था।

"कौन है ?" लायवस्की ने पूछा।

"उसने मुझसे तुम्हें अपना नाम न बताने के लिए कहा है।"

"उससे कहना कि मैं व्यस्त हूँ, कल अगर वह चाहे तो···"

"यह कैसे हो सकता है !" आत्शमियानोव भौंचक्का हो उठा। "वह तुमसे तुम्हारे ही बारे में कोई महत्वपूर्ण बात करना चाहता है ···बहुत ज़रूरी ! अगर तुम नहीं चलते तो कोई भयानक घटना घट जायगी।"

"अद्भुत·····," लायवस्की बड़बड़ाया, यह न समझते हुए कि आत्शमियानोव इतना उत्तेजित क्यों था और इस नीरस, बेकार छोटे से कस्बे में क्या रहस्य हो सकते हैं।

"विचित्र," उसने अपनी हिचकिचाहट को दुहराया, "फिर भी, चलो; मैं परवाह नहीं करता।"

आत्मशमियानोव तेजी से आगे चल दिया और लायवस्की ने उसका अनुसरण किया। वे एक गली में होकर चले, फिर एक संकरी गली में मुड़ गये।

"यह कितना मनहूस है !" लायवस्की ने कहा।

"एक मिनट, एक मिनट···पास ही है।"

"क़िले की पुरानी दीवाल के पास वे लोग दो चहारदीवारियों

के बीच एक संकरी गली में घुसे, फिर एक बड़े से अहाते में आए और एक छोटे घर की तरफ चल दिए।

"यह मुरीदोव का है, है न ?" लायवस्की ने पूछा।

"हां।"

"मगर मेरी समझ में यह नहीं आता कि हम लोग पीछे वाले अहाते में होकर क्यों आए ? हम लोग सड़क पर होकर आ सकते थे, उधर से यह पास पड़ता है।"

"फिकर मत करो, फिकर मत करो।"

लायवस्की को यह भी विचित्र लगा कि आत्शमियानोव उसे एक पिछले दरवाजे पर ले गया और रास्ते में पंजों के बल चलता हुआ उससे इशारा करने लगा जैसे कि वह उससे चुपचाप और जबान रोके हुए चलने के लिए कह रहा हो।

"इस रास्ते से, इस रास्ते से.........," आत्शमियानोव ने सावधानीपूर्वक दरवाजे को खोलते हुए और गलियारे में पंजों के बल चलते हुए कहा, "चुपचाप, खामोशी से, मैं तुमसे विनती करता हूं... वे लोग सुन लेंगे।"

उसने सुना, एक गहरी साँस ली और फुसफुसाते हुए कहा :

"उस दरवाजे को खोलो और भीतर जाओ .... डरो मत।"

व्याकुल होकर लायवस्की ने दरवाजा खोला और एक कमरे में गया जिसकी छत नीची थी और खिड़कियों पर परदे पड़े हुए थे।

मेज पर एक मोमबत्ती रखी हुई थी।

"क्या चाहते हो ?" किसी ने बगल वाले कमरे में से पूछा। "तुम हो, मुरीदोव ?"

लायवस्की उस कमरे की तरफ मुड़ा और किरलिन और उसकी बगल में नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना को देखा।

उसने वह नहीं सुना जो कुछ भी उससे कहा गया था, लड़-

लड़ाता हुआ पीछे हटा और यह नहीं जान सका कि किस तरह सड़क पर आ गया। उसकी आत्मा में से वॉन कोरेन के प्रति घृणा और उसकी अपनी व्याकुलता, सब गायब हो चुकी थी। घर लौटते हुए उसने भद्दे तरीके से अपना दाहिना हाथ घुमाया और अपने पैरों के नीचे जमीन को ध्यान से देखा, समतल भूमि पर कदम रखने का प्रयन करते हुए। घर पर अपने अध्ययन कक्ष में वह हाथ मलता हुआ आगे पीछे घूमता रहा। भद्दे तरीके से अपने कन्धों और गर्दन को हिलाता रहा, मानो उसकी जाकिट और कमीज बहुत तंग हों, फिर उसने एक मोमबत्ती जलाई और मेज पर बैठ गया...

१६

'परोपकार का अध्ययन,' जिसके बारे में तुम कहते हो, सिर्फ मानवी विचार को ही सन्तोष दे सकेगा, उस समय, जब कि आगे बढ़ते हुए उन्हें असली विज्ञान का ज्ञान होगा और उन्हीं के साथ चढ़ते हुए वे आगे बढ़ते रहेंगे।। मैं यह नहीं जानता कि वे लोग एक नए सूक्ष्मदर्शक यन्त्र के नीचे, या एक नवीन हेमलेट के स्वागत-भाषणों में या एक नए धर्म में मिलेंगे, परन्तु मैं उम्मीद करता हूँ कि समाप्त होने से पूर्व पृथ्वी बर्फ की तह से ढक जायगी। सब मानवी ज्ञानों में सबसे अधिक चलने वाला और स्थिर रहने वाला, निस्सन्देह, ईसामसीह की शिक्षाएँ हैं, परन्तु देखो तो सही उनकी व्याख्या भी कितने भिन्न भिन्न प्रकार से की जाती हैं। कुछ कहते हैं कि हमको अपने पड़ोसियों से प्रेम करना चाहिए परन्तु फौजियों, अपराधियों और पागलों को अपवाद मानना चाहिए। वे आज्ञा देते हैं फौजियों को युद्ध में मार डालना चाहिए, अपराधियों को जेल में बन्द कर देना या फाँसी दे देनी चाहिए और पागलों को शादी करने से वंचित कर देना चाहिए। दूसरे व्याख्या करने वाले उपदेश देते हैं कि हमें बिना किसी अपवाद के अपने पड़ोसियों से प्यार करना चाहिए, 'इसका' या 'उसका' भेदभाव छोड़ते हुए। उन लोगों की शिक्षा के अनुसार अगर कोई तपेदिक का रोगी या कोई खूनी या एक मिरगी का रोगी तुम्हारी लड़की से शादी करना चाहता है तो उससे साथ शादी कर दो। अगर निर्बल अपने से शारीरिक और मानसिक रूप से अधिक शक्तिशाली से युद्ध करता है तो अपना बचाव मत करो। 'कला कला के लिए' के समान 'प्रेम प्रेम के लिए' की यह वकालत, अगर इसमें

शक्ति होती, तो आगे चलकर मानव जाति को पूरी तरह से नेस्त-नाबूद कर देगी और इस तरह यह इस पृथ्वी पर किए गए अप-राधों में सबसे बड़ा होगा। ईसकी बहुत अधिक व्याख्याऐं हैं और जब कि ऐसी बहुत सी हैं फिर भी गम्भीर विचार को इनमें से एक के द्वारा भी सन्तोष नहीं प्राप्त होता इसलिए ऐसे व्यक्ति इसे जनता के सामने प्रस्तुत करने के लिए शीघ्रतापूर्वक अपने व्यक्तिगत विचार इसमें मिला देते हैं। इसी वजह से तुम्हें दार्शनिक या तथा-कथित ईसाइयत के आधार पर कोई प्रश्न नहीं उठाना चाहिए। ऐसा करके तुम समस्या को समाधान से और भी अधिक दूर ले जाते हो।"

पादरी ने प्राणि-शास्त्र-विशारद की बातें गौर से सुनीं, कुछ सोचा और पूछा :

"हरेक व्यक्ति में स्वाभाविक रूप से उत्पन्न नैतिक नियम को दार्शनिकों ने बनाया है या ईश्वर इसकी भावना शरीर के साथ ही उत्पन्न कर देता है?"

"मैं नहीं जानता। परन्तु यह नियम सम्पूर्ण व्यक्तियों में और सम्पूर्ण युगों में इतना सार्वभौमिक रहा है कि मैं यह सोचने लगता हूँ कि हमें यह मान लेना चाहिए कि मनुष्य के साथ इसका सम्बन्ध जन्मजात होता है। इसका आविष्कार नहीं किया गया परन्तु यह रहता है और रहेगा। मैं तुमसे यह नहीं कहता कि एक दिन इसे सूक्ष्म-दर्शक-यन्त्र के नीचे रखकर देखा जा सकेगा परन्तु इसका शारीरिक सम्बन्ध, सचमुच प्रमाणों द्वारा देखा जा सकता है। दिमाग का भयंकर रूप से बिगड़ जाना और यह सब तथाकथित दिमागी बीमा-रियाँ, जहाँ तक मेरा विश्वास है, सबसे अधिक नैतिक नियम के बिगाड़ से ही उत्पन्न होते हैं।"

"ठीक। सो फिर, जैसा कि हमारा पेट हमें भोजन करने की आज्ञा देता है, हमारा नैतिक ज्ञान हमें अपने पड़ोसियों से प्रेम करने

के लिए कहता है ? क्यों, यही बात है न ? परन्तु हमारे भीतर बैठा हुआ स्वाभाविक मानव, स्वयं अपने से ही प्रेम करने के कारण आत्मा और न्याय की पुकार का विरोध करता है और इससे मस्तिष्क को परेशान कर देने वाले अनेक प्रश्न उठ खड़े होते हैं। इन प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए हम किन्हें ढूँढें, अगर तुम उन्हें दार्शनिक आधार पर देखने से रोक देते हो ?"

"जो कुछ भी विज्ञान हमारे पास है उसकी सहायता लो। प्रमाण और वास्तविकता के तर्क पर विश्वास करो। यह सत्य है यद्यपि थोड़ा है परन्तु दूसरी तरफ यह दर्शन से कम लचीला और अस्थिर है। यह मान लो कि नैतिक नियम की माँग यह है कि तुम अपने पड़ोसी से प्रेम करो। अच्छा ? प्रेम का प्रदर्शन उस प्रत्येक वस्तु को दूर करने के रूप में होना चाहिए जो किसी न किसी रूप में मानव मात्र के लिए घातक होती है और उन्हें वर्तमान में और भविष्य में भी खतरे की धमकी देती रहती है। हमारा ज्ञान और प्रमाण हमें यह बताता है कि नैतिक और शारीरिक रूप से असाधारण व्यक्ति मानवता के लिए अभिशाप होते हैं। अगर ऐसी बात है तो तुम्हें असा-धारण लोगों का विरोध करना चाहिए। अगर तुम उन्हें साधारण स्तर तक उठाने में असमर्थ हो तो तुममें इतनी शक्ति और योग्यता तो होनी ही चाहिए जिससे उन्हें हानि पहुँचाने के अयोग्य बना सको—मत-लब यह कि उन्हें नष्ट कर दो।"

"तो प्रेम का अस्तित्व सबल द्वारा निर्बल पर विजय पाने में है।"

"निस्सन्देह।"

"परन्तु तुम जानते हो कि शक्तिशालियों ने हमारे भगवान ईसामसीह को शूली पर चढ़ा दिया था," पादरी ने गर्म होकर कहा।

"वास्तविकता यह है कि वे लोग जिन्होंने 'उसे' सूली दी थी, शक्तिशाली न होकर निर्बल थे। मानवीय संस्कृति अस्तित्व के लिए संघर्ष और प्राकृतिक चुनाव को निर्बल बनाती है और उसे विफल करने का प्रयत्न करती है, इसलिये निर्बलों की प्रगति और सबलों के ऊपर उनका अधिकार बड़ी तेजी से होता है। कल्पना करो कि तुम शहद की मक्खियों में मानव के भलाई करने वाले विचार, उनके इसी वुरूा और आदिरूप में, भरने में सफल हो जाते। इसका परिणाम क्या होता ? नर मधु मक्खियाँ, जिन्हें कि मार डालना चाहिए, जीवित रह जायंगी, सारा शहद खा जायंगी, नारी-मक्खियां को बिगाड़ेंगी और उन्हें गुमराह कर देंगी, जिसका परिणाम निर्बलों द्वारा सबलों पर अधिकार के रूप में और सबलों के पतन के रूप में होगा। आजकल मानवता के साथ भी यही प्रक्रिया हो रही है: निर्बल सबलों को सता रहे हैं। बर्बरों में, जो सभ्यता से अछूते हैं, सबसे ताकतवर, सब से चालाक और सबसे अधिक चरित्रवान नेतृत्व ग्रहण करता है। वह सरदार और स्वामी होता है। परन्तु हम सभ्य लोगों ने क्राइस्ट को सूली पर चढ़ा दिया था और हम लोग अब भी उसे सूली पर चढ़ाते रहते हैं, इसलिए हम लोगों में किसी बात की कमी है.... और उसी अभाव को हम लोगों में जागृत करना है वर्ना इन गलतियों का कोई अन्त नहीं होगा।"

"परन्तु तुम्हारे पास सबल और निर्बल दिखाने के लिए कौन सी तुला है ?"

"ज्ञान और प्रमाण। तपेदिक और गण्डमाला की बीमारियाँ अपने लक्षणों से पहचानी जाती हैं और पागल और बदचलन उनके कामों से।"

"परन्तु गलतियाँ भी हो सकती हैं!"

"परन्तु जब तुम्हें बाढ़ का खतरा हो उस समय सिर्फ पैरों को पानी में भिगोने से डरना नहीं चाहिए।"

"यह दर्शन की बातें हैं," पादरी हंसा।

"रत्ती भर भी नहीं। तुम्हारा दिमाग विद्यालय में पढ़ाई गई फिलासफी पढ़कर इतना बिगड़ गया है कि तुम प्रत्येक वस्तु में अस्पष्टता के अतिरिक्त और कुछ नहीं देखना चाहते। आदर्श शिक्षायें जिनके द्वारा तुम्हारा अपरिपक्व मस्तिष्क भर दिया गया है इसलिए अव्यवहारिक कहलाती हैं क्योंकि वे तुम लोगों के ध्यान को जो बिल्कुल स्पष्ट है उसकी तरफ से हटा देती हैं। शैतान से आँखें मिलाकर देखो; अगर वह शैतान ही है तो उसे बतादो कि वह शैतान है और व्याख्यार्थ कान्ट या हीगल की दुहाई मत देते फिरो।"

प्राणि-शास्त्र-विशारद कुछ देर रुका और फिर कहने लगा :

"दो और दो ४ होते हैं और १पत्थर१पत्थर ही रहता है। यहाँ कल हम लोग द्वन्दयुद्ध लड़ेंगे। तुम और हम कहेंगे कि यह बेवकूफी और वाहियात बात है, कि द्वन्दयुद्ध पुरानी चीज हो गई है, कि शाही द्वन्द-युद्धों और शराबखाने में मस्त होकर ऊधम मचाने में कोई असली अन्तर नहीं है और फिर भी हम लोग रुकेंगे नहीं, हम लोग वहाँ जायेंगे और लड़ेंगे। इसलिए हमारे विवेक से भी शक्तिशाली कोई शक्ति है। हम लोग चीखते हैं कि युद्ध बर्बादी है, डाकाजनी है, भयंकर पाप और भाई द्वारा भाई की हत्या करना है। हम लोग खून देखकर बेहोश हुए बिना नहीं रहते, परन्तु फ्रांसीसियों या जर्मनों द्वारा हमारा जरा सा अपमान हो जाने दो कि जिससे हम एकदम अपने महत्व की भावना से भर उठें, पूरी सच्चाई के साथ हम चीख उठते हैं "शाबाश" और दुश्मन पर आक्रमण करने के लिए दौड़ पड़ते हैं। तुम हमारे हथियारों पर ईश्वरीय आशीष की कामना करोगे और हमारी वीरता सारी दुनियाँ में उत्साह

उत्पन्न कर देगी। फिर वही बात आती है कि कोई शक्ति है, अगर ऊँची नहीं तो भी हमसे और हमारे दर्शन शास्त्र से तो अधिक शक्तिशाली अवश्य ही है। जिस तरह हम समुद्र के ऊपर उड़ते हुए बादल की गति नहीं रोक सकते उसी तरह इसे भी नहीं रोक सकते। पाखण्डी मत बनो, चतुर बनकर उसे मुँह मत चिढ़ाओ और यह मत कहो, "आह, पुराने फैशन का, वाहियात! आह,यह धर्म शिक्षा के विरुद्ध है।" परन्तु इसे ठीक तरह से देखो, इसकी बुद्धिसंगत कानूनी स्थिति को समझो और जब मिसाल के लिए, यह एक सड़ी हुई, जहरीली, पतित जाति को नष्ट करना चाहती है तो इसे, अपनी छोटी-छोटी गोलियों से बाइबिल के न समझते हुए उद्धरणों द्वारा, रोकने की कोशिश मत करो। लेस्कोव ने पुण्यात्मा दानीला की एक कहानी लिखी है जिसे कस्बे से बाहर एक कोढ़ी मिला। उसने प्रेम और क्राइस्ट के नाम पर उसे खाना दिया और कपड़े पहिनाए। अगर वह दानीला सचमुच मानवता को प्यार करता था तो वह उस कोढ़ी को कस्बे से जितनी भी दूर सम्भव था, घसीट कर ले जाता और उसे एक गड्ढे में फेंक देता और तन्दुरुस्तों को बचाने के लिये चल देता। क्राइस्ट ने, मुझे आशा है, हम लोगों को बुद्धिसङ्गत, अक्लमन्दी का और व्यवहारिक प्रेम करना सिखाया था।

"तुम कैसे आदमी हो!" पादरी हंसा। "तुम क्राइस्ट में विश्वास नहीं रखते। फिर तुम अक्सर उसका नाम क्यों लेते हो?"

"हाँ, मैं उसमें विश्वास नहीं रखता हूँ। परन्तु, सचमुच अपने ढङ्ग से, तुम्हारी तरह नहीं। ओह पादरी, पादरी!" वॉन कोरेन हंसा। उसने पादरी की कमर में दोनों हाथ डाल दिए और प्रसन्न होकर बोलाः "क्यों? तुमकल द्वन्द युद्ध के लिए हमारे साथ चल रहे हो?"

"मुझे मिली हुई आज्ञाएं इसकी इजाजत नहीं देतीं वर्ना मैं जरूर चलता।"

"आज्ञाओं' से तुम्हारा क्या मतलब है ?"

"मेरा धार्मिक संस्कार हो चुका है। मैं उच्च पवित्र स्थिति में हूँ।"

"ओह, पादरी, पादरी," वॉन कोरेन ने हंसते हुए दुहराया। "मुझे तुमसे बातें करना अच्छा लगता है।"

"तुम कहते हो कि तुम आस्था रखते हो," पादरी ने कहा, "यह आस्था किस प्रकार की है ? क्योंकि, मेरे एक चाचा हैं, एक पादरी। वह इतनी आस्था रखते हैं कि अकाल पड़ने पर जब वे खेतों में वर्षा होने के लिए प्रार्थना करने जाते हैं तो अपने साथ अपना छाता और चमड़े का ओवरकोट इस भय के कारण ले जाते हैं कि कहीं घर लौटते समय वर्षा से भीग न जाँय। यह आस्था कही जाती है ! जब वे क्राइस्ट की बातें करते हैं तो उनका चेहरा चमक उठता है और किसान मर्द और औरतें आँसू की धारायें बहाने लगती हैं। वे उस बादल को रोक सकते हैं और उन सारी शक्तियों को जिनकी तुम बातें करते हो, भगा सकते हैं। हाँ, आस्था पर्वतों को हिला देती है।"

पादरी हंसा और वॉन कोरेन के कन्धे पर हाथ मारा।

"हाँ .... " वह कहता गया, "यहाँ तुम बराबर शिक्षा देते रहते हो, समुद्र की गहराइयों को नापते रहते हो, सबलों और निर्बलों को विभाजित करते रहते हो, किताबें लिखते हो और द्वन्दयुद्ध के लिये चुनौती देते रहते हो—और हर चीज जैसी है वैसे ही बनी रहती है, परन्तु, देखो ! कोई वृद्ध मनुष्य अपनी पवित्र आत्मा द्वारा एक शब्द का उच्चारण करता है, या एक नया मुहम्मद, तलवार हाथ में लिए, अरब से घोड़ा दौड़ाता हुआ आता है, और सारी वस्तुएं तितर बितर हो जाती हैं और यूरोप में एक भी इमारत साबित नहीं बचती।"

"अच्छा, पादरी, यह सब तो देवताओं पर निर्भर करता है।"

"आस्था बिना कार्य मृतक के समान है परन्तु आस्थाहीन कार्य उससे भी गये बीते होते हैं—केवल समय का अपव्यय होता है और

कुछ भी नहीं।"

समुद्र-तट पर डाक्टर दिखाई दिया। उसने पादरी और वॉन कोरेन को देखा और उन लोगों के पास आया।

"मुझे यकीन है कि सब इन्तजाम ठीक है," गहरी साँसें लेते हुए उसने पूछा। "गोवोरोव्स्की और बोयको माध्यम रहेंगे। वे सुबह पांच बजे चल देंगे। देखो बादल घिर आये हैं," उसने आसमान की तरफ देखते हुए कहा। "कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता, पानी जरूर पड़ेगा।"

"उम्मीद है कि तुम भी हमारे साथ चल रहे हो?" प्राणि-शास्त्र विशारद ने कहा।

"नहीं, भगवान मेरी रक्षा करे, मैं वैसे ही बहुत परेशान हो चुका हूँ। मेरी जगह उस्तीमोविच जा रहा है। मैंने उससे बातें करली हैं।"

दूर समुद्र पर बिजली चमकी और उसके बाद कड़कने की भारी आवाज सुनाई पड़ी।

"तूफान आने से पूर्व वातावरण कैसा दम घोटने वाला होगया है।" वॉन कोरेन बोला। "मैं शर्त बदता हूँ तुम लायवस्की से मिल चुके हो और उसके सीने से चिपट कर रोते रहे होगे।"

"मैं उसके पास क्यों जाऊँगा?" डाक्टर ने व्यग्र होकर जवाब दिया। "अब और क्या रह गया?"

सूरज डूबने से पहले ही वह लायवस्की से मिलने की आशा में समुद्र तट वाली सड़क पर और गली में कई बार घूम चुका था। वह अपनी जल्दबाजी और मित्रता की उस भावना के आकस्मिक उद्रेक के कारण जो उसके बाद ही उसके मनमें उठी थी, शर्मिन्दा था। वह मजाक सा करते हुए लायवस्की से माफी मांगना, उससे अच्छी तरह बातें करना, उसे तसल्ली देना और उससे यह कहना चाहता था कि द्वन्द-युद्ध मध्ययुगीन बर्बरता की पुनरावृत्ति है परन्तु भगवान ने स्वयं आपस में समझौता कराने के लिए उन्हें द्वन्द युद्ध करने के लिए प्रेरित किया

है, कि दूसरे दिन, क्योंकि दोनों ही अच्छे और उच्च कोटि के बुद्धिमान व्यक्ति हैं, एक दूसरे पर गोली चलाने के बाद, एक दूसरे के महान गुणों को स्वीकार करेंगे और आपस में मित्र बन जायंगे। परन्तु वह लायवस्की से न मिल सका।

"मैं किसलिए उसके पास जाऊँ और उससे मिलूँ?" सोमोलेन्को ने दुहराया। "मैंने उसका अपमान नहीं किया था। महरबानी करके मुझे यह बताओ कि उसने मुझ पर हमला क्यों किया? मैंने उसका क्या अहित किया था? मैं बैठक में जाता हूँ और अचानक बिना किसी बात के : "जासूस"! कैसी मजेदार बात है। यह बताओ कि शुरूआत कैसे हुई थी? तुमने उससे क्या कहा था?"

"मैंने उससे कहा था कि उसकी स्थिति निराशाजनक है। और मेरा कहना ठीक था। सिर्फ ईमानदार व्यक्ति या बदमाश ही किसी·········ही होती है। परन्तु सज्जनो, ग्यारह बज गये और हम लोगों को सुबह जल्दी उठना है।"

अचानक हवा का एक तेज झोंका आया, उसने समुद्र तट पर धूल उड़ाई, उसे भंवर में चारों तरफ घुमाया और जोर से शब्द किया। जो समुद्र के गर्जन में डूब गया।

"आँधी है," पादरी ने कहा, "हम लोगों को भीतर चलना चाहिए। आँखों में धूल भरी जा रही है।"

जब वे लोग अन्दर जा रहे थे, सामोलेन्को ने गहरी साँस ली और अपना टोप पकड़े हुए कहा :

"मेरा ख्याल है कि आज की रात मैं सो नहीं सकूँगा।"

"तुम अपने को परेशान मत करो," वॉन कोरेन हँसा। "तुम आराम से सो सकते हो। द्वन्दयुद्ध का परिणाम कुछ भी नहीं निकलेगा। लायवस्की शान के साथ हवा में गोलियाँ चलायेगा। वह इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं कर सकता, मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि मैं गोली चलाऊँगा ही नहीं। अपने को गिरफ्तार करा देना और लाय-

वस्की के पीछे अपना समय बर्बाद करना—इस लेख की मैं इतनी ऊँची कीमत नहीं चुका सकता। प्रसंगवश पूछ रहा हूँ कि द्वन्द युद्ध करने की क्या सजा मिलती है?"

"गिरफ्तारी, और अगर तुम्हारा प्रतिद्वंद्वी मर जाय तो अधिक से अधिक किले में रहकर तीन साल की सजा भुगतना।"

"सन्त पीटर और सन्त पाल के किले में?"

"नहीं, किसी फौजी किले में, ऐसा मेरा ख्याल है।"

"फिर भी इस भले आदमी को एक सबक तो मिलना ही चाहिए।"

उनके पीछे की तरफ, समुद्र पर बिजली चमकी, जिसने क्षण भर के लिए मकानों की छतों और पहाड़ों को प्रकाशित कर दिया। समुद्र तट वाली सड़क पर मित्र विदा हुए। जब डाक्टर अन्धकार में गायब होगया और उसके पैरों की आवाज आनी बन्द हो गई तो वॉन कोरेन ने चिल्लाकर उससे कहा:

"मैं केवल यह आशा करता हूं कि कल का मौसम हमारे काम में बाधा नहीं डालेगा।"

"इसकी बहुत कुछ सम्भावना है! भगवान करे ऐसा ही हो।"

"गुड-नाइट!"

"रात के बारे में क्या ख्याल है? तुम क्या कहते हो?"

वायु और समुद्र की गर्जन और बिजली की कड़क के कारण सुनना बहुत मुश्किल था।

"यह कुछ नहीं," वॉन कोरेन ने चीख कर कहा और जल्दी से घर की तरफ चल दिया।

१७

'मेरे मस्तिष्क में, दुखों के भार से नत
विचार इकट्ठे होते हैं, एक भारी झुँड के रूप में
स्मृति चुपचाप खोलती है,
उसकी लम्बी, विस्तृत सूची मेरे नेत्रों के आगे।
अनिच्छा पूर्वक और कांपते हुए मैं पश्चाताप करता हूँ
और बुरी तरह पछताता हूँ, व्यर्थ ही,
और वे आँसू कटु होते हैं जिन्हें मैं गिराता हूँ
मैं उन पंक्तियों को मिटाता नहीं हूँ ।'

—पुश्किन

'कल सुबह चाहे वे उसे मार डालें, या उसका मजाक उड़ायें मतलब यह कि उसे जिन्दा छोड़ दें—हर दशा में वह बर्बाद हो गया। चाहे यह अभागी नारी लज्जा और निराशा में आत्महत्या करले या अपने इस दयनीय अस्तित्व को घसीटे जाय, हर दशा में वह बर्बाद हो चुकी है ।'

लायवस्की जब शाम गहरी हो जाने पर, अब भी हाथ मलते हुए अपनी मेज पर बैठा तो यह सोचने लगा। अचानक एक झटके के साथ शोर करती हुई खिड़कियां खुल गईं। कमरे में हवा का एक तीव्र झोंका घुस आया और मेज पर पड़े हुए कागज फड़फड़ा उठे। लायवस्की ने खिड़कियाँ बन्द कर दीं और कागजों को समेटने के लिये नीचे झुका। वह अपने शरीर में किसी नवीनता का अनुभव कर रहा था, एक भद्दापन-सा जिसका उसने पहले कभी भी अनुभव नहीं किया था और अपनी चाल ढाल उसे विचित्र लग रही थी। वह मस्त होकर, अपनी कुहनियों में झटका देता और कन्धों को उचकाता हुआ फिरने

लगा। और जब वह मेज पर आकर बैठा तो दुबारा अपने हाथ मलने लगा। उसके शरीर का लचीलापन जाता रहा था।

मृत्यु के सन्निकट होने पर हरेक को अपने सबसे नजदीकी रिश्तेदार को खत लिखना चाहिए। लायवस्की ने इस बारे में सोचा। उसने कलम उठाई और अपने हाथ से लिखने लगा।

"माँ!"

वह अपनी माँ को उस दयालु परमात्मा के नाम पर, जिसमें वह विश्वास करती थी, यह लिखना चाहता था कि वह उस दुखी नारी को शरण दे और उसके जीवन में थोड़ा सा स्नेह और दया प्रदान करे जो उसके कारण अपमानित हुई थी और एकाकीपन, निर्धनता और निर्बलता की शिकार बनी थी, कि वह उसे क्षमा कर देगी और सब बातों को, और अपने त्याग द्वारा कुछ सीमा तक अपने भयंकर पाप का प्रायश्चित कर सकेगी। परन्तु उसे याद आया कि किस तरह उसकी माँ, एक मजबूत, भारी शरीर वाली वृद्ध स्त्री, गोटेदार टोपी पहने हुए, सुबह बाग में जाया करती थी, पीछे-पीछे उसका साथी छोटे कुत्ते को लेकर साथ चलता था, किस तरह वह एक निश्चित ढंग से माली और नौकरों को डाँटा करती थी और उसका चेहरा कितना घमण्डी और गुस्से से भरा रहता था—उसने इस सब को याद किया और लिखे हुए शब्द को काट दिया।

तीनों खिड़कियों पर बिजली की चमक साफ दिखाई पड़ी और इसके बाद ही बिजली की एक लम्बी और कानों को बहरा कर देने वाली कड़क आई जो एक हल्की गड़गड़ाहट से आरम्भ हुई और इतनी तेज कड़क के साथ समाप्त हुई कि खिड़कियों के शीशे झनझना उठे। लायवस्की उठा, खिड़की के पास गया और अपना माथा शीशे पर टिका दिया। भयानक और तेज तूफान चल रहा था। क्षितिज पर तूफानी बादलों में से बिजली की चमक की सफेद धाराएं समुद्र पर

पड़ रही थीं और उस विशाल जल के विस्तार में उठती हुई काली, ऊँची लहरों को प्रकाशित कर देती थीं। दाहिनी तरफ और बाईं तरफ और निस्सन्देह घर की छत पर भी, बिजली चमक रही थी।

"तूफान!" लायेवस्की बुदबुदाया। उसके हृदय में किसी व्यक्ति से और किसी वस्तु से प्रार्थना करने की तीव्र इच्छा उत्पन्न होरही थी, नहीं कि यह वह बिजली होती या तूफानी बादल ही। "प्यारे तूफान!"

उसे याद आई कि जब वह छोटा था तो जब तूफान आता था तो वह किस तरह बिना टोप लगाये ही बाग में दौड़ता फिरता था और दो सुन्दर बालों वाली लड़कियाँ, जिनकी आँखें नीली थीं, उसके पीछे दौड़ा करती थीं और किस तरह वे लोग पानी में तरबतर हो उठते थे। वे प्रसन्नता से खिलखिला उठते थे परन्तु जब बिजली जोरसे कड़कती थी तो लड़कियाँ छिपने के भाव से उससे चिपट जाती थीं जब कि वह अपने ऊपर क्रास का निशान बनाता था और जल्दी जल्दी दुहराता था: पवित्र, पवित्र, पवित्र.........ओह, वे सब कहाँ चले गए। किस सागर में उन्हें डुबो दिया गया, उन पवित्र, सुन्दर, प्रकाशमान जीवन के क्षणों को! अब उसे तूफान का डर नहीं था, प्रकृति से कोई प्रेम नहीं था, उसका कोई ईश्वर नहीं था। वे सब विश्वास करने वाली लड़कियाँ,जिनसे उसका कभी परिचय था,अब तक उसके और उसी जैसे दूसरों के द्वारा बर्बाद हो चुकी थीं। अपने जीवन भर उसने अपने बागमें एक भी पेड़ नहीं लगाया, घास का एक तिनका भी नहीं उगाया, और जीवितों के बीच रहते हुए उसने एक मक्खी को भी रक्षा नहीं की, उसने नाश, बर्बादी और झूठ के अलावा और कुछ भी नहीं किया था......'

"क्या मेरे बीते हुए जीवन में जो कुछ था, वह बुराई नहीं थी?' उसने स्वयं से पूछा, किसी मधुर सुखद स्मृति को पकड़ने का

प्रयत्न करते हुए जिस तरह पहाड़ की चोटी पर से गिरता हुआ मनुष्य झाड़ियों को पकड़ने की कोशिश करता है।

स्कूल ? विश्वविद्यालय ? परन्तु वह सब छलना थी। उसने अपने काम की उपेक्षा की थी और जो कुछ भी सीखा था उसे भुला दिया था। अपने देश की सेवा ? वह भी, छलना थी क्योंकि उसने अपना कर्त्तव्य पालन नहीं किया था, बिना कुछ किए हुए तनख्वाह ली थी और यह राज्य के प्रति इतनी घिनौनी गद्दारी थी जिसके लिए उसे सजा नहीं मिली थी।

उसके मन में सत्य के प्रति कोई आकर्षण नहीं था और उसने सत्य को पाने की चेष्टा भी नहीं की थी। झूठ और पाप से विजड़ित होकर उसकी आत्मा सोती रही थी या मूक थी। एक अपरिचित की तरह, दूसरे ग्रह से आए हुए किसी विदेशी की तरह उसने जनसाधारण के जीवन में कोई भाग नहीं लिया था, उनके दुखों, उनके विचारों उनके धर्म, उनके विज्ञान, उनके प्रयत्नों और उनके संघर्षों के प्रति उदासीन रहा था। उसने एक भी अच्छे शब्द का उच्चारण नहीं किया था, एक भी ऐसी पंक्ति नहीं लिखी थी जो व्यर्थ और गन्दी न हो, उसने अपने साथियों की रत्ती भर भी सहायता नहीं की थी, परन्तु उनकी रोटी खाई थी, उनकी शराब पी थी, उनकी स्त्रियों को बहकाया था, उनके विचारों पर जीवन बिताया था और अपनी इस घिनौनी, परोपजीवी जिन्दगी को उनकी और अपनी दृष्टि में न्यायसंगत सिद्ध करने के लिए उसने उन लोगों से अपने को ऊँचा और अच्छा दिखाने का प्रयत्न किया था। झूठ, झूठ, झूठ......

उसने उस शाम को मुरीदोव के यहाँ जो देखा था उसे विस्तार से याद किया और असहनीय घृणा और दुख की वेदना से भर उठा। किरिलिन और आश्चमियानोव घृणित थे परन्तु वे लोग सिर्फ उसी को

आगे बढ़ा रहे थे जिसे उसने प्रारम्भ कर दिया था । वे लोग उसके शिष्य और अपराध में उसका साथ देने वाले थे। इस युवती—निर्बल नारी ने एक भाई से भी अधिक उसका विश्वास किया था और उसने इसे अपने पति से, अपने मित्रों से और अपने देश से छुड़ा दिया था और यहाँ ले आया था—इस गर्मी, बुखार और नीरसता में । और आज से वह एक दर्पण की तरह साफ साफ यह सोचने के लिए मजबूर थी कि वह कितना आलसी, कितना शैतान और कितना झूठा था। और यही सब कुछ था जिससे उसे अपने कमजोर, नीरस, दयनीय जीवन को भरना पड़ा था। फिर वह उससे ऊब उठा था, उससे घृणा करने लगा था और उसमें उसे छोड़ देने का साहस नहीं था। उसने उसे अपने झूठ के जाल में अधिक से अधिक कसने का प्रयत्न किया था···

इन लोगों ने बाकी का बचा हुआ काम पूरा कर दिया था।

लायवस्की मेज पर बैठा, फिर उठ खड़ा हुआ और खिड़की के पास गया। कभी वह मोमबत्ती को बुझा देता और कभी फिर जला देता था। उसने जोर जोर से अपने को कोसा, रोया और विलाप किया और क्षमा माँगी। हताश होकर कई बार वह मेज की तरफ दौड़ा और लिखा : "मां" !

अपनी माँ के सिवाय उसका कोई भी रिश्तेदार या प्यारा मित्र नहीं था। मगर उसकी माँ किस तरह उसकी मदद करती ? और वह कहाँ थी ? उसके मन में उठा कि वह दौड़ कर नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना के पास जाय, उसके पैरों पर गिरे, उसके हाथों और पैरों को चूमे, उससे माफी माँगे; परन्तु वह उसकी शिकार थी और वह उससे डरता था मानो वह मर गई हो।

"मेरी जिन्दगी बर्बाद हो गई," हाथ मलते हुए उसने दुहराया। "मैं अभी तक जिन्दा क्यों हूँ, मेरे भगवान् !······"

उसने स्वर्ग से अपने धुँधले नक्षत्र को गिरा दिया था; वह नीचे

गिर पड़ा था और रात्रि के अन्धकार में उसका रास्ता गायब होगया था। यह कभी भी लौटकर आकाश को नहीं जायगा क्योंकि जिन्दगी सिर्फ एक बार दी जाती है और दूसरी बार फिर कभी नहीं आती। अगर वह बीते हुए दिनों और वर्षों को वापस ला सका होता तो वह धोखे की जगह सचाई, आलस्य के स्थान पर काम, नीरसता के स्थान पर प्रसन्नता ला देता, उन लोगों को पवित्रता वापस कर देता जिनकी पवित्रता उसने छीन ली थी। वह ईश्वर और भलाई को पा लेता परन्तु यह इसी तरह असम्भव था जिस तरह कि टूटे हुए नक्षत्र को फिर आकाश में पहुँचाना, और क्योंकि यह असम्भव था, वह हताश हो उठा।

जब तूफान रुक गया वह खुली हुई खिड़की पर जा बैठा और जो कुछ भी उसके सामने था उसके विषय में शान्त होकर सोचने लगा। सम्भवतः वॉन कोरेन उसे मार डालेगा। उस व्यक्ति का जीवन का स्पष्ट और दृढ़ सिद्धान्त, सड़े गले और बेकार के नाश का समर्थन करता है। अगर यह उस खतरनाक क्षण में बदल जाय तो यह उस घृणा और क्रोध का कारण होगा जो उसे बचाएगा। अगर वह अपना निशाना चूक जाता या अपने घृणित प्रतिद्वन्दी का मजाक उड़ाने के लिए सिर्फ उसे घायल कर देता या हवा में गोली छोड़ता तब वह क्या करता? यह कहा जा सकता है?

"पीटर्सबर्ग चला जाऊँ?" लायवस्की ने स्वयं से पूछा। परन्तु इसका मतलब उसी पुरानी जिन्दगी को फिर से शुरू करना होगा जिसे वह कोसता रहता था। और वह व्यक्ति जो एक देश से दूसरे देश को जाने वाली चिड़ियों की तरह स्थान बदलने में अपनी मुक्ति ढूँढते हैं, उन्हें कुछ भी नहीं मिलता क्योंकि उसके लिए सारी दुनियाँ एक सी ही है। मनुष्यों को मुक्ति खोजना? किसमें और कैसे? सामोलेन्को की दयालुता और उदारता उसे उससे ज्यादा नहीं बचा सकती जितनी

कि पादरी की हँसी या वॉन कोरेन की घृणा। उसे मुक्ति सिर्फ स्वयं में ही ढूँढनी चाहिये और अगर नहीं मिलती तो समय क्यों बर्बाद किया जाय? उसे आत्महत्या कर लेनी चाहिये, यही एक रास्ता था...

उसने एक गाड़ी की आवाज सुनी। सुबह की रोशनी फैलने लगी थी। गाड़ी आई, मुड़ी और गीली बालू पर चरमराती हुई घर के पास रुक गई। गाड़ी में दो आदमी थे।

"एक मिनट ठहरो, मैं अभी आया," लायवस्की ने उन लोगों से खिड़की में से कहा। "मैं सो नहीं रहा हूँ। अभी समय तो नहीं हुआ?"

"हाँ, चार बजे हैं। जब तक कि हम वहाँ पहुँचेंगे......"

लायवस्की ने अपना ओवरकोट और टोपी पहन ली, जेब में कुछ सिगरेटें रखीं और हिचकिचाता हुआ खामोश खड़ा होगया। उसने महसूस किया कि कोई और काम है जिसे उसको करना चाहिये। सड़क पर उसके सहायक धीरे-धीरे बातें कर रहे थे और घोड़े फुफकार रहे थे। और इस शब्द ने सुबह की नमी में, जब हरेक सो रहा था और आसमान में हलकी रोशनी फैल रही थी, लायवस्की की आत्मा को उद्विग्नता से भर दिया जो अशुभ की पूर्व कल्पना के समान थी, और वह अपने सोने के कमरे में चला गया।

नादयेज़्दा फ्योदोरोव्ना सिर से पैर तक एक कम्बल में लिपटी हुई अपने बिस्तर पर लेटी हुई थी। वह निस्तब्ध थी। उसका सारा शरीर, विशेष रूप से उसका सिर, एक मिश्री 'ममी' का सा दृश्य उपस्थित कर रहा था। उसकी तरफ चुपचाप देखते हुये लायवस्की ने मन ही मन उससे क्षमा मांगी और सोचा कि अगर स्वर्ग खाली नहीं है और सचमुच वहाँ कोई ईश्वर है तो वह उसकी रक्षा करेगा। अगर वहाँ ईश्वर नहीं है तो अच्छा हो कि वह बर्बाद हो जाय—उसके जीवित रह जाने के लिये फिर कुछ भी नहीं रह जाता।

एकाएक वह उछल पड़ी और बिस्तर पर उठ कर बैठ गई। अपना पीला चेहरा ऊपर उठाते हुए और लायवस्की की तरफ भयभीत होकर देखते हुए उसने पूछा :

"तुम हो ! तूफान समाप्त हो गया ?"

"हाँ !"

उसने याद किया। दोनों हाथ अपने सिर पर रख लिये और ऊपर से लेकर नीचे तक काँप उठी।

"मैं कितनी दुःखी हूं !" उसने कहा—"काश कि तुम जानते कि मैं कितनी दुःखी हूं ! मैं उम्मीद कर रही थी," उसने आँखें आधी बन्द करते हुए कहा—"कि तुम मुझे मार डालोगे या बारिस और तूफान में घर से बाहर निकाल दोगे परन्तु तुम देर कर रहे हो, देर कर रहे हो..."

प्यार से और आत्मीयतापूर्वक लायवस्की ने अपने दोनों हाथों में उसे बांध लिया और उसके हाथों और घुटनों को अपने चुम्बनों से ढक दिया। फिर जब वह कुछ बुदबुदाई और बीते हुए क्षणों की याद कर कांप उठी तो उसने उसके बालों को थपथपाया और उसके चेहरे की तरफ देखते हुए महसूस किया कि यह दुःखी, पापिष्ठा नारी ही एक ऐसा प्राणी है जो उसकी अपनी प्यारी है, जिसका स्थान कोई और ले भी नहीं सकता।

जब वह घर से बाहर आया और गाड़ी में बैठा तो वह जीवित घर लौटने की आकांक्षा कर रहा था।

१८

पादरी उठा, कपड़े पहने, अपनी गांठदार छड़ी उठाई और चुपचाप घर से बाहर खिसक गया। अन्धकार छा रहा था और एक मिनट तक तो जब वह सड़क पर आया, उसे अपनी छड़ी तक भी नहीं दिखाई दी। आसमान में एक भी तारा नहीं था और ऐसा लग रहा था मानो फिर पानी बरसेगा। गीली बालू और समुद्र की गन्ध आ रही थी।

"यह उम्मीद की जा सकती है कि पहाड़ी लोग हमारे ऊपर हमला नहीं करेंगे," पादरी ने सोचा, सड़क पर अपनी छड़ी की खट खट सुनते हुए और यह देखते हुए कि रात्रि की उस स्तब्धता में वह ध्वनि कितनी तेज और एकाकी लग रही है।

जब वह कस्बे से बाहर निकल आया, उसे सड़क और छड़ी दोनों दीखने लगीं। काले आसमान में इधर उधर काले बादलों के टुकड़े छा रहे थे और कभी उनमें से होकर एक तारा बाहर झाँकता और भयभीत सा होकर एक आँख मिचकाता। पादरी ऊँचे पथरीले किनारे के सहारे-सहारे चलता रहा। उसे समुद्र दिखाई नहीं दे रहा था। समुद्र नीचे सो रहा था और इसकी दिखाई न पड़ने वाली लहरें तट पर आलस्य और उदासी से भरी हुईं टकरा रही थीं, मानो कह रही हों—"उफ !" और कितने धीमे-धीमे। एक लहर टकराई—पादरी ने आठ कदम गिने, फिर दूसरी टकराई और उसने ६ कदम गिने, बाद में तीसरी टकराई। पहले ही की तरह कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था और उस अन्धकार में केवल समुद्र का आलस्यपूर्ण, उनींदा स्वर ही सुनाई पड़ता था। कोई भी उस अनन्त, अकल्पनीय समय की ध्वनि सुन सकता था जब ईश्वर अशान्ति से ऊपर उठा था।

पादरी को विलक्षण अनुभूति हुई। उसने आशा की कि भगवान उसे नास्तिकों के संसर्ग में रहने के कारण सजा नहीं देगा और यहाँ तक कि उन लोगों के द्वन्दयुद्ध को देखने जाने के लिये भी सजा नहीं देगा। यह द्वन्दयुद्ध असङ्गत, रक्तपात हीन, वाहियात होगा परन्तु फिर भी चाहे वह ऐसा क्यों न हो, यह एक बहुत गन्दा दृश्य होगा और एक धर्मोप-देशक व्यक्ति के लिये उस स्थान पर उपस्थित रहना शोभनीय नहीं होगा। वह रुका और ताज्जुब करने लगा—क्या उसे वापस चला जाना चाहिये? परन्तु एक गहन, व्यग्रतापूर्ण जिज्ञासा ने उसके सन्देहों पर काबू पा लिया और वह आगे बढ़ा।

"यद्यपि ये लोग नास्तिक हैं, फिर भी अच्छे आदमी हैं और उनकी रक्षा होगी," उसने स्वयं को विश्वास दिलाया। "निश्चित रूप से उनकी रक्षा होगी," उसने सिगरेट सुलगाते हुए जोर से कहा।

किस आदर्श को सम्मुख रख कर मनुष्यों के गुणों को अच्छी तरह से परखा जाय? पादरी को अपने दुश्मन, उस क्लर्कों वाले स्कूल के इन्स्पेक्टर की याद आई, जो ईश्वर में विश्वास रखता था, संयम से रहता था और द्वन्दयुद्ध नहीं लड़ता था, परन्तु वह पादरी को बालू मिली हुई रोटी खिलाता था और एक बार तो उसने पादरी का कान ही उखाड़ लिया होता। अगर मानव जीवन का निर्माण इतने कलाहीन ढङ्ग से किया गया था कि हरेक इस निर्दयी और बेईमान इन्स्पेक्टर की इज्जत करता था जो सरकारी आटा चुराता था और जिसके स्वास्थ्य और मुक्ति के लिये स्कूलों में प्रार्थना की जाती थी, तो क्या लायवस्की और वॉन कोरेन जैसे व्यक्तियों से केवल इसी कारण घृणा करना उचित था कि वे भगवान में विश्वास नहीं रखते थे! पादरी इस प्रश्न को कसौटी पर कस रहा था, परन्तु उसे याद हो आया कि कल सामोलेन्को कितना भद्दा लग रहा था और इसने उसकी विचारधारा को तोड़ दिया। कल उन लोगों को कैसा मजा आयेगा। पादरी ने कल्पना की कि कैसे वह एक झाड़ी में

बैठ जायेगा और देखेगा और दूसरे दिन डिनर के समय जब वॉन कोरेन डींग हांकने लगेगा तो वह पादरी हँसने लगेगा और उसे द्वन्दयुद्ध का पूरा विस्तृत वर्णन बताना प्रारम्भ कर देगा।

"तुम्हें यह सब कैसे मालूम हुआ ?" प्राणि-शास्त्र-विशारद पूछने लगेगा।

"अच्छा, यह बात है ! मैं घर पर ही रहा परन्तु इस बारे में सब कुछ जानता हूँ।"

इस द्वन्दयुद्ध के ऊपर एक हास्यपूर्ण प्रहसन लिखना अच्छा रहेगा। उसका ससुर इसे पढ़ेगा और हँसेगा। उसके ससुर के लिये एक अच्छी तरह लिखी हुई कहानी का महत्व गोश्त या शराब से कहीं अधिक है।

उसको सामने येलो नदी की घाटी दिखाई दी। वर्षा के कारण नदी की धारा अधिक चौड़ी और ज्यादा भयङ्कर हो रही थी और पहले की तरह कलकल शब्द करने के स्थान पर गरज रही थी। प्रकाश होने लगा था। भूरा और धुंधला प्रभात, पश्चिम की तरफ तूफानी बादलों की तरफ दौड़ते हुये भूरे बादल, कुहरे से ढकी हुई पहाड़ी चोटियाँ और भीगे हुए वृक्ष, यह सारा दृश्य पादरी को भद्दा और भयानक लगा। झरने में उसने हाथ मुँह धोया, अपनी सुबह की प्रार्थना दुहराई और गरम चाय और बिस्कुटों के लिये लालायित हो उठा जिनके साथ खट्टी मलाई होती जो उसे उसके ससुर के घर रोज सुबह खाने को मिलती थी। उसे अपनी स्त्री की और फिर न लौटने वाले दिनों की याद आई जिसे वह पियानो पर गाया करती थी। वह कैसी स्त्री थी ? उसकी स्त्री से उसका परिचय कराया गया था, सगाई पक्की हुई थी और शादी हो गई थी—यह सब केवल एक सप्ताह में ही हो गया था। वह उसके साथ एक महीने से कम ही रह पाया था जब उसे यहाँ आने की आज्ञा मिली थी

जिससे उसे इतना भी समय नहीं मिला था कि वह यह जान ले कि उसकी स्त्री कैसी थी। तो भी उसे उसका वियोग खल उठा।

"मुझे उसके लिये एक सुन्दर सा पत्र लिखना चाहिए''''''" उसने सोचा। 'दूहान' पर लगा हुआ झण्डा पानी में भीग जाने के कारण नीचे लटका हुआ था और 'दूहान' खुद पानी में भीगा होने के कारण पहले से भी ज्यादा काला और नीचा दिखाई दे रहा था। दरवाजे के पास एक गाड़ी खड़ी थी। केरबालाय, दो पहाड़ियों और एक तातारी स्त्री—जो पाजामा पहने हुई थी, निस्सन्देह वह या तो उसकी पत्नी थी या बेटी—के साथ 'दूहान' के भीतर से किसी चीज के बोरे निकाल रहा था और उन्हें गाड़ी में बिछाई गई घास के ऊपर रखता जा रहा था।

गाड़ी के पास गधों का एक जोड़ा नीचे सिर किये खड़ा था। जब उन लोगों ने सब बोरे लाद दिये तो वह तातारी स्त्री और वे पहाड़ी उन्हें घास से ढकने लगे, और केरबालाय जल्दी से गधों का साज ठीक करने लगा।

"शायद, चुँगी वाले माल की चोरी हो रही है," पादरी ने सोचा।

इसी स्थान पर सूखी हुई पत्तियों वाला चीड़ का वह उखड़ा हुआ वृक्ष पड़ा था। यहीं जलाई हुई आग का काला धब्बा था। उसे उस पिकनिक और उसकी सब घटनाओं की याद हो आई—वह आग, पहाड़ियों का वह गाना, बड़ा पादरी बनने का उसका मधुर स्वप्न और गिरजे का वह जलूस'''। काली नदी वर्षा के कारण ज्यादा चौड़ी और ज्यादा काली हो रही थी। पादरी सावधानी से सकरे पुल पर होकर गुजरा, जिस तक इस समय गन्दे पानी के झाग पहुँचने लगे थे और झङ्गली झाड़ियों में से होता हुआ अनाज सुखाने वाली झोंपड़ी के पास जा पहुँचा।

"बहुत तेज दिमाग है," उसने घास पर पसरते हुए और वॉन

कोरेन के बारे में सोचते हुए कहा । "सुन्दर दिमाग—भगवान उसकी तन्दुरुस्ती कायम रखे, सिर्फ वह कुछ कठोर है · · "

वह लायवस्की से और लायवस्की उससे घृणा क्यों करता है ? ये लोग द्वन्दयुद्ध लड़ने क्यों जा रहे थे ? अगर वे लोग बचपन से ही गरीबों में पले होते, जैसे कि पादरी पला था, अगर उन लोगों का पालन पोषण अज्ञानी, कठोर-हृदय, दूसरों का सहारा लेने वाले, गँवार और बदतमीज़ लोगों, जो रोटी के एक टुकड़े के लिये छीना झपटी करते हैं, फर्श पर थूकते हैं और भोजन और प्रार्थना के समय खांसते रहते हैं, के बीच होता, अगर सुखद वातावरण में बचपन से ही रह कर वे बिगड़ न जाते और अगर उन चुने हुए मित्रों के बीच न रहे होते तो वे एक दूसरे पर कैसे टूट पड़ते, कितनी उत्सुकता के साथ एक दूसरे की कमजोरियों की उपेक्षा कर देते और एक दूसरे की विशिष्ठ विशेषताओं को क्यों इतना महत्व दे उठते । क्योंकि इस संसार में बाहर से भी भले दिखाई देने वाले व्यक्ति कितने थोड़े हैं। यह सत्य था कि लायवस्की अस्थिर, दुराचारी, विचित्र व्यक्ति था परन्तु उसने चोरी नहीं की थी, फर्श पर जोर से नहीं थूका, उसने अपनी स्त्री का अपमान नहीं किया था और न यह कहा था – "जब तक तुम्हारा पेट न फट जायगा तुम खाती रहोगी, परन्तु काम करना नहीं चाहती," उसने किसी भी बच्चे को रस्सियों से नहीं पीटा था और न अपने नौकरों को बदबूदार गोश्त खाने को दिया था— निस्सन्देह ये कारण उसके प्रति दया दिखाने के लिये पर्याप्त थे । इसके अलावा, अपनी कमजोरियों के कारण वही सबसे ज्यादा तकलीफ उठा रहा था जैसे कि एक बीमार अपने घावों के कारण उठाता है । बनिस्वत इसके कि उदासीनता और किसी तरह की गलत-फहमी की वजह से पतन, नाश, वंश परम्परा और इसी तरह की अन्य समझ में न आने वाली आपस में उलझी हुई समस्याओं की तरफ देखने से यह अच्छा नहीं है कि जरा और नीचे उतर कर वे अपनी सम्पूर्ण घृणा और क्रोध

को उस सड़क की तरफ लगा दें जहाँ सारी गलियाँ अज्ञान के कारण कराहों से, लालच से, लड़ाई झगड़ों से, गन्दगी से, कसम खाने से और औरतों की चीखों से गूंजती रहती हैं......।

किसी गाड़ी की आवाज ने पादरी की विचारधारा को भङ्ग कर दिया। उसने दरवाजे से बाहर झांका और एक गाड़ी में बैठे हुए तीन व्यक्ति देखे—लायवस्की, शेरकोवस्की और डाकघर का सुपरिन्टेन्डेन्ट।

"रुको!" शेरकोवस्की ने कहा।

तीनों गाड़ी से बाहर निकल आये और एक दूसरे की तरफ देखने लगे।

"वे लोग अभी तक नहीं आये," कीचड़ झाड़ते हुए शेरकोवस्की बोला। "क्यों? जब तक कि खेल शुरू होता है तब तक चलो कोई अच्छा सा स्थान ढूँढ लें। यहाँ मुड़ने के लिये भी काफी जगह नहीं है।"

वे नदी के ऊपर की तरफ गये और शीघ्र ही दृष्टि से ओझल हो गये। तातरी कोचवान गाड़ी के कन्धे पर सिर लटका कर बैठा बैठा सो गया। दस मिनट इन्तजार करने के बाद पादरी, झोंपड़ी से बाहर निकला और अपना काला टोप उतारते हुए जिससे कि कोई उसे देख न ले, झाड़ियों और मक्के की कतारों में होकर, किनारे के साथ साथ, रेंगता और चारों तरफ देखता हुआ आगे बढ़ा। घास और मक्का भीगी थी। झाड़ियों और पेड़ों से पानी की बड़ी बड़ी बूंदे उसके सिर पर टपक पड़ती थीं। "अपमानजनक!" अपनी गीली और कीचड़ में सनी हुई स्कार्ट उठाते हुए वह बड़बड़ाया, "अगर मुझे यह पता होता तो मैं कभी न आता।"

शीघ्र ही उसे आवाजें सुनाई पड़ीं और वे लोग दिखाई दिये। लायवस्की एक खुले हुए मैदान में पीठ झुकाए और कमीज की बाहों में हाथ घुसेड़े इधर से उधर तेजी से टहल रहा था। उसके सहायक पानी के किनारे सिगरेट जलाते हुए खड़े थे।

"अद्भुत," पादरी ने लायवस्की की विचित्र चाल को देखकर सोचा, "वह बुड्ढा सा दिखाई देता है।"

"यह उनकी कितनी बदतमीज़ी है!" डाकघर के सुपरिन्टेन्डेन्ट ने अपनी घड़ी देखते हुए कहा। "शायद देर से आना उनकी तहज़ीब है परन्तु मेरे ख्याल से यह गन्दी आदत है।"

शेश्कोवस्की ने जो एक लम्बा तगड़ा काली दाढ़ी वाला व्यक्ति था, सुना और कहा :

"वे आ रहे हैं!"

———

१६

"मेरी जिन्दगी में यह पहला मौका है जब मैं यह देख रहा हूँ! कितना भव्य!" खुले मैदान की तरफ इशारा करते और पूरब की तरफ अपना हाथ फैलाते हुए वॉन कोरेन ने कहा। "देखो : हरी किरणें!"

पूरब में, पहाड़ों के पीछे से प्रकाश की दो हरी रेखाएं उठीं जो सचमुच सुन्दर थीं। सूरज निकल रहा था।

"गुड मॉर्निंग!" लायवस्की के सहायकों की तरफ देखकर कहते हुए प्राणि-शास्त्र विशारद आगे बढ़ा। "मुझे देर तो नहीं हुई, क्यों, हो गई क्या?"

उसके पीछे पीछे उसके सहायक बोइको और गोवोरोव्स्की चले जो उसी कद के दो बहुत कम उम्र के अफसर थे और सफेद वर्दी पहने हुए थे। उसके साथ ही उस्तीमोविच भी चला जो दुबला पतला और लोगों से दूर रहने वाला डाक्टर था। उसके एक हाथ में एक थैला था और दूसरे हाथ में, हमेशा की तरह, एक बेंत जिसे वह अपनी पीठ की तरफ किये हुए था। थैले को जमीन पर रखते हुए और बिना किसी से भी नमस्कार किये उसने दूसरा हाथ भी पीठ के पीछे कर लिया और मैदान में इधर—उधर घूमने लगा।

लायवस्की ने उस व्यक्ति की सी थकान और भद्दपन का अनुभव किया जो शायद जल्दी ही मर जायगा और इसीलिए सब की उत्सुकता का केन्द्र बना हुआ है। वह जल्दी से जल्दी मारा जाना या घर ले जाया जाना चाह रहा था। उसने अपने जीवन में अब सबसे पहले सूरज को उगते हुए देखा। उषा की लालिमा, प्रकाश की हरी किरणें, नमी और

भीगे बूट पहने हुए आदमी उसे ऐसे लगे जिनसे उनकी जिन्दगी का कोई सम्बन्ध नहीं था, व्यर्थ और परेशान करने वाले। इन सबका उस रात से जो उसने गुजारी थी, उसके विचारों और भावनाओं से कोई सम्बन्ध नहीं था इसलिए वह द्वन्द्वयुद्ध का बिना इन्तजार किये खुशी से चला जा सकता था।

वॉन कोरेन स्पष्ट रूप से उत्तेजित हो रहा था और इसे छिपाने की कोशिश कर रहा था, यह दिखाते हुए कि वह उस हरे प्रकाश में और किसी भी वस्तु से अधिक रुचि ले रहा है। सहायक परेशान थे और एक दूसरे की तरफ इस तरह से देख रहे थे कि वे लोग यहाँ क्यों थे और उन्हें क्या करना था।

"मेरा ख्याल है, महाशयो, कि हमें और आगे जाने की जरूरत नहीं है," शेरकोवस्की ने कहा। "यह स्थान ठीक रहेगा!"

"हाँ, बेशक," वॉन कोरेन ने सहमति प्रकट की।

खामोशी छा गई। उस्तीमोविच, इधर उधर टहलते हुए अकस्मात तेजी से लायवस्की की तरफ मुड़ा और धीमी आवाज में, उसके मुँह के पास सांस लेता हुआ बोला:

"शायद उन लोगों ने तुम्हें मेरी शर्तें नहीं बताई हैं। दोनों पक्ष मुझे पन्द्रह पन्द्रह रूबल देंगे और अगर एक पक्ष मारा जाता है तो बचा हुआ पक्ष तीस रूबल देगा।"

लायवस्की इस व्यक्ति से पहले से परिचित था परन्तु इस बार पहली दफा उसने उसके ज्योतिहीन नेत्रों, कड़ी मूछों और दुबली पतली गर्दन को अच्छी तरह देखा। वह डाक्टर न होकर पैसे का लालची था। उसकी साँस में से गाय के गोश्त की गन्दी बदबू आ रही थी।

"इस दुनियाँ में कैसे कैसे आदमी हैं!" लायवस्की ने सोचा और जवाब दिया, "बहुत अच्छा"

डाक्टर ने सिर हिलाया और फिर इधर से उधर टहलने लगा और यह स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि उसे पैसे की जरा भी परवाह नहीं थी लेकिन उसने सिर्फ नफरत की वजह से यह कहा था। प्रत्येक ने अनुभव किया कि प्रारम्भ करने का समय हो गया है या जो कुछ भी प्रारम्भ हो चुका है उसे समाप्त कर देने का। परन्तु प्रारम्भ करने या समाप्त करने के बजाय वे लोग इधर उधर खड़े रहे, घूमते रहे और सिगरेट पीते रहे। नौजवान अफसर, जो अपने जीवन में पहली बार एक द्वन्दयुद्ध के समय उपस्थित हुए थे और जो अब भी इस नागरिक, और उनकी समझ में बेकार के द्वन्दयुद्ध में मुश्किल से यकीन कर पा रहे थे, उन्होंने अपनी वर्दी का निरीक्षण किया और बाहें थपथपाई। शेरकोवस्की उनके पास गया और धीरे से बोला: "महाशयो, हम लोगों को इस द्वन्दयुद्ध को रोकने की पूरी कोशिश करनी चाहिए; उन लोगों में समझौता हो ही जाना चाहिए।"

वह लाल पड़ गया और आगे बोला:

"किरिलिन कल रात को मेरे पास आया था और शिकायत कर रहा था कि लायवस्की ने उसे नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना के साथ देख लिया था और इसी तरह की अनेक बातें बकता रहा था।"

"हाँ, हम लोगों को भी मालूम है," बोइको ने कहा।

"अच्छा, देखिये, तब······लायवस्की के हाथ कांप रहे हैं और इस तरह···वह पिस्तौल से मुश्किल से पकड़ सकता है। उसके साथ लड़ना वैसा ही अत्याचार है जैसा कि किसी शराब के नशे में गाफिल या मोतीझरा के बीमार के साथ लड़ना। अगर समझौता नहीं होता है तो महाशयो! हम लोगों को इस लड़ाई को रोक देना चाहिए या कुछ न कुछ करना चाहिए···यह इतना गन्दा काम है, मैं इसे देखना भी बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

"वॉन कोरेन से बातें कीजिये।"

"मैं द्वन्दयुद्ध के नियम नहीं जानता, उन्हें भाड़ में जाने दो और न मैं उससे बात ही करना चाहता हूँ। शायद वह यह सोचेगा कि लायवस्की डरता है और उसी ने मुझे उसके पास भेजा है, परन्तु वह जो चाहे सो सोच सकता है—मैं उससे बात करूँगा।"

शेश्कोवस्की हिचकिचाता कुछ लंगड़ाता हुआ वॉन कोरेन के पास गया, मानो उसका पैर सो गया हो और जब वह गला साफ करता हुआ उसकी तरफ जा रहा था उसका सारा शरीर आलस्य की मूर्ति सा दिखाई दे रहा था।

"कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें मुझे आपसे कह देना चाहिए,साहब," उसने वॉन कोरेन की कमीज पर बने हुए फूलों को गौर से देखते हुए कहना शुरू किया। "यह व्यक्तिगत है। मैं द्वन्दयुद्ध के नियमों को नहीं जानता, वे भाड़ में जाय और मैं जानना नहीं चाहता और मैं इस मामले को एक सहायक या वैसी ही और किसी नजर से नहीं देखता परन्तु एक आदमी की नजर से देखता हूँ और मुझे इस बारे में यही कहना है।"

"अच्छा! फिर?"

"जब सहायक लोग समझौते की बात सुझाते हैं तो आमतौर पर उनकी बात नहीं सुनी जाती; यह सिर्फ तकल्लुफ समझा जाता है, अहङ्कार और ऐसा ही कुछ। परन्तु मैं विनम्र होकर आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इवान आन्द्रे इच की तरफ ध्यानसे देखें। कहना चाहिए कि आज वह अपनी साधारण स्थिति में नहीं है—उसका दिमाग ठीक नहीं है और वह रहम के काबिल है। उसे दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा है। मैं अफवाहों को सहन नहीं कर सकता······"

शेश्कोवस्की लज्जा से लाल हो उठा और चारों तरफ देखने लगा।

"परन्तु द्वन्दयुद्ध को ध्यान में रखते हुए मैं आपको यह सूचित

ब र देना आवश्यक समझता हूँ कि कल रात लायवस्की ने अपनी स्त्री को मुर्दोव के यहाँ किसी दूसरे के साथ देखा था।"

"कितना घृणित!" प्राणि-शास्त्र-विशारद बड़बड़ाया। वह पीला पड़ गया, घुन्नाया और जोर से थूका "थू!"

उसका नीचे वाला होंठ काँपा। वह शेश्कोवस्की से दूर हट गया, अधिक न सुनने की इच्छा से और मानो कि उसने अचानक कोई कड़वी चीज चख ली हो, फिर जोर से थूका और उस सुबह पहली बार लाय-वस्की की तरफ घृणा से देखा। उसकी उत्तेजना और व्यग्रता समाप्त हो गई। उसने अपना सिर हिलाया और जोर से कहा :

"सज्जनो, हम लोग किस बात का इन्तजार कर रहे हैं, मैं यह जानना चाहूँगा? शुरू क्यों नहीं करते?"

शेश्कोवस्की ने अफसरों की तरफ देखा और कन्धे उचकाये।

"सज्जनो," उसने बिना किसी व्यक्ति विशेष को सम्बोधित करते हुए जोर से कहा,—"सज्जनो, हम लोग प्रस्ताव करते हैं कि आप लोग समझौता कर लें।"

"हमें शीघ्रता करनी चाहिए और तकल्लुफ से जल्दी छुटकारा पा लेना चाहिए," वॉन कोरेन बोला। "समझौते पर विचार किया जा चुका है। अब आगे और क्या रीति निभानी है? सज्जनो, शीघ्रता कीजिये। समय हमारा इन्तजार नहीं करेगा।"

"परन्तु फिर भी हम समझौते पर जोर देते हैं," शेश्कोवस्की ने एक अपराधी के से स्वर में कहा, उस आदमी की तरह जिसे दूसरों के मामलों में दखल देने को मजबूर किया गया हो। वह लाल पड़ गया, सीने पर सिर झुका लिया और कहने लगा : "सज्जनो, हम लोग इस अपराध को द्वन्दयुद्ध से सम्बन्धित करने के कोई कारण नहीं पाते। द्वन्दयुद्धों और एक दूसरे के प्रति ऐसे अपराध करने में जो कभी-कभी इन्सानी कमजोरियों की वजह से हो जाते हैं, कोई समानता नहीं है।

आप लोग युनिवर्सिटी में शिक्षा पाये हुए और सभ्य व्यक्ति हैं और निस्सन्देह आप लोग इस द्वन्दयुद्ध में एक बेवकूफी और गुजरे दिनों का रिवाज और ऐसी ही अन्य बातों के अलावा और कुछ भी नहीं देखते। हम लोगों का इस बारे में यही दृष्टिकोण है वर्ना हम लोग नहीं आते क्योंकि हम लोग इस बात की आज्ञा नहीं दे सकते कि हमारे सामने मनुष्य एक दूसरे पर गोलियाँ चलायें या ऐसे कोई काम करें।" शेश्कोवस्की ने अपने माथे का पसीना पोंछा और कहने लगा: "सज्जनो, अपनी गलतफहमियों को खत्म कर दो, हाथ मिलाओ, और हम लोगों को घर जाने दो और इस शान्ति के लिये शराब पीने दो। मेरे सम्मान की शपथ है, महाशयो।"

वॉन कोरेन खामोश रहा। लायवस्की, यह देखकर कि वे उसकी तरफ देख रहे हैं, बोला:

"मुझे निकोलाय वासीलिच से कोई शिकायत नहीं है, अगर वह यह सोचता है कि गल्ती मेरी थी तो मैं उससे माफी माँगने को तैयार हूँ।"

वॉन कोरेन ने अपने को अपमानित अनुभव किया।

"यह स्पष्ट है, सज्जनो," वह बोला, "आप चाहते हैं कि मिस्टर लायवस्की एक महान् और वीर के रूप में घर लौटे परन्तु मैं आपको और उसे यह सन्तोष अनुभव नहीं करने दूँगा। और इतनी जल्दी सुबह उठने और कस्बे से बाहर आठ मील चलने की कोई जरूरत नहीं थी सिर्फ इस बातके ही लिए कि शान्ति के लिए शराब पी जाय, नाश्ता किया जाय और मुझे यह समझाया जाय कि द्वन्दयुद्ध एक गई गुजरी प्रथा है। द्वन्दयुद्ध-द्वन्दयुद्ध है और इसे और भी ज़्यादा बनावटी और मूर्खतापूर्ण बनाने का प्रयत्न मत कीजिये। मैं युद्ध करना चाहता हूँ।"

खामोशी छा गई। बोइको ने एक बक्स में से पिस्तौलों का जोड़ा निकाला। एक वॉन कोरेन को और एक लायवस्की को दे दी गई और

तब एक ऐसी कठिनाई उपस्थित हुई जिसने सहायकों का और वॉन कोरेन का मनोरंजन किया। ऐसा लगा कि वहाँ जितने भी आदमी उपस्थित थे उनमें से कोई भी कभी द्वन्दयुद्ध देखने नहीं गया था और कोई भी ठीक तरह से इस बात को नहीं जानता था कि उन लोगों को कैसे खड़ा होना चाहिए और सहायकों को क्या कहना और क्या करना चाहिए। परंतु तब बोइको को याद आया और उसने मुसकराते हुए समझाना शुरू किया।

"सज्जनो, लेरमोन्तोव द्वारा लिखे गये वर्णन की किसी को याद है," वॉन कोरेन ने हँसते हुए पूछा। "तुर्गनेव ने भी बजारोव को किसी के साथ द्वन्दयुद्ध करते हुए चित्रित किया है ······"

"याद करने की कोई जरूरत नहीं," उस्तीमोविच ने अधीर होकर कहा– "दूरी नापो, सिर्फ इतना ही करना है।"

और वह तीन कदम चला मानो यह दिखाने के लिए कि कैसे नापा जाय। बाइको ने कदम गिने और उसके साथी ने अपनी किर्च निकाली और अन्तिम स्थानों पर पाली का निशान बनाने के लिए जमीन पर लाइन खींची। पूरी खामोशी के साथ प्रतिद्विन्दयों ने अपना अपना स्थान ग्रहण किया।

"छछूंदर," पादरी ने झाड़ियों में बैठे हुए सोचा।

शेश्कोवस्की ने कुछ कहा—बाइको ने फिर कुछ समझाया परन्तु लायवस्की नहीं सुन सका और अगर सुना भी तो समझा नहीं। उसने अपनी पिस्तौल का घोड़ा चढ़ाया जब ऐसा करने का समय आया और उस ठन्डे, भारी हथियार की नली ऊपर की तरफ किये हुए उसे और ऊपर उठाया। वह अपने कोट के बटन खोलना भूल गया और उसे अपने कन्धे और काँख के नीचे कोट बहुत तङ्ग मालूम पड़ने लगा। उसका हाथ इतनी भद्दी तरह से ऊपर उठा मानो कोट की बाँह टीन में से काट कर बनाई गई हो। उसने उस घृणा की याद की जो उसने

पिछली रात को उन घनी भौंहों और घुंघराले बालों के प्रति अनुभव की थी और महसूस किया कि कल घृणा और क्रोध की उस गहनता के क्षणों में भी वह आदमी को गोली नहीं मार सकता था। इस डर से कि कहीं अकस्मात गोली वॉन कोरेन के न लग जाय वह पिस्तौल को ऊपर की तरफ उठाता गया और अनुभव करने लगा कि यह अत्यधिक उदारता भी निर्बलता है—उदारता के अतिरिक्त और चाहे जो भी हो, उदारता नहीं है परन्तु वह यह भी नहीं जानता था कि और क्या करे और इसके अतिरिक्त कुछ कर भी न सका। वॉन कोरेन के पीले, कटुतापूर्वक मुस्कराते हुए चेहरे की तरफ देखते हुए, जो स्पष्ट रूप से पहले से ही इस बात का विश्वास किये बैठा था कि उसका प्रतिद्वन्दी हवा में गोली चलायेगा, लायवस्की ने सोचा कि भगवान को धन्यवाद है कि अभी सब समाप्त हुआ जाता है और उसे सिर्फ इतना ही करना है कि पिस्तौल के घोड़े को जोर से दबा दे······

उसने अपने कन्धे पर भयंकर धक्के का अनुभव किया, गोली चलने की आवाज हुई और पहाड़ों में प्रतिध्वनि गूंज उठी : पिंग–टिंग!

वॉन कोरेन ने अपनी पिस्तौल का घोड़ा चढ़ाया और उस्तीमोविच की तरफ देखा, जो पहले ही की तरह पीठ पीछे हाथ बांधे, किसी की तरफ ध्यान दिये बिना टहल रहा था।

"डाक्टर," प्राणि शास्त्र-विशारद ने कहा—"कृपया घड़ी के घण्टे की तरह इधर से उधर घूमना बन्द कर दो। तुम मुझे परेशान कर रहे हो।"

डाक्टर चुपचाप खड़ा हो गया। वॉन कोरेन ने लायवस्की पर निशाना साधना शुरू किया।

"सब समाप्त हो चला!" लायवस्की ने सोचा।

पिस्तौल की नली सीधी उसके चेहरे का निशाना बांधती हुई, वॉन कोरेन के व्यवहार और सम्पूर्ण आकृति से टपकती हुई घृणा और

द्वेष और वह हत्या जो दिन दहाड़े एक सभ्य व्यक्ति द्वारा, सभ्य व्यक्तियों के सम्मुख की जाने वाली थी, वह स्तब्धता और वह अज्ञात शक्ति जिसने लायवस्की को स्थिर खड़े होने के लिए, न कि भाग जाने के लिए, मजबूर कर दिया था——यह सब कितना रहस्यमय था, कितना दुर्बोध और भयानक !

वह क्षण, जब वॉन कोरेन निशाना साध रहा था, लायवस्की को एक रात से भी ज्यादा लम्बा लगा। उसने विनती सी करते हुए सहायकों की तरफ देखा। वे पीले पड़ गये थे और स्तब्ध खड़े थे।

"जल्दी कर और गोली मार," लायवस्की ने सोचा और अनुभव किया कि उसका पीला, कांपता हुआ और दयनीय मुख वॉन कोरेन के हृदय में और भी तीव्र घृणा का संचार कर देगा।

"मैं उसे अभी मारे डालता हूँ," उसके माथे की तरफ निशाना साधते हुए, घोड़े की लिबलिबी पर उंगली रखे, वॉन कोरेन ने सोचा। "हाँ, सचमुच, मैं उसे मार डालूँगा······"

"वह उसे मार डालेगा !" कहीं पास ही से अचानक एक निराशापूर्ण चीख सुनाई दी।

फौरन गोली की आवाज आई। यह देखकर कि लायवस्की जहाँ खड़ा था वहीं है और गिरा नहीं है, उन सबने उस तरफ देखा जिधर से वह चीख आई थी और वहाँ पादरी को देखा। पीला चेहरा, माथे और गालों पर भीगे हुए बाल चिपकाये, ऊपर से नीचे तक भीगा और कीचड़ से सना हुआ वह किनारे पर दूर मक्के के खेत में खड़ा हुआ अजीब तरीके से मुस्करा रहा था और अपना भीगा हुआ टोप हिला रहा था। शेश्कोवस्की खुशी से हँस उठा, उसके आँसू आ गए और दूर हट गया······

२०

इसके कुछ देर बाद पादरी और वॉन कोरेन छोटे पुल के पास मिले। पादरी उत्तेजित था। वह हाँफ रहा था और आदमियों के चेहरों की तरफ देखने से कतरा रहा था। वह अपने भय और कीचड़ से लतपथ कपड़ों, दोनों ही के कारण झेंप रहा था।

"मैंने सोचा तुम उसकी हत्या करने पर तुले हुए हो ......" वह बड़बड़ाया। यह मानव स्वभाव के कितना विपरीत है! यह कितने भयंकर रूप से अस्वाभाविक है!"

"मगर तुम यहाँ कैसे आ गये?" प्राणि-शास्त्र-विशारद ने पूछा।

"मत पूछो," पादरी हाथ हिलाता हुआ बोला: "शैतान ने मुझे फुसलाया, यह कहते हुए, "जाओ, जाओ..." इसलिए मैं गया और मक्के के खेत में डर के मारे मर गया होता। परन्तु अब, भगवान को धन्यवाद है...मैं तुमसे बहुत खुश हूँ, पादरी बड़बड़ाया।" "बाबा तारानतुला खुश होंगे......यह मजेदार है, बहुत ही मजेदार है, बहुत ही मजेदार! सिर्फ मैं तुमसे बहुत जोर देकर यह प्रार्थना करता हूँ कि किसी से यह मत कहना कि मैं वहाँ था वर्ना मैं अधिकारियों द्वारा मुसीबत में डाल दिया जाऊँगा। वे कहेंगे: "पादरी सहायक था।"

"सज्जनो," वॉन कोरेन बोला: "पादरी आप लोगों से यह चाहता है कि आप लोग किसी से यह न कहें कि उसे यहाँ देखा था। वह मुसीबत में पड़ सकता है।"

"यह मानव स्वभाव के कितना विपतरो है !" पादरी ने निश्वास खींची। "मुझे यह कहने के लिए क्षमा करना, परन्तु तुम्हारा चेहरा इतना डरावना हो उठा था कि मैंने सोचा तुम उसकी हत्या करने जा रहे हो।"

"मैं उस बदमाश को खत्म कर देने को बहुत लालायित हो उठा था," वॉन कोरेन ने कहा,— "परन्तु तुम पास में ही चीख पड़े और मैं निशाना चूक गया। यह पूरा कार्यक्रम उसके लिए जो इसका अभ्यस्त नहीं है, परेशान कर देने वाला है और इसने मुझे पूरी तरह थका डाला है, पादरी। मैं बुरी तरह थकान का अनुभव कर रहा हूँ। चलो···"

"नहीं, मुझे पैदल ही वापस जाने दो। मुझे कपड़े सुखा लेने चाहिए क्योंकि मैं भीग गया हूँ और ठंड महसूस कर रहा हूँ।"

"अच्छा, जैसी तुम्हारी मर्जी," वॉन कोरेन ने अपने को थका हुआ अनुभव करते हुए निर्बल स्वर में कहा और गाड़ी में बैठकर आंखें बन्द कर लीं। "जैसी तुम्हारी मर्जी···"

जब वे लोग गाड़ियों के आसपास घूमते हुए अपनी अपनी जगहों पर बैठते जा रहे थे, केरबालाय सड़क पर खड़ा हुआ था और दोनों हाथ पेट पर रखे हुए थोड़ा सा झुका और अपने दाँत दिखा दिए। उसने कल्पना की कि ये लोग प्रकृति के सौन्दर्य का उपभोग करने और चाय पीने के लिए आये थे और यह नहीं समझ सका कि फिर वे गाड़ी में क्यों बैठते जा रहे हैं। पूरी खामोशी के साथ वह पार्टी चल दी। सिर्फ अकेला पादरी 'दुहान' के पास रह गया।

"दुहान में चलो, चाय पीनी है," उसने केरबालाय से कहा: "मैं कुछ खाना चाहता हूँ।"

केरबालाय अच्छी रूसी बोली बोलता था परन्तु पादरी ने सोचा कि यह तातार उसकी बात तब ठीक तरह से समझ पायेगा जब टूटी-फूटी रूसी भाषा में बोला जाय। "आमलेट पकाओ, पनीर दो···"

"आओ, आओ, फादर," केरबालाय ने झुकते हुए कहा,—"मैं

आपको सब चीज दूँगा मेरे पास पनीर और शराब है'''जो चाहो सो खाओ।"

"तातारी भाषा में ईश्वर को क्या कहते हैं?" पादरी ने दूहान में जाते हुए पूछा।

"आपका ईश्वर और मेरा एक ही है," उसकी बात को न समझते हुए केरबालाय ने कहा, "ईश्वर सब मनुष्यों के लिए एक ही है,सिर्फ आदमी ही अलग अलग हैं; कुछ रूसी हैं,कुछ तुर्की हैं, कुछ अंग्रेज हैं–बहुत तरह के आदमी हैं मगर ईश्वर एक है।"

"बहुत अच्छा। अगर सब लोग उसी एक ईश्वर की पूजा करते हैं तो तुम मुसलमान लोग ईसाइयों को अपना कभी समाप्त न होने वाला दुश्मन क्यों मानते हो?"

"आप नाराज क्यों हैं?" केरबालाय ने दोनों हाथ पेट पर रखते हुए कहा। "आप पादरी हैं, मैं मुसलमान हूँ। आप कहते हैं, 'मैं खाना चाहता हूं'। मैं आपको खाना देता हूँ सिर्फ अमीर लोग आपके खुदा को मेरे खुदा से अलग मानते हैं; गरीबों के लिए तो सब एक ही है। अगर आप चाहें तो खाना तैयार है।"

'दूहान' पर जब यह आध्यात्मिक वार्तालाप हो रहा था लायवस्की यह सोचता हुआ घर की तरफ गाड़ी में बैठा हुआ जा रहा था कि दिन निकलते समय वहाँ यात्रा करना कितना भयानक लग रहा था, जब रास्ते, चट्टानें और पहाड़ भीगे और अन्धकारमय थे और अनिश्चित भविष्य एक भयानक घाटी के समान लग रहा था जिसका अन्त देखने में कोई भी समर्थ नहीं था, जबकि अब घास और पत्थरों पर झूलती हुई वर्षा की बूंदें धूप में हीरों की तरह चमक रही थीं, प्रकृति प्रसन्नता से मुस्करा रही थी, और भयानक भविष्य पीछे छूट गया था। उसने शेरको-च की के उदास, अश्रु निमंज्जित मुख की तरफ, और आगे जाते हुए द

गाड़ियों की तरफ देखा जिनमें वॉन कोरेन, उसके सहायक और वह डाक्टर बैठा हुआ था और उसे ऐसा लगा मानो वे सब एक कब्रस्तान से लौट रहे थे जिसमें एक दूसरों को थका देने वाला, दम्भी व्यक्ति. जो दूसरों के लिए भार स्वरूप था, अभी दफ़नाया गया था।

"सब समाप्त हो गया," सावधानी से अपनी गर्दन को उँगलियों से छूते हुए उसने अपने भूत के विषय में सोचा।

उसकी गर्दन की दाहिनी तरफ थोड़े से स्थान पर हल्की सी सूजन थी—उसकी छोटी उँगली की लम्बाई और चौड़ाई के बराबर। उसने दर्द का अनुभव किया मानो किसी ने उसकी गर्दन पर एक गरम लोहे से दाग दिया हो। गोली उसे छीलती हुई चली गई थी।

बाद में जब वह घर पहुँचा, उसके लिए एक अद्‌भुत, लम्बा, मधुर दिवस प्रारम्भ हुआ—विस्मृति के समान धुंधला और अस्पष्ट। जेल से या अस्पताल से छूटे हुए मनुष्य के समान वह उन चिर परिचित वस्तुओं की तरफ टकटकी बांध कर देखता रहा और आश्चर्यचकित होता रहा कि ये मेजें, खिड़कियाँ, कुर्सियाँ, प्रकाश और समुद्र उसके हृदय में एक उत्सुकता से भरे हुए बच्चों जैसे हर्ष का संचार कर रहे हैं जैसा कि उसने वर्षों से अनुभव नहीं किया था। नाद्‌येज़्दा फ्योदोरोव्ना पीली और निर्बल—उसके कोमल स्वर और विचित्र गतिविधि को न समझ सकी। वह उससे वह सब कुछ जो बीत चुका था,कह देने के लिए उतावली हो उठी······ उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि बहुत सम्भव है कि उसने उसकी बातें मुश्किल से ही सुन पाईं और उन्हें समझा नहीं और अगर उसे सब बातें मालूम नहीं होंगी तो वह उसे गालियाँ देगा और मार डालेगा, परन्तु लायवस्की ने उसकी बातें सुनीं, उसके चेहरे और बालों को थपथपाया, उसकी आँखों में देखा और बोला :

"मेरा तुम्हारे सिवाय और कोई भी नहीं है ···· "

फिर वे लोग बहुत देर तक एक दूसरे से सटे हुए, मूक या अपने भावी सुखद जीवन का स्वप्न देखते हुए, छोटे छोटे वाक्यों में बातें करते हुए बैठे रहे और लायवस्की को ऐसा लगा कि वह इतनी देर तक और इतनी स्पष्टता के साथ कभी नहीं बोला था।

२१

तीन महीने से ज़्यादा दिन बीत गये थे।

वह दिन आ गया जो वॉन कोरेन ने प्रस्थान के लिए निश्चित किया था। सुबह से ही ठन्डी और भारी वर्षा हो रही थी। उत्तरी-पूर्वी हवा चल रही थी। समुद्र में ऊँची लहरें उठ रही थीं। यह बताया गया था कि ऐसे मौसम में स्टीमर बन्दरगाह तक शायद ही आ सकेगा। टाइम-टेबुल के अनुसार स्टीमर सुबह दस बजे ही आ जाना चाहिए था परन्तु वॉन कोरेन जो समुद्र-तट पर दोपहर को और फिर भोजन के उपरान्त जा चुका था, अपनी दूरबीन की मदद से भूरी लहरों और क्षितिज पर हो रही वर्षा के अतिरिक्त और कुछ भी देखने में असमर्थ रहा।

शाम को पानी रुका और धीरे धीरे हवा भी कम होती गई। वॉन कोरेन ने इस समय तक यह जान लिया था कि वह आज जा नहीं सकेगा। वह सामोलेन्को के साथ शतरंज खेलने बैठ गया था, परंतु अंधेरा होने के बाद अर्दली ने बताया कि समुद्र पर रोशनियाँ दिखाई दे रही हैं और एक अग्निबाण भी देखा गया था।

वॉन कोरेन ने शीघ्रता की। उसने थैला कन्धे पर लटकाया और सामोलेन्को और पादरी को चूमा यद्यपि इस बात की रंचमात्र भी आवश्यकता नहीं थी। वह फिर कमरों में घूमा, अर्दली से नमस्कार किया, रसोईये को सलाम किया और सड़क पर निकल आया, यह अनुभव सा करते हुए कि वह पीछे कुछ छोड़ आया था, या तो डाक्टर के यहाँ या अपने मकान पर। सड़क पर वह सामोलेन्को के बराबर चलने लगा। उसके पीछे एक बक्स लिये पादरी था और सबसे अन्त में अर्दली चमड़े के दो बक्स लिए चल रहा था। सिर्फ सामोलेन्को और

अर्दली ही समुद्र पर दिखाई पड़ने वाली धीमी रोशनियों को देख पा रहे थे। दूसरों ने अन्धकार में आँख गड़ा कर देखा परन्तु उन्हें कुछ भी नहीं दीखा। स्टीमर तट से काफी दूर ही रुक गया था।

"जल्दी करो, जल्दी करो," वॉन कोरेन ने उन्हें शीघ्रता करने के लिए कहा, "मुझे डर है कि स्टीमर कहीं चल न दे।"

जब वे लोग तीन खिड़कियों वाले उस छोटे से घर के सामने पहुँचे जिसमें लायवस्की द्वन्दयुद्ध के बाद ही आकर रहने लगा था, वॉन कोरेन खिड़की में होकर झांकने से अपने को न रोक सका। लायवस्को बैठा हुआ मेज पर झुका, खिड़की की तरफ पीठ किए कुछ लिख रहा था।

"मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है!" प्राणि-शास्त्र-विशारद ने धीरे से कहा, "उसने अपने ऊपर कितना संयम कर लिया है।"

"हाँ, कोई भी इस पर आश्चर्य कर सकता है," सामोलेन्को बोला, "वह सुबह से लेकर रात तक बैठा रहता है। हमेशा काम करता है। वह अपना कर्ज अदा कर देने के लिए काम करता है। और भाई, वह एक भिखारी से भी गई बीती जिन्दगी बिता रहा है!"

आधी मिनट तक निस्तब्धता छाई रही। वॉन कोरेन, डाक्टर और पादरी खिड़की पर खड़े हुए लायवस्की की तरफ देखते रहे।

"तो यह बेचारा यहाँ से भाग नहीं सका," सामोलेन्को ने कहा। "तुम जानते हो कि उसने कितनी कोशिश की थी?"

"हाँ, उसने अपने ऊपर बहुत संयम कर लिया है," वॉन कोरेन ने दुहराया। "उसकी शादी, अपनी रोटी कमाने के लिए उसका यह दिन भर काम करना, उसके चेहरे पर खेलता हुआ एक नया भाव और उसकी चाल—यह सब इतना अद्भुत है कि मैं यह नहीं जानता कि इसे क्या कहकर पुकारूँ।"

प्राणि-शास्त्र-विशारद ने सामोलेन्को की बाँह पकड़ी और भावुकतापूर्ण स्वर में कहने लगा :

"तुम उससे और उसकी पत्नी से कह देना कि जब मैं गया तब उनके प्रति पूर्ण प्रशंसा के भावों से भरा हुआ था और उनकी प्रसन्नता की कामना कर रहा था...और मैं उससे प्रार्थना करता हूँ, अगर वह कर सके तो मेरे बारे में बुरी बात न सोचे। वह मुझे जानता है। वह जानता है कि अगर मैं इस परिवर्तन की कल्पना कर सका होता तो उसका सबसे गहरा मित्र बन जाता।"

"भीतर जाओ और उससे विदा लो।"

"नहीं, यह नहीं होगा।"

"क्यों? भगवान जानता है, शायद तुम उसे फिर कभी भी न देख सको।"

प्राणि-शास्त्र-विशारद ने सोचा और बोला।

"यह सच है।"

सामोलेन्को ने भी धीरे से खिड़की पर खटखटाया। लायवस्की चौंक उठा और चारों ओर देखने लगा।

"वान्या, निकोलाय वासीलिच तुमसे विदा माँगने आया है," सामोलेन्को ने कहा। "वह अभी जा रहा है।"

लायवस्की मेज पर से उठा और दरवाजा खोलने के लिए गलियारे में गया। सामोलेन्को, वॉन कोरेन और पादरी घर में आए।

"मैं सिर्फ एक मिनट भर के लिए ही आ सकता हूँ," प्राणि-शास्त्र-विशारद ने गलियारे में अपने दस्ताने उतारते हुए कहना प्रारम्भ किया और यह सोचा कि वह उसकी भावनाओं को व्यक्त होने का अवसर दिए बिना ही बिना बुलाए चला आया। "यह तो ऐसा लगता है मानो मैं स्वयं को उसके ऊपर थोप रहा हूँ," उसने सोचा, "और यह मूर्खता है।"

"बाधा डालने के लिए मुझे माफ करना," उसने लायवस्की के साथ कमरे में जाते हुए कहा, "परन्तु मैं अभी जा रहा हूँ और मेरे मन

में तुमसे मिलने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हो उठी। भगवान जानता है कि हम लोगों की फिर कभी मुलाकात होगी या नहीं!"

"मुझे तुमसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई ......कृपया भीतर आओ," लायवस्की बोला और आगन्तुकों के लिए भद्दे ढङ्ग से कुर्सियाँ लगाने लगा मानो उनका रास्ता रोकना चाहता हो और कमरे के बीचोंबीच हाथ मलता हुआ खड़ा हो गया।

"अच्छा होता कि मैं अपने श्रोताओं को बाहर सड़क पर ही छोड़ आता,' वॉन कोरेन ने सोचा और दृढ़तापूर्वक कहने लगा: "मेरे प्रति बुरे विचार मत रखना इवान आन्द्रइच! बीती हुई बातों को भूल जाना सचमुच नामुमकिन है—यह बड़ा दुखदायी होता है और मैं यहाँ क्षमा माँगने या अपने को निर्दोष प्रमाणित करने के लिए नहीं आया हूँ। मैंने सद्भावना से प्रेरित होकर काम किया था और अपना विश्वास तबतक नहीं बदला जबतक कि "यह सच है,मैं अत्यधिकप्रसन्न होकर इस बात को देख रहा हूँ कि तुम्हारे मामले में मैं गलती पर था परन्तु किसी समतल मार्ग पर गलत कदम उठा देना आसान है और वास्तव में अधिकांश यही करते हैं। अगर मुख्य बात में किसी से गलती नहीं होती तो अन्य छोटी मोटी बातों में हो जाती है। कोई भी सत्य को नहीं जानता।'

"नहीं, सत्य को कोई भी नहीं जानता," लायवस्की ने कहा।

"अच्छा, अलविदा......भगवान तुम्हें सुखी रखे।"

वान कोरेन ने लायवस्की की तरफ अपना हाथ बढ़ाया, लायवस्की ने उसे पकड़ लिया और झुका।

"मेरे विषय में बुरी बातें मत सोचना,' वान कोरेन बोला। "अपनी स्त्री से मेरी शुभकामनाएँ कह देना और कहना कि मैं उनसे विदा न माँग सका इसके लिए बहुत दुखी था।"

"वह घर पर ही है।"

लायवस्की दूसरे कमरे के दरवाजे पर गया और बोला :

"नाद्या, निकोलाय वासीलिच तुमसे विदा माँग रहा है।"

नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना भीतर आई। वह दरवाजे के पास रुक गई और लज्जापूर्ण दृष्टि से आगन्तुकों की तरफ देखने लगी। उसके चेहरे पर अपराध और आश्चर्य की भावना थी और वह सज़ा पाने की प्रतीक्षा करती हुई एक स्कूल की लड़की की तरह हाथ आगे बढ़ाए खड़ी थी।

"मैं अभी जा रहा हूँ, नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना," वॉन कोरेन बोला, "और विदा माँगने आया हूँ।"

उसने अनिश्चयपूर्वक अपना हाथ आगे बढ़ा दिया जब कि लायवस्की झुक गया।

"फिर भी ये लोग कितने दीन दिखाई पड़ रहे हैं," वॉन कोरेन ने सोचा। "जैसी जिन्दगी यह बिता रहे हैं यह इन्हें सहन नहीं हो रही।" उसने आगे पूछा : "मैं मास्को और पीटर्सबर्ग जाऊँगा, आप लोगों के लिए क्या भेजूँ ?"

"ओह !" नाद्येज्दा फ्योदोरोव्ना बोली और उसने उत्सुक होकर अपने पति की ओर देखा। "मैं नहीं सोचती कि कोई ऐसी चीज़ है···"

"नहीं, कुछ भी नहीं," हाथ मलते हुए लायवस्की बोला। "हमारी शुभ कामनाएँ !"

वॉन कोरेन की समझ में नहीं आया कि क्या कहे या उसे क्या कहना चाहिए, हालांकि जब वह भीतर आया था तो उसने सोचा था कि यह बहुत कुछ कहेगा जो स्नेहपूर्ण, अच्छा और महत्वपूर्ण होगा। उसने चुपचाप लायवस्की और उसकी पत्नी से हाथ मिलाया और हृदय पर एक बोझ सा अनुभव करते हुए बाहर निकला।

"कैसे आदमी हैं।" पादरी ने उनके पीछे पीछे चलते हुए धीमे स्वर में कहा। "मेरे भगवान, कैसे आदमी हैं। सत्य में भगवान के दाहिने हाथ ने इस अंगूर की लता को लगाया था! भगवान! भगवान! भगवान! एक व्यक्ति हजारों और लाखों को पराजित कर देता है। निकोलाय वासीलिच," उसने उत्साहित होकर कहा, "मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि आज तुमने मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु-अहंकार-को जीत लिया है।"

"हुश, पादरी! हम लोग अच्छे विजेता हैं! विजेताओं को गरुड़ की तरह दिखाई देना चाहिए जब कि वह दीन, भयभीत और हताश है, वह एक चीनी प्रतिमा की तरह झुकता है और मैं, मैं······ दुखी हूँ····"

उन्होंने अपने पीछे पैरों की आवाज सुनी। यह लायवस्की था जो उनके पीछे तेजी से उसे छोड़ने के लिए आ रहा था। अर्दली घाट पर दो चमड़े के बक्स लिए खड़ा था और कुछ दूरी पर चार मल्लाह खड़े थे।

"हालाँकि हवा तेज चल रही है···बर्र!" सामोलेन्को ने कहा। "समुद्र पर इस समय छोटा मोटा तूफान सा चल रहा होगा! तुम अच्छे समय में नहीं जा रहे हो, कोल्या।"

"मैं समुद्री बीमारी से नहीं डरता।"

"यह बात नहीं है····· मैं सिर्फ यह उम्मीद करता हूँ कि ये बदमाश तुम्हें परेशान न करें। तुम्हें एजेन्ट की बड़ी नाव में जाना चाहिए था। एजेन्ट की नाव कहाँ है?" उसने मल्लाहों से चीखते हुए पूछा।

"चली गई, योर एक्सेलैंसी।"

"और चुङ्गी वालों की नाव?"

"वह भी चली गई?"

"तुमने हमें बताया क्यों नहीं?" सामोलेन्को ने गुस्से से कहा। "बेवकूफ!"

'एक ही बात है, परेशान मत हो……'' वॉन कोरेन बोला। "अच्छा, अलविदा, भगवान तुम्हारी रक्षा करे।"

सामोलेन्को ने वॉन कोरेन को सीने से चिपटा लिया और उसके ऊपर तीन बार क्रास का निशान बनाया।

"हमको भूल मत जाना, कोल्या·· खत लिखना, हम लोग अगले बसन्त में तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे।"

"अलविदा, पादरी," पादरी से हाथ मिलाते हुए वॉन कोरेन बोला। "तुम्हारे सहवास और मजेदार बातों के लिए धन्यवाद। यात्रा के बारे में विचार करना।"

"ओह भगवान, हाँ! पृथ्वी की अन्तिम सीमा तक,' पादरी हँसा, "मुझे कोई उज्र नहीं है।"

वॉन कोरेन ने अन्धेरे में लायवस्की को पहचाना और बिना बोले उसकी तरफ हाथ बढ़ा दिया। मल्लाह अब नीचे उतर कर नाव को पकड़े खड़े थे जो शहतीरों से टकरा रही थी यद्यपि बाँध ने उसे टकराने से रोक सा रखा था। वॉन कोरेन सीढ़ी से नीचे उतरा, नाव में कूदा और पतवार चलाने की जगह बैठ गया।

"खत लिखना!" सामोलेन्को ने चीखकर उससे कहा। "अपना ध्यान रखना।"

"कोई भी असली सत्य को नहीं जानता," लायवस्की ने अपने कोट के कालर को मोड़ते हुए आस्तीनों में हाथ घुसेड़ते हुए सोचा।

नाव तेजी से बन्दरगाह से बाहर खुले सागर की तरफ मुड़ी, लहरों में गायब हो गई परन्तु फौरन ही नीची गहराई में से एक ऊँची लहर पर उठ आई जिससे कि उन लोगों को उसमें बैठे हुए आदमी और पतवार तक दिखाई देने लगी। नाव तीन गज के करीब आगे बढ़ी और दो गज पीछे हट आई।

"खत लिखना !" सामोलेन्को चिल्लाया, "तुम बहुत खराब मौसम में जा रहे हो !"

"हाँ, कोई भी सत्य को नहीं जानता……" उस अन्धकार-पूर्ण क्षुब्ध सागर की तरफ देखते हुए, उदासीनतापूर्वक लायवस्की ने सोचा।

"यह नाव को पीछे फेंक रहा है," उसने सोचा, "वह दो कदम आगे बढ़ती है और एक कदम पीछे हट आती है, परन्तु मल्लाह बहुत तगड़े हैं, वे बिना रुके पतवार चलाए जारहे हैं और ऊँची लहरों से नहीं डरते। नाव आगे, और आगे बढ़ती चली जाती है। अब वह निगाहों से ओझल होगई है परन्तु आधे घन्टे में ही मल्लाह स्टीमर की रोशनी को साफ साफ देखने लगेंगे और घन्टे भर में ही स्टीमर की सीढ़ी के पास होंगे। ऐसा ही जीवन में होता है……सत्य की खोज में मनुष्य दो कदम आगे बढ़ाता है और एक कदम पीछे हट आता है। दुख, गलतियां और जीवन की थकान उन्हें पीछे धकेल देते हैं परन्तु सत्य की लालसा और साहस उन्हें आगे बढ़ाये लिए चलेगी। और कौन जानता है ? शायद अन्त में वे लोग वास्तविक सत्य तक पहुँच जायँगे।"

"अ……ल……वि……दा," सामोलेन्को जोर से चिल्लाया।

"अब न तो वे दिखाई देरहे हैं और न उनकी आवाज ही आ रही है," पादरी बोला।

"यात्रा उन्हें शुभ हो !"

वर्षा की बूँदें पड़ने लगी थीं।

——o——

साहित्य-शिक्षक

लकड़ी के फर्श पर घोड़ों की टापों का शब्द सुनाई दिया। वे अस्तबल से काले घोड़े, काउन्ट नूलिन, फिर सफेद घोड़े, दैत्य, फिर उसकी बहन मैका को निकाल कर बाहर लाए। ये सब शानदार कीमती घोड़े थे। वृद्ध शेलेस्तोव ने दैत्य पर जीन कसी और अपनी लड़की माशा को सम्बोधन कर कहा :

"अच्छा, मेरी गोदफ्रॉ, चलो, बैठो ! होय-ला !"

माशा शेलेस्तोव परिवार में सबसे छोटी थी। वह अठारह साल की थी परन्तु उसका परिवार यह सोचने का अभ्यस्त नहीं हो सका था कि वह एक छोटी लड़की नहीं थी इसलिए वे लोग अब भी उसे मान्या और मान्यूसा कह कर पुकारते थे, और उस कस्बे में सरकस का खेल होने के बाद, जिसे वह अत्यधिक इच्छुक होकर देखने गई थी, हरेक उसे मेरी गोदफ्रॉय कहने लगा था।

"होय-ला !" दैत्य पर बैठती हुई वह चिल्लाई। उसकी बहन वार्या मैका पर बैठी, निकीकिन काउन्ट नूलिन पर सवार हुआ, अफसर लोग अपने अपने घोड़ों पर चढ़े और घुड़सवारों की यह दर्शनीय पंक्ति जिसमें अफसर सफेद कोट और महिलाएं अपनी सवारी की पोशाक पहने हुई थीं, अहाते से बाहर धीमी चाल से निकली।

निकीकिन ने गौर किया कि जब वे घोड़ों पर सवार हो रहे थे और बाद में जब सड़क पर चल रहे थे, माशा ने किसी कारणवश उसे छोड़कर और किसी की ओर ध्यान नहीं दिया था। उसने उसकी और काउन्ट नूलिन की तरफ उत्सुक होकर देखा और बोली :

"आप इसे हमेशा नीचे के जबड़े वाली जंजीर से काबू में रखिए,

सरजी वासीलिच ! उसे भड़कने मत दीजिये । वह कोशिश कर रहा है ।''

और या तो इस कारण कि उसका दैत्य काउन्ट नूलिन के साथ बहुत हिला हुआ था या वैसे ही संयोगवश, माशा बराबर नितोकिन के ही साथ चलती रही जैसा कि उसने कल और परसों किया था। और नितोकिन ने उसकी सुन्दर छोटी सी मूर्ति को, उस गर्वीले सफेद पशु पर बैठे हुये, उसके कोमल मुख-मंडल को, ऊँचे टोप को, जो उसे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था और उसे अपनी अवस्था से भी ज्यादा उम्र की बता रहा था,को देखा – प्रसन्नता से, कोमलता से और अत्यन्त हर्षित होकर। उसकी बातें सुनी, और जो कुछ भी वह कह रही थी उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया और सोचा :

''मैं अपने सम्मान की शपथ खाता हूँ, भगवान को कसम उठाता हूँ कि मैं डरूँगा नहीं और आज उससे बातें करूँगा।''

शाम के सात बजे थे—वह समय जब बबूल और बकाइन की गन्ध इतनी तीव्र हो उठती है कि हवा और स्वयं वे वृक्ष सुगन्ध से लदे हुए से लगने लगते हैं। कस्बे के बागों में बैन्ड बज रहा था। घोड़ों ने सड़क पर जोर से टापें मारीं। चारों तरफ हँसने, बातें करने और दरवाजों के खुलने बन्द होने की आवाजें आ रही थीं। रास्ते में जो सिपाही मिले उन्होंने अफसरों को सैल्यूट की, स्कूल के लड़कों ने नितो-किन को सलाम किया और सब लोग जो बाग में बैन्ड सुनने के लिए तेजी से चले जा रहे थे, इस पार्टी को देखकर बड़े खुश हुए। वातावरण में हल्की गर्मी थी। आसमान में कोयल से दिख ई देते बादल कितनी लापरवाही से इधर-उधर बिखरे हुये थे। चिनार और बबूल के पेड़ों की छायायें कितनी मधुर और सुखदायक थीं, जो सड़क पर इधर-उधर तक और दूसरी तरफ स्थित बालकनी और मकानों की दूसरी मंजिल तक छाये हुये थे।

ये लोग कस्बे से बाहर आए और सड़क पर दुलकी चाल से चलने लगे। यहाँ बबूल और बकाइन की सुगन्ध नहीं थी, बैंड का सङ्गीत नहीं था परन्तु खेतों की मधुर गन्ध छा रही थी, जौ और गेहूँ के कोमल हरे पौधे लहलहा रहे थे, गिलहारियाँ चीख रही थीं, कौवे काँव काँव कर रहे थे। जहाँ तक निगाह जाती थी हरियाली छा रही थी जिसके बीच २ में कहीं कहीं खाली जमीन के टुकड़े थे और बहुत दूर बांयी तरफ कबरिस्तान में फूले हुए सेब के दरख्तों की एक कतार दिखाई पड़ रही थी।

ये लोग कसाई-खाने के पास होकर निकले, फिर शराब की भट्टी को पार किया और एक फ़ौजी बैंड को जा पकड़ा जो पास ही बागों में जा रहा था।

"पोल्यान्स्की के पास एक बहुत अच्छा घोड़ा है, मैं इससे इन्कार नहीं करती," माशा ने उस अफ़सर की तरफ निगाह फेंककर जो वार्या के साथ चल रहा था, कहा—"परन्तु इसमें दोष हैं। उसकी बांयी टाँग वाला वह सफेद दाग वहाँ नहीं होना चाहिये था और देखो, यह अपना सिर हिलाता है। तुम इसे कभी भी सिखा नहीं सकते। यह अपने आखिरी दिनों तक सिर हिलाता रहेगा।"

माशा घोड़ों से उतना ही उत्कट प्रेम करती थी जितना कि उसका पिता। जब वह अन्य लोगों को अच्छे घोड़ों पर देखती थी तो अपने हृदय में एक टीस का अनुभव करती थी और जब उनमें दोष देखती थी तो खुश होती थी। नितीकिन घोड़ों के विषय में कुछ भी नहीं जानता था। उसके लिये इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता था कि वह अपने घोड़े को लगाम से थामे हुए है या नीचे जबड़े वाली जंजीर से, वह दुलकी चल रहा है या सरपट दौड़ रहा है। उसने सिर्फ यह महसूस किया कि उसकी स्थिति कष्टदायक और अस्वाभाविक है और इसलिये वे अफ़सर जो जीन पर अच्छा बैठना जानते हैं, माशा को उससे अधिक

सन्तुष्ट कर रहे हैं। वह अफसरों से जल उठा।

जब वे कस्बे के पास वाले बागों के पास होकर गुजरे तो किसी ने सलाह दी कि भीतर चला जाय और थोड़ा सा सोडा-वाटर पिया जाय। वे भीतर गए। बाग में बलूत के अलावा और कोई पेड़ नहीं थे। उनमें अभी पत्तियाँ निकली थीं इसलिए उस नई हरियाली में से सारा बाग, अपने प्लेटफार्म, छोटी छोटी मेजों, झूलों और कौवों के घोंसलों के साथ जो बड़े बड़े टोपों की तरह लग रहे थे, अब भी साफ दिखाई दे रहा था। वह पार्टी एक मेज के पास घोड़े पर से नीचे उतर पड़ी और सोडा-वाटर माँगा। उनकी जान पहचान वाले आदमी जो बाग में टहल रहे थे, उनके पास आए। उनमें ऊँचे बूट पहने हुए फौजी डाक्टर, बैन्ड का कन्डक्टर था जो गाने वालों का इन्तजार कर रहा था। डाक्टर ने नितोकिन को विद्यार्थी समझा होगा क्योंकि उसने पूछा :

"क्या आप गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने आये हैं ?"

"नहीं, मैं स्थायी रूप से रहता हूँ," नितोकिन ने उत्तर दिया। "मैं स्कूल में मास्टर हूँ।"

"आप क्या कह रहे हैं ?" आश्चर्यचकित होकर डाक्टर ने कहा। "इतना छोटा और अभी से मास्टर ?"

"छोटा, सचमुच ! मेरे भगवान, मैं छब्बीस साल का हूँ !"

"आपके दाढ़ी और मूछें हैं परन्तु फिर भी कोई भी यह अन्दाजा नहीं लगा सकता कि आप बाईस या तेईस साल से ज्यादा होंगे। आप कितने छोटे दिखाई देते हैं !"

"कैसा जानवर है !" नितोकिन ने सोचा। "यह भी मुझे मामूली आदमी समझता है !"

वह इस बात को बहुत नापसन्द करता था जब दूसरे उसकी उम्र का प्रश्न उठाते थे, विशेष रूप से स्त्रियों और स्कूल के लड़कों के सामने। जबसे वह इस कस्बे में स्कूल का मास्टर होकर आया था तभी

से वह अपनी लड़कों की सी शकल से नफरत करने लगा था। स्कूल के लड़के उससे डरते नहीं थे, बड़े-बूढ़े उसे "नौजवान" कहते थे, स्त्रियाँ उसके साथ, उसके लम्बे तर्कों को सुनने के लिए ही, नाचना पसन्द करती थीं और उसे अपने को दस वर्ष और बड़ा साबित करने के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ा था।

बाग से वे लोग शेलेस्तोव के फार्म पर गए। वहाँ वे फाटक पर रुक गए और कारिन्दे की स्त्री आस्कोव्या से थोड़ा सा ताजा दूध लाने के लिए कहा। किसी ने भी दूध नहीं पिया, उन सबने एक दूसरे की तरफ देखा, हँसे और घोड़े दौड़ाते हुए लौट दिए। जब वे वापस आ रहे थे बागों में बैन्ड बज रहा था; कब्रस्तान के पीछे सूरज डूब रहा था और सूर्यास्त के कारण आधा आसमान लाल पड़ गया था।

माशा फिर नितोकिन के बगल में चलने लगी। वह उसे कितना अधिक प्यार करता है परन्तु उसे भय था कि अफसर और वार्या उसकी बातें सुन लेंगे, इसलिए वह खामोश था। माशा भी चुप थी और उसने अनुभव किया था कि क्यों वह चुप थी और क्यों उसकी बगल में चल रही थी। वह इतना खुश था कि पृथ्वी, आसमान, कस्बे की रोशनियाँ, शराब की भट्टी की धुँधली दीवालें, सब मिलकर उसके लिए अत्यन्त सुन्दर और सुखद दृश्य उपस्थित कर रहे थे, और उसे ऐसा लगा मानो काउन्ट कूलिन हवा में उड़ रहा हो और लाल आसमान में उड़ जायगा।

वे घर आ गए। मेज पर सामोवार पहले से ही खौल रहा था, वृद्ध शेलेस्तोव सरकिट कोर्ट के अफसरों के साथ, जो उनके मित्र थे, बैठा हुआ था और हमेशा की तरह किसी की आलोचना कर रहा था :

"यह वाहियात है ! वाहियात के अलावा और कुछ भी नहीं, है हाँ !"

जबसे नितोकिन माशा को प्यार करने लगा था, शेलेस्तोव के

वहाँ की प्रत्येक वस्तु उसे आनन्द देती थी। घर, बाग, शाम की चाय, सींक की बनी हुई कुर्सियाँ, वृद्धा नर्स और 'वाहियात' शब्द भी, जिसका प्रयोग करने का उस वृद्ध पुरुष को शौक था। सिर्फ एक बात उसे नापसन्द थी वह यह कि इतने कुत्ते और बिल्लियों का और उन मिश्री कबूतरों का वहाँ होना जो बरामदे में टंगे हुए एक बड़े पिंजड़े में बन्द दुखी होकर कराहते रहते थे। वहाँ इतने ज्यादा घरेलू और अहाते की रखवाली करने वाले कुत्ते थे कि जब से शेलेस्तोव परिवार के साथ उसकी जान पहचान हुई थी तब से अब तक वह उनमें से केवल दो को ही पहचान पाता था—मुस्का और सोम को। मुस्का एक रूखी, झबरीले मुँह वाली, घिनौनी और बिगड़ी कुतिया थी। वह नितीकिन से नफरत करती थी। जब वह उसे देखती सिर एक तरफ कर लेती, दाँत निकालती और घुर्राने लगती: "ररंर··· ग्ना···ग्ना ग्ना···ग्ना ररंर···!" फिर वह उसकी कुर्सी के नीचे घुस जाती और जब वह उसे भगाने की कोशिश करता तो वह बुरी तरह किकिया उठती और परिवार वाले कहते: "डरो मत। वह काटती नहीं है। वह अच्छी कुतिया है।"

सोम लम्बी टांगों और छड़ी जैसी कड़ी पूँछ वाला काला ऊँचा कुत्ता था। भोजन और चाय के समय वह हमेशा मेज के चक्कर लगाया करता था और आदमियों के बूटों और मेज के पायों पर अपनी पूँछ से आघात किया करता था। वह अच्छे स्वभाव का, बेवकूफ कुत्ता था परन्तु नितीकिन उसे बर्दाश्त नहीं कर सका क्योंकि उसकी आदत थी कि वह आदमियों के घुटनों पर भोजन के समय मुँह रख देता था। नितीकिन ने कई बार चाकू की मूँठ से उसके सिर पर मारने की, नाक पर चोट पहुँचाने की कोशिश की थी, उसे दुतकारा था, उसकी शिकायत की थी परन्तु कोई भी हरकत उसकी पतलून को नहीं बचा सकी।

घुड़सवारी के बाद चाय, मुरब्बे, दुबारा पकाई हुई रोटियाँ और

मक्खन बहुत स्वादिष्ट लगे। उन सबने अपना पहला ग्लास चुपचाप और बड़ा स्वाद लेते हुए पीया। दूसरा पीते समय उन्होंने एक बहस शुरू कर दी। चाय के समय हमेशा वार्या ही बहस शुरू करती थी। वह देखने में सुन्दर थी, माशा से अधिक सुन्दर और घर भर में सबसे चतुर और तमीजदार मानी जाती थी। उसके व्यवहार में बड़प्पन और गम्भीरता रहती थी जैसे कि उस सबसे बड़ी लड़की को रखनी चाहिए जिसने घर में स्वर्गीय माँ का स्थान ग्रहण किया हो। घर की मालकिन के रूप में वह अपने को इस बात की अधिकारिणी समझती थी कि महमानों की उपस्थिति में ड्रेसिंग-गाऊन पहने और अफसरों को उनके उपनामों द्वारा पुकारे। वह माशा को छोटी बच्ची समझती थी और उससे इस तरह की बात करती थी मानो स्वयं स्कूल की मास्टरनी हो। वह अपने बारे में एक वयस्का नारी की भाँति बातें करती थी इसलिए कि उसे पूरी आशा थी कि उसकी शादी होगी।

हरेक वार्तालाप को, चाहे वह मौसम के बारे में ही क्यों न हो, वह निश्चित रूप से बहस में बदल देती थी। वह शब्दों को पकड़ने के लिए, विरोधों पर आक्रमण करने के लिए और वाक्यों को व्यंग्योक्ति द्वारा व्यक्त करने के लिए उत्सुक रहती थी। तुम उससे बातें करना शुरू करते, वह तुम्हारी तरफ घूर कर देखती और अचानक टोक देती: "माफ कीजिए, पेत्रोव, उस दिन तो आप बिल्कुल उल्टी बातें कह रहे थे!"

या वह व्यंगपूर्वक मुस्कराती और कहती: "मैं देख रही हूँ हालाँकि आप गुप्त पुलिस के सिद्धान्तों का समर्थन कर रहे हैं। मैं आपको बधाई देती हूँ।"

अगर आपने मजाक किया, श्लेष में बातें कीं तो आप फौरन उसकी आवाज सुनेंगे: 'यह पुरानी बात है," "यह व्यर्थ है।" अगर कोई अफसर मजाक कर बैठता तो वह मुँह पर घृणा के भाव लाती हुई कहती, "एक फौजी मजाक!"

और वह 'र' का इतना बल देती हुई उच्चारण करती कि मुश्का कुर्सी के नीचे से स्पष्ट रूप से जवाब दे उठती : "र र र'''न्या''' न्या'''न्या'''!"

इस बार चाय पीते समय नितीकिन द्वारा स्कूली परीक्षाओं की बातें करने पर बहस छिड़ गई।

"माफ कीजिए, सरजी वासीलिच," वार्या ने उसे टोकते हुए कहा। "आप कहते हैं कि यह लड़कों के लिए मुश्किल है। और मुझे आपसे पूछने दीजिए कि यह किसका दोष है? मिसाल के लिए, आप आठवें दर्जे के लड़कों के लिए "पुश्किन-एक मनोवैज्ञानिक" विषय पर निबन्ध लिखते हैं। पहली बात तो यह है कि आपको इतना कठिन विषय ही नहीं देना चाहिए, और दूसरे, पुश्किन एक मनोवैज्ञानिक नहीं था। श्चेन्द्रिन या दोस्तोवस्की हो तो कहने दीजिए कि दूसरी बात है और पुश्किन एक महान कवि है इसके अलावा और कुछ भी नहीं है।"

"श्चेन्द्रिन की और बात है और पुश्किन की और," नितीकिन ने उदासीनतापूर्वक जवाब दिया।

"मैं जानती हूँ कि हाईस्कूल में आप लोग श्चेन्द्रिन के बारे में ज्यादा नहीं सोचते परन्तु बहस का विषय यह नहीं है। मुझे यह बताइए कि किस रूप में पुश्किन एक मनोवैज्ञानिक है?"

"क्यों, क्या आप यह कहना चाहती हैं कि वह मनोवैज्ञानिक नहीं था? अगर आप चाहें तो मैं उदाहरण दे सकता हूँ।"

नितीकिन ने "औनीगिन" से और बाद में "बोरिस गोदुनोव" से अनेक उद्धरण सुनाए।

"मुझे इसमें कोई मनोविज्ञान नहीं दिखाई देता।" वार्या ने गहरी साँस ली। "मनोवैज्ञानिक वह व्यक्ति होता है जो मानव-मन के

रहस्यों की व्याख्या करता है, और यह एक सुन्दर कविता है और कुछ भी नहीं।"

"मैं जानता हूँ कि आप कैसा मनोविज्ञान चाहती हैं," नितीकिन ने अपमान अनुभव करते हुए कहा। "आप चाहती हैं कि कोई एक मोथरी आरी से मेरी उँगली काटे जब कि मैं पूरा जोर लगाकर चीखता रहूँ—आपका मनोविज्ञान से यही अभिप्राय है।"

"कैसी लचर दलील है! परन्तु फिर भी आपने यह नहीं बताया कि किस अर्थ में पुश्किन मनोवैज्ञानिक है?"

जब नितीकिन को किसी बात के विरोध में बहस करनी पड़ती थी उसे वह संकीर्ण, परम्परागत या कुछ कुछ उसी तरह का लगता था तो वह आमतौर से अपनी जगह से उछल पड़ता था, दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लेता था और कराहता हुआ कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दौड़ने लगता था। और वही अब हुआ: वह उछला, अपने हाथों से सिर पकड़ लिया और कराहता हुआ मेज के चारों तरफ घूमने लगा, फिर कुछ दूर जाकर बैठ गया।

अफसरों ने उसका पक्ष लिया। कप्तान पोल्यान्स्की ने वार्या को विश्वास दिलाना प्रारम्भ किया कि पुश्किन दरअसल मनोवैज्ञानिक था और इसे सिद्ध करने के लिए उसने लेरमोन्तोव से दो पंक्तियाँ उद्धृत कीं। लेफ्टीनेन्ट गारनेट बोला कि अगर पुश्किन मनोवैज्ञानिक नहीं होता तो उन लोगों ने मास्को में उसकी मूर्त्ति न स्थापित की होती।

"यह वाहियात बात है!" मेज के दूसरे कोने से आवाज सुनाई दी। "मैंने गवर्नर से यहाँ तक कह दिया: 'यह वाहियात है, योर एक्सेलेन्सी,' मैंने कहा।"

"मैं अब बहस नहीं करूँगा," नितीकिन चीख उठा। "इसका अन्त नहीं है······बहुत हो चुकी। आह, भाग जाओ, गन्दे कुत्ते!"

वह सोम पर चिल्लाया जिसने अपना सिर और पंजा उसके घुटनों पर रख दिया था।

"र र्र र · न्गा···न्गा · न्गा!"मेज के नीचे सुनाई पड़ा।

"स्वीकार कीजिए कि आप गलती पर थे!" वार्या बोली "स्वीकार कीजिए!"

परन्तु कुछ नवयुवतियाँ अन्दर आई और बहस अपने आप ही बन्द हो गई। वे सब ड्राइङ्ग-रूम में चले गये। वार्या पियानो पर बैठ गई और नृत्य की धुन बजाने लगी। उन लोगोंने पहले 'वाल्टज' नृत्य किया, फिर 'पोल्का' नाचे। उसके बाद 'क्वाड्रिल' नृत्य किया जिसमें एक लम्बी जंजीर के रूप में सब लोग इकट्ठे हुए, कप्तान पोल्यान्स्की इन्जन बने और सारे कमरों में घूमते रहे। बाद में उन लोगों ने फिर 'वाल्टज' नृत्य किया।

नृत्य के समय वृद्ध लोग ड्राइङ्ग रूम में बैठे तम्बाकू पीते रहे और नौजवानों को देखते रहे। उन लोगों में म्युनिसपल बैंक का डाइरेक्टर शेवाल्दम भी था जो अपने साहित्य-प्रेम और नाटकीय कला-प्रेम के लिए प्रसिद्ध था। उसने स्थानीय 'संगीत और नाटक समिति' की स्थापना की थी और अभिनय में खुद भाग लिया था। वह किसी कारणवश सदैव चपरासी का अभिनय करता था या बेसुरा होकर "वह नारी जो पापिष्ठा थी" को पढ़ा करता था। वह शहर में 'ममी' के नाम से पुकारा जाता था क्योंकि वह लम्बा, बहुत दुबला, रूखा व्यक्ति था और सदैव गम्भीर बना रहता था तथा उसकी आँखें ज्योति-हीन रहती थीं। वह नाटकीय कला में इतना अनुरक्त था कि उसने अपनी दाढ़ी मूँछें भी साफ करा डाली थीं और इससे वह 'ममी' की तरह और भी अधिक लगने लगा था।

जंजीर वाले खेल के बाद वह नितीकिन की तरफ खिसका, खाँसा और बोला :

"मुझे चाय के समय हुई बहस को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मैं आपके मत से पूर्णतः सहमत हूँ। हम लोग एक ही विचारधारा के हैं और मुझे आपसे बातें करने में बड़ा आनन्द आयगा। आपने 'हैम्बर्ग की नाटकीय कला' विषयक लेसिंग की पुस्तक पढ़ी है ?"

"नहीं, मैंने नहीं पढ़ी।"

शेवाल्दिन भयभीत हो उठा और उसने अपने हाथ इस तरह हिलाए जैसे उसकी उँगलियाँ जल गई हों और आगे बिना कुछ कहे नितोकिन के पास से पीछे हट गया। शेवाल्दिन का मुख, उसका प्रश्न और उसका आश्चर्य प्रकट करना नितोकिन को अजीब सा लगा परन्तु उसने खुद भी इससे कम बात नहीं सोची :

"यह सचमुच वाहियात है। मैं साहित्य का शिक्षक हूँ और आज तक मैंने लेसिंग नहीं पढ़ा। मुझे जरूर पढ़ना चाहिए।"

भोजन से पूर्व वे सब लोग बुड्ढे और जवान, "भाग्य" का खेल खेलने बैठ गए। उन्होंने ताश की दो जोड़ियाँ लीं : एक जोड़ी सब लोगों में बाँट दी गई और दूसरी नीचे की तरफ करके मेज पर रख दी गई।

"वह व्यक्ति जिसके हाथ में यह ताश हो," दूसरी जोड़ी का सबसे ऊपर वाला पत्ता उठा कर दिखाते हुए शेवाल्दिन ने गम्भीरता से कहा, "उसके भाग्य में नर्सरी में जाकर नर्स का चुम्बन लेना लिखा है।"

नर्स का चुम्बन लेने का आनन्द शेवाल्दिन के भाग्य में पड़ा। वे सब उसके चारों तरफ इकट्ठे होगए, उसे नर्सरी में ले गए और हँसते और तालियां बजाते हुए उसे नर्स का चुम्बन लेने के लिए मजबूर किया। चारों तरफ भारी शोरगुल और चीखें सुनाई दीं।

"इतनी जोर से नहीं !" हँसी के मारे आँसू बहाते शेलेस्तोव चीखा, "इतनी जोर से नहीं !"

यह नितोकिन का "भाग्य" था कि वह सबकी पापों की स्वीकारोक्तियाँ सुने। वह ड्राइङ्ग रूम के बीच एक कुर्सी पर बैठ गया। एक शाल लाया गया और उसके सिर पर रख दिया गया। पहला व्यक्ति जो स्वीकार करने आया वह वार्या थी।

"मैं आपके पापों को जानता हूँ," अँधेरे में वार्या के कठोर चेहरे को देखते हुए उसने शुरू किया। "मुझे बताइए मैडम, आप हर रोज पोल्यान्स्की के साथ अपने घूमने की क्या सफाई देती हैं? ओह, यह व्यर्थ ही नहीं है कि वह एक घुड़सवार के साथ घूमती है।"

"यह मामुली प्रश्न है," वार्या बोली और दूर हट गई।

फिर उसने शॉल के नीचे बड़ी स्थिर आँखों की चमक देखी, अन्धकार में एक सुन्दर चेहरे की रेखायें देखीं जिसके साथ एक परिचित, सुखद, सुगन्ध उड़ रही थी जिसने नितोकिन को माशा की याद दिलाई।

"मेरी गॉदफ्रॉइ," वह बोला और अपने स्वर को स्वयं ही नहीं पहचान सका—वह इतना धीमा और कोमल था, "आपने कौन कौन से पाप किए हैं?"

माशा ने अपनी आँखें सिकोड़ीं और उसकी तरफ जीभ दिखाई। फिर वह हंसी और हट गई। और एक मिनट बाद वह कमरे के बीचोंबीच खड़ी हुई, तालियाँ बजाती हुई चीख रही थी:

"खाना, खाना, खाना!"

और सब लोग भोजन-कक्ष में जा पहुँचे। भोजन के समय वार्या ने दूसरी बहस की और इस बार अपने बाप के साथ। पोल्यान्स्की ने डट कर खाया, लाल शराब पी और नितोकिन को बताया कि किस प्रकार एक बार जाड़ों में युद्ध करते समय वह रात भर घुटनों तक दलदल में खड़ा रहा। दुश्मन इतना नजदीक था कि उन्हें बात करने या सिगरेट पीने की भी इजाजत

नहीं थी। रात ठंडी और अँधेरी थी। तीखी, चुभने वाली हवा चल रही थी। नितोकिन ने सुना और छिपी नज़रों से माशा की तरफ देखा। वह बिना आँख झपकाए टकटकी बांधकर उसकी तरफ देख रही थी मानो वह किसी बात पर विचार कर रही हो या किसी सुखद स्मृति में डूब गई हो...... उसे एक साथ ही आनन्द और वेदना का अनुभव हुआ।

"वह मेरी तरफ इस तरह क्यों देखती है?" यह ऐसा प्रश्न था जिसने उसे उद्विग्न कर दिया। "यह भद्दी बात है। लोगबाग इसकी तरफ गौर कर सकते हैं। ओह, वह कितनी आकर्षक है, कितनी जवान है!"

आधीरात को यह पार्टी भङ्ग हुई। जब नितोकिन बाहर फाटक पर पहुँचा तो पहली मंजिल की एक खिड़की खुली और माशा दिखाई दी।

"सरजी वासीलिच!" उसने पुकारा।

"क्या बात है?"

"मैं बताती हूँ ...," स्पष्ट लग रहा था कि माशा कुछ कहने के लिए सोच रही है। "मैं बताती हूँ ...पोल्यान्स्की ने कहा था कि एक या दो दिन में वह अपना कैमरा लेकर आएगा और हम सबको ले जायगा। हम लोगों को यहीं मिलना चाहिए।"

"बहुत अच्छा।"

माशा गायब होगई। खिड़की बन्द हुई और फौरन ही कोई घर में पियानो बजाने लगा।

"अच्छा, यह एक घर है!" सड़क को पार करते हुए नितोकिन ने सोचा। "एक ऐसा घर जिसमें उन मिश्री कबूतरों को छोड़ कर और किसी के भी कराहने की आवाज नहीं आती और ये कबूतर इसलिए ऐसा

करते हैं क्योंकि उनके पास अपनी प्रसन्नता को व्यक्त करने का और कोई साधन नहीं है।'

परन्तु शेलेस्तोव का घर ही अकेला ऐसा नहीं था जिसमें उत्सव हुआ करते थे। नितीकिन दो सौ क़दम भी आगे न चला होगा कि उसने एक दूसरे घर से आते हुए पियानो के स्वर सुने। कुछ और आगे बढ़ते ही उसे एक दरवाज़े पर "बाला लैका" बजाता हुआ एक किसान मिला। बागों में एक बैन्ड ने रूसी गानों की धुनें बजाना शुरू कर दिया।

नितीकिन शेलेस्तोव के मकान से आधा मील की दूरी पर तीन सौ रूबल सालाना वाले आठ कमरों के एक फ्लैट में रहता था जिसमें उसका एक साथी भूगोल और इतिहास का अध्यापक, इप्पोलित इप्पो- लितिच भी रहता था। जब नितीकिन भीतर घुसा तो यह इप्पोलित इप्पोलितिच, एक ऊपर को उठी हुई छोटी नाक वाला अधेड़ व्यक्ति जिसकी दाढ़ी लाल थी और चेहरा मजदूर की तरह रूखा, अच्छे स्वभाव वाला और मूर्खों जैसा था, मेज पर बैठा हुआ अपने शागिर्दों के नकशों को ठीक कर रहा था। उसके विचारानुसार भूगोल के अध्ययन में सबसे महत्वपूर्ण और जरूरी काम नकशे बनाना और इतिहास के अध्ययन में तारीखों का याद करना था। वह रात-रात भर बैठा हुआ अपने शागिर्दों—लड़कों और लड़कियों के बनाये हुए नकशों को नीली पेंसिल से ठीक करता रहता था या चार्ट बनाया करता था।

"आज का दिन कितना सुन्दर था!" उसके पास भीतर जाते हुए नितीकिन ने कहा। "मुझे तुम्हें देखकर ताज्जुब होता है—तुम घर के भीतर कैसे बैठे रहते हो?"

इप्पोलित इप्पोलितिच बातूनी आदमी नहीं था। वह या तो खामोश रहता या ऐसी बातें करता था जिन्हें सब जानते थे। अब उसने जो उत्तर दिया था वह यह था :

"हाँ, बहुत सुन्दर मौसम है। यह मई का महीना है। जल्दी ही असली गर्मी आजायगी। और गर्मी का मौसम जाड़ों से बहुत भिन्न होता है। जाड़ों में तुम्हें स्टोव गरम करने पड़ते हैं, परन्तु गर्मियों में तुम इसके बिना भी गर्म रहते हो। गर्मियों में रात को तुम्हें खिड़की खोल देनी पड़ती है फिर भी गर्मी रहती है और जाड़ों में इन पर दुहरा पर्दा लगा देने पर भी तुम्हें सर्दी लगती रहती है।"

नितोकिन को मेज पर बैठे एक मिनट भी नहीं हुआ था कि वह ऊब उठा।

"गुड नाइट!" उसने उठते और जम्भाई लेते हुए कहा। "मैं तुमसे अपने से सम्बन्धित कुछ रोमान्स की बातें करना चाहता था परन्तु तुम तो भूगोल हो। अगर कोई तुमसे प्रेम के बारे में बात करता है तो तुम फौरन पूछ बैठोगे—"कालका का युद्ध किस सन् में हुआ था?' तुम अपने युद्धों और साइबेरिया के अन्तरीपों में ही डूबे रहो!"

"तुम बिगड़ क्यों रहे हो?"

"क्यों, यह दुखदाई है!"

और दुखी होकर कि वह माशा से बातें नहीं कर सका था और इस बात से खिन्न होकर कि उसके पास कोई ऐसा नहीं था जिससे वह अपने प्रेम के बारे में बातें कर सके, अपने अध्ययन-कक्ष में गया और सोफे पर लेट गया। उस कमरे में अन्धकार और शान्ति का साम्राज्य था। उस अन्धकार में लेटे, ताकते हुए नितोकिन किसी कारणवश सोचने लगा कि कैसे दो या तीन साल के भीतर वह पीटर्सबर्ग जायगा, कैसे माशा उसे स्टेशन पर विदा करने आयेगी और रोयेगी। पीटर्सबर्ग में उसे माशा का लिखा हुआ एक लम्बा खत मिलेगा जिसमें वह उससे जल्दी घर लौट आने की प्रार्थना करेगी। और वह उसे लिखेगा······वह इस तरह अपना खत शुरू करेगा: 'मेरी प्यारी नन्हीं चुहिया!'

"हाँ, मेरी प्यारी नन्हीं चुहिया!" उसने कहा और हँसने लगा।

वह बड़े बेढङ्गे, दुखदाई ढङ्ग से लेटा हुआ था। उसने बाहें

सिर के नीचे रखलीं और अपनी बायीं टाँग सोफे की पीठ पर लटका ली। अब उसे ज्यादा आराम मिला। इसी बीच में खिड़कियों पर पड़ने वाली पीली रोशनी तेज होती जा रही थी, उनींदे मुर्गे अहाते में बाँग दे उठे। नितोकिन सोचता रहा कि कैसे वह पीटर्सबर्ग से वापस आएगा, कैसे माशा उससे स्टेशन पर मिलेगी और प्रसन्नता से चीखकर उसकी गर्दन से लिपट जायगी, या इससे भी अच्छा यह होगा कि वह उसे धोखा देगा और रात को चुपचाप घर आजायगा। रसोइया दरवाजा खोलेगा फिर वह पंजों के बल सोने के कमरे में जायगा, बिना शब्द किए कपड़ा उतारेगा और बिस्तर पर कूद पड़ेगा! और वह जाग उठेगी और बहुत खुश होगी।

अब अच्छी तरह रोशनी होने लगी थी। इस समय तक वहाँ न खिड़कियाँ रही थीं और न पढ़ने वाला कमरा। शराब की भट्टियों की सीढ़ियों पर, जिनके पास होकर उस दिन वे लोग घोड़ों पर सवार होकर निकले थे, माशा बैठी हुई कुछ कह रही थी। फिर उसने नितोकिन की बाँह पकड़ ली और उसके साथ पड़ोस के एक बाग में चली गई। वहाँ उसने ओक के दरख्तों और टप्परजैसे कौओं के घोंसलों को देखा। उनमें से एक घोंसला हिलने लगा, उसमें से सेबाल्दिन झाँका, जोर से चीखते हुए: "तुमने लेसिंग नहीं पढ़ा है!"

नितोकिन सिर से पैर तक कांप उठा और आँखें खोल दीं। इप्पोलित इप्पोलितिच सोफे के सामने खड़ा था और पीछे सिर किए हुए टाई लगा रहा था।

"उठो, स्कूल का समय होगया," वह बोला, "तुम्हें कपड़े पहन कर नहीं सोना चाहिए, इससे कपड़े खराब होजाते हैं। तुम्हें अपने बिस्तर पर सोना चाहिए, कपड़े उतार कर।"

और हमेशा की तरह वह धीरे धीरे और जोर देते हुए ऐसी बातें कहने लगा जो सब जानते थे।

नितीकिन को पहले दूसरे दर्जे में रूसी भाषा का सबक पढ़ाना था। जब नौ बजे, ठीक समय पर वह क्लास-रूम में पहुँचा तो उसने ब्लैक-बोर्ड पर दो बड़े बड़े अक्षर लिखे हुए देखे 'एम। एस.' इनका मतलब निस्सन्देह माशा शेलेस्तोव से था।

"इन्हें इस बात की गन्ध लग चुकी है, शैतान कहीं के···" नितीकिन ने सोचा! "यह कैसे हुआ कि इन्हें सब पता लग गया?"

दूसरा सबक पाँचवें दर्जे में पढ़ाना था। और वहाँ दो शब्द थे—एम. एस. ब्लैकबोर्ड पर लिखे हुए। और जब घन्टा खत्म होने पर वह क्लासरूम से बाहर निकला तो अपने पीछे तेज आवाज सुनी मानो थियेटर की गैलरी में से आ रही हो :

"माशा शेलेस्तोव की जय हो!"

कपड़े पहन कर सोने की वजह से उसका सिर भारी होरहा था, आलस्य के कारण जोड़ जोड़ दुख रहा था। लड़के हर रोज इम्तहानों से पहले छूटने की आशा करते थे, उन लोगों ने कुछ भी नहीं किया था, वे व्याकुल थे और इतना ऊब उठे थे कि शैतानी पर उतर आये। नितीकिन भी बेहोश था। उसने उनके मजाकों की तरफ ध्यान नहीं दिया और बराबर खिड़की पर जाता रहा। वह धूप से चमकती हुई सड़क को, मकानों के ऊपर स्वच्छ नीले आकाश को, चिड़ियों को, और दूर बहुत दूर, बागों और मकानों से परे, लम्बे चौड़े अनन्त विस्तार को, नीलिमा में छाये हुए जंगलों को और गुजरती हुई रेल से उठते हुए धुएँ को देख सकता था···।

यहाँ सफेद कोट पहने हुए दो अफसर, अपने बेंतों से खेलते हुए, सड़क पर बबूलों की छाया में होकर गुजरे। अनेक यहूदी भूरी दाढ़ियों वाले, टोपियाँ लगाये एक हल्की चौपहिया गाड़ी में बैठकर गुजरे।··· गवर्नेस डाइरेक्टर की नातिन के साथ चल रही थी। सोम दूसरे दो कुत्तों के साथ दौड़ रहा था···· और फिर वार्या एक साधारण भूरी

पोशाक और लाल मोजे पहने हुई, हाथ में 'व्यस्तनिक इवरोपी' लिए हुए निकल गई। वह जरूर कस्बे के लाइब्रेरी में गई होगी...

और जब तीन बजे सबक खत्म हुए तो बहुत देर हो गई थी। स्कूल के बाद वह अपने घर या शेलेस्तोव के यहाँ नहीं जा सका, परन्तु उसे वुल्फ के यहाँ पढ़ाने अवश्य जाना था। यह वुल्फ, एक अमीर यहूदी जो 'लुथेरन' बन गया था' अपने बच्चों को हाईस्कूल में पढ़ने नहीं भेजता था परन्तु उन्हें घर पर ही हाईस्कूल के [मास्टरों द्वारा पढ़वाता था और एक सबक के पाँच रूबल देता था।

वह ऊब उठा था बुरी तरह ऊब उठा था।

तीन बजे वह वुल्फ के यहाँ गया और वहाँ, उसे ऐसा लगा जैसे अनन्त काल तक बैठा रहा हो। वहाँ से वह पांच बजे चला और सात बजने से पहले ही उसे मास्टरों की एक मीटिंग में फिर स्कूल पहुँचना था जो चौथे और पाँचवे दर्जों की मौखिक परीक्षाओं के लिए स्कीम बनाने के लिए हो रही थी।

जब काफी शाम बीत जाने पर वह हाईस्कूल से लौटा और शेलेस्तोव-परिवार के यहाँ पहुँचा तो उसका हृदय धड़क रहा था और चेहरा लाल पड़ा हुआ था। एक महीने पहले, यहाँ तक कि एक हफ्ता पहिले उसने हर बार जब माशा से बात करने का निश्चय किया, तो एक पूरा व्याख्यान तैयार कर लिया था—भूमिका और उपसंहार के साथ। इस समय उसके पास एक शब्द भी तैयार नहीं था। उसके दिमाग में सब कुछ गड़बड़ा गया था और उसे सिर्फ इतना ही मालूम था कि आज निश्चित रूप से वह अपनी बात कह देगा और यह कि अब ज्यादा इन्तजार करना पूरी तरह नामुमकिन है।

"मैं उससे बाग में चलने के लिए कहूँगा," उसने सोचा, "हम लोग थोड़ी देर घूमेंगे और मैं कह दूँगा।"

हॉल में कोई भी नहीं था। वह भोजन-कक्ष में गया और फिर

ड्राइङ्ग-रूम में पहुँचा···वहाँ भी कोई नहीं था। उसे वार्या के ऊपर किसी से होती हुई बहस और नर्सरी में चलती हुई दर्जी की कैंची की आवाज सुनाई पड़ रही थी।

मकान में एक छोटा सा कमरा था जिसके तीन नाम थे: छोटा कमरा, रास्ते वाला कमरा, और अन्धेरा कमरा। उसमें एक बड़ी अलमारी रखी हुई थी जिसमें वे लोग दवाइयाँ, बारूद और शिकारी पोशाकें रखा करते थे। इस कमरे से लेकर पहली मञ्जिल तक एक संकरी काठ की सीढ़ी लगी हुई थी जहाँ हमेशा बिल्लियाँ सोया करती थीं। इसमें दो दरवाजे थे—एक नर्सरी को जाने वाला, दूसरा ड्राइंग रूम की तरफ खुलने वाला। जब नितीकिन ऊपर जाने के लिए इस कमरे में घुसा, नर्सरी की तरफ वाला दरवाजा खुला और इतनी जोर से बन्द हुआ कि सीढ़ी और अलमारी काँप उठीं। माशा, काली पोशाक पहने हुए, हाथ में नीले कपड़े का एक टुकड़ा पकड़े हुई भीतर आई और नितीकिन को बिना देखे हुए ही सीढ़ियों की तरफ लपकी।

"ठहरो···" नितीकिन ने उसे रोकते हुए कहा। "गुड ईवनिंग गॉदफ्राइ···मुझे इजाज़त दो" उसने साँस ली। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या कहे। एक हाथ से उसने माशा का हाथ पकड़ लिया और दूसरे हाथ से वह नीला टुकड़ा। वह आधी भयभीत, आधी आश्चर्यचकित हो उठी और बड़ी बड़ी आँखों से उसकी तरफ देखने लगी।

"मुझे इजाजत दो···" नितीकिन कहता गया, इस डर से कि कहीं वह भाग न जाय। "कुछ ऐसी बात है जिसे मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ···केवल···यहाँ बड़ी असुविधा होगी। मैं बता नहीं सकता, मैं असमर्थ हूँ·········समझीं, गॉदफ्राय, मेरे वश की बात नहीं—यही कहना है··"

नीला टुकड़ा फर्श पर गिर पड़ा और नितीकिन ने माशा को

दोनों हाथों से पकड़ लिया। वह पीली पड़ गई, अपने होंठ हिलाए, फिर नितोकिन से हट कर खड़ी हो गई और उसने अपने को कोने में दीवाल और अलमारी के बीच में पाया।

"अपने ईमान की कसम खाकर मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ..." वह धीरे से बोला, "माशा, अपने ईमान की कसम खाकर "

माशा ने अपना सिर पीछे कर लिया और नितोकिन ने उसके होठों का चुम्बन लिया और इसलिये कि चुम्बन लम्बा और गहरा हो उसने अपनी उंगलियां माशा के गालों पर रखलीं। और किसी तरह ऐसा हुआ कि नितोकिन ने खुद अपने को कोने में दीवाल और अलमारी के बीच में पाया और माशा ने उसके गले में अपनी बाहें डाल दीं और उसकी ठोड़ी से अपना सिर सटा लिया।

फिर वे दोनों बाग में भाग गये। शेलेस्तोव का बाग नौ एकड़ का था। उसमें लगभग बीस 'मेपल' के छायादार वृक्ष और नीबू के पेड़ थे। एक चीड़ का दरख्त था और बाकी के सब फलदार वृक्ष थे: चेरी, सेब, नासपाती, अखरोट, रुपहले जैतून के पेड़...वहाँ ढेर के ढेर फूल भी थे।

नितोकिन और माशा चुपचाप पगडंडियों पर दौड़े, हँसे, समय समय पर एक दूसरे से असम्बद्ध प्रश्न पूछे, जिनका उत्तर नहीं दिया गया। अर्द्धचन्द्र बाग के ऊपर चमक रहा था और उसकी धुँधली चाँदनी में रंग बिरंगे फूल झुके हुए काली घास तक फैले हुए थे मानो अपने लिए भी प्रेम के शब्दों की चाहना कर रहे हों।

जब नितोकिन और माशा घर में वापस आए, अफसर और नवयुवतियां इस समय तक एकत्रित हो चुकी थीं और 'मजूर्क'-नाच नाच रही थीं। फिर पोल्यान्स्की ने उस समय भव्य जंजीर का नेतृत्व ग्रहण किया और सब कमरों में घूमता फिरा। नाच के बाद उन लोगों ने "भाग्य" का खेल खेला। भोजन से पहले, जब मेहमान भोजन-कक्ष में

जा चुके थे, माशा नितीकिन के साथ अकेली रह गई तो उससे सट गई और बोली :

"तुम्हें खुद ही पापा और वार्या से बात करनी चाहिए, मुझे शर्म लगती है।"

भोजन के बाद उसने वृद्ध पिता से बातें कीं। उसकी बातें सुनने के बाद शेलेस्तोव ने कुछ देर सोचा और कहा :

"आप मुझे और मेरी बेटी को जो सम्मान दे रहे हैं उसके लिये मैं आपका बड़ा आभारी हूँ परन्तु मैं आपसे एक मित्र की तरह बात करना चाहता हूँ। मैं आपसे एक पिता की तरह बातें न कर उस तरह बातें करूँगा जैसे कि एक भला आदमी दूसरे भले आदमी के साथ करता है। मुझे आप यह बताइए, आप इतनी छोटी उमर में क्यों शादी करना चाहते हैं? इतनी कम उमर में सिर्फ किसान ही शादी करते हैं और यह सचमुच भद्दी बात है। परन्तु आपको शादी क्यों करनी चाहिए? आपको इस अवस्था में ही जंजीरों से बँध जाने में क्या सुख मिलेगा?"

"मेरी अवस्था कम नहीं है!" अपने को अपमानित समझते हुए नितीकिन बोला : "मेरी सत्ताईसवीं साल चल रही है।"

"पापा, नालबन्द आया है!" दूसरे कमरे से वार्या चीखी।

और बातचीत टूट गई। वार्या, माशा और पोल्यान्स्की नितीकिन को घर तक पहुँचाने आये। जब वे उसके दरवाजे पर पहुँचे वार्या बोली :

"यह क्या बात है कि आपके रहस्यमय मेत्रोपोलित मेत्रोपोलितिच कहीं भी दिखाई नहीं देते? वे आकर हम लोगों से मिल सकते हैं।"

रहस्यमय इप्पोलित इप्पोलितिच अपने बिस्तर पर बैठा हुआ पतलून उतार रहा था जब नितीकिन भीतर आया।

'बिस्तर पर मत जाओ, मेरे प्यारे दोस्त,' नितीकिन ने हाँफते हुये से कहा। "एक मिनट ठहरो, सोने मत जाओ!

इप्पोलित इप्पोलितिच ने जल्दी से अपनी पतलून पहन ली और काँपते हुए पूछा :

"क्या बात है?"

"मैं शादी करने जारहा हूं।"

नितीकिन अपने साथी की बगल में बैठ गया और उसकी ओर आश्चर्यपूर्ण दृष्टि से देखते हुए बोला मानो स्वयं अपने पर ही आश्चर्य कर रहा हो :

'ज़रा सोचो तो सही, मैं शादी कर रहा हूँ! माशा शेलेस्तोव के साथ! आज मैंने प्रस्ताव रखा था।"

"अच्छा! वह अच्छी लड़की मालूम पड़ती है। सिर्फ वह ज़रा छोटी है।"

"हाँ, वह छोटी है," नितीकिन ने गहरी सांस ली और परेशानी की सी मुद्रा बनाते हुए कन्धे उचकाए। "बहुत, बहुत छोटी!"

किसी कारणवश नितीकिन अचानक अपने साथी के लिए दुखी हो उठा और उससे कुछ कोमल और सान्त्वना के शब्द कहने को उत्सुक हो उठा।

"मेरे प्यारे साथी, तुम शादी क्यों नहीं कर लेते?" उसने पूछा। "मिसाल के लिए, तुम वार्या से शादी क्यों नहीं कर लेते? वह बहुत अच्छी फर्स्टक्लास लड़की है। यह सच है कि वह बहस करने की बहुत शोकीन है, परन्तु हृदय · कैसा हृदय पाया है! वह अभी तुम्हारे बारे में पूछ रही थी। उससे ब्याह करलो, मेरे प्यारे बच्चे! क्यों?"

वह इस बात को खूब अच्छी तरह जानता था कि वार्या इस

सुस्त, ऊँची उठी हुई नाक वाले व्यक्ति से शादी नहीं करेगी, परन्तु फिर भी उसे वार्या के साथ शादी करने के लिए उकसाता रहा—क्यों ?

"शादी बहुत अहम कदम उठाना होता है," क्षण भर सोचने के उपरान्त इप्पोलित इप्पोलितिच बोला। "इसे सब तरफ से देखना और हर चीज को तौल कर देखना पड़ता है। यह जल्दी में नहीं किया जाता। दूरन्देशी हमेशा अच्छी होती है और शादी ब्याह के मामलों में तो खास तौर से होती है जब एक आदमी अविवाहित जीवन को त्याग कर एक नयी जिन्दगी शुरू करता है।"

और वह ऐसी बातें करने लगा जिन्हें लोग मुद्दत से जानते आए हैं। नितीकिन उन्हें सुनने के लिए नहीं ठहरा, 'गुडनाइट' की और अपने कमरे में चला गया। उसने जल्दी से कपड़े उतारे और फौरन बिस्तर में लेट गया जिससे कि अपनी प्रसन्नता, माशा और भविष्य के बारे जल्दी से सोच सके। वह मुस्कराया तब फिर अचानक उसे याद आई कि उसने लेसिंग नहीं पढ़ा।

"मुझे उसे जरूर पढ़ना चाहिए," उसने सोचा, "फिर भी, आखिरकार क्यों पढ़ूँ ?" और अपनी प्रसन्नता से थक कर वह फौरन सोगया और सुबह तक मुस्कराता रहा।

उसने लकड़ी के फर्श पर घोड़ों की टापों की आवाज स्वप्न में सुनी। उसने स्वप्न में काले घोड़े काउन्ट नूलिन को देखा फिर सफेद दैत्य और उसकी बहन मैका को अस्तबल की तरफ ले जाते हुए देखा।

———

२

"गिरजे में भीड़ थी और शोरगुल हो रहा था। एक बार कोई चीख उठा तो बड़े पादरी ने जो माशा की और मेरी शादी करा रहा था, अपने चश्मे में से भीड़ की तरफ देखा और कठोरता से बोला: "गिरजे में इधर-उधर मत घूमिये और शोर बन्द कर दीजिये। चुपचाप खड़े होकर प्रार्थना करिये। आपको हृदय में भगवान से डरना चाहिए।"

मेरे साथी मेरे दो सहकारी थे और माशा के साथी कप्तान पोल्यान्स्की और लेफ्टीनेन्ट गारनेट थे। चर्च के गाने बजाने वालों ने बहुत अच्छा गाना गाया। जगह व जगह जलती हुई मोमबत्तियाँ, तेज रोशनी, भड़कीली पोशाकें, अफसर लोग, उल्लास से परिपूर्ण अनेक प्रसन्न चेहरे और माशा के मुख पर खेलती हुई दिव्य आभा इन सबने मिलकर और वहाँ के वातावरण और विवाह के समय की प्रार्थनाओं ने मेरी आँखें अश्रुपूर्ण कर दीं और मेरे हृदय में विजय की भावना भर दी। मैंने सोचा कि किस तरह मेरी जिन्दगी खिल उठी थी, कैसे कवित्वपूर्ण ढङ्ग से इसका निर्माण हो रहा था ! दो साल पहले मैं एक विद्यार्थी था। सस्ते सजे हुए कमरों में रहता था, बिना पैसे के, बिना नाते-रिश्तेदारों के और उस समय जब मैं सोचता था तो मुझे आगे भविष्य में कुछ भी नहीं दिखाई पड़ता था। अब मैं सूबे के एक सबसे अच्छे शहर के एक हाई स्कूल में मास्टर था, बँधी हुई आमदनी थी, सब मुझे प्यार करते थे, दुलार करते थे। मैंने सोचा कि मेरे ही कारण यह मजमा यहाँ इकट्ठा हुआ है, मेरी ही वजह से तीन झाड़ फानूस रोशन किए गए हैं, पादरी जल्दी जल्दी काम कर रहा है गाने बजाने वाले अपना पूरा हुनर दिखा रहे हैं, और मेरी ही

वजह से यह नन्हा सा जीव, जिसे मैं शीघ्र ही अपनी पत्नी कह कर पुकारूँगा, इतनी जवान, इतनी सुन्दर और इतनी प्रसन्न है। मुझे अपनी पहली मुलाकातें, घोड़ों पर चढ़कर देहात में जाना, मेरा प्रेम की घोषणा करना और वह मौसम जो मानो स्पष्ट रूप से गर्मियों भर इतना सुन्दर रहा था, याद आया। और वह प्रसन्नता जो एक समय मुझे अपने पुराने कमरों में रहते समय केवल उपन्यासों और कहानियों में ही सम्भव दिखाई पड़ती थी, मैं अब उसका अनुभव प्रत्यक्ष रूप में कर रहा था। मैं इससमय उसे जैसा कि था,अपने हाथोंमें पकड़े हुआथा।

"उस उत्सव के बाद वे सब अनियमित रूप से मुझे और माशा को घेर कर खड़े होगए। उन्होंने अपनी सच्ची खुशी जाहिर की, हम लोगों को बधाई दी और हमारी प्रसन्नता की कामना की। ब्रिगेडियर-जनरल, सत्तर वर्ष के एक वृद्ध पुरुष ने सिर्फ माशा को बधाई देने तक ही अपने को सीमित रखा और चीखती हुई, बुढ़ापे की आवाज में इतने जोर से माशा से कहा जो सारे गिरजे में सुनाई पड़ी : "मैं उम्मीद करता हूँ कि शादी होजाने के बाद भी तुम इस समय जैसी ही गुलाब के फूल की तरह खिली रहोगी, मेरी बच्ची।"

अफसर लोग, डाइरेक्टर और सब मास्टर सौजन्यतावश मुस्करा उठे और मुझे अट्टहास हुआ कि मेरे चेहरे पर भी एक बनावटी मुस्कराहट खेल उठी थी। प्रिय इप्पोलित इप्पोलितिच, इतिहास और भूगोलका शिक्षक,जो हमेशा ऐसी बातें कहता है जिन्हें लोग पहले से ही जानते हैं,ने स्नेहपूर्वक मेरा हाथ दबाया और भावुकतावश होकर बोला:

"अब तक तुम्हारी शादी नहीं हुई थी और अकेले रहते थे। अब तुम्हारी शादी होगई है और अब अकेले नहीं रहे हो।"

चर्च से हम लोग एक एक मंजिले मकान में गए जो मुझे दहेज के एक हिस्से के रूप में मिला है। उस मकान के साथ ही माशा मेरे लिये बीस हजार रूबल और साथ ही बेकार पड़ी हुई जमीन का एक टुकड़ा जिस पर एक झोंपड़ी बनी हुई है, भी ला रही है।

मुझे बताया गया है कि इस जमीन के टुकड़े में बहुत सी मुर्गियाँ और बत्तखें हैं जिनकी देखभाल नहीं होती है और वे जङ्गली बनती जारही हैं। जब मैं गिरजे से लौटकर घर पहुँचा तो अपने नये अध्ययन कक्ष में पड़े हुए एक कम ऊँचे सोफे पर पैर पसार कर लेट गया और सिग-रेट पीने लगा। मैं सुख, आनन्द और सन्तोष का अनुभव कर रहा था जैसा कि मैंने जीवन में पहले कभी भी नहीं किया था। और दूसरी तरफ बरात के लोग जय जयकार कर रहे थे। उधर हॉल में एक रद्दी सा बैन्ड ऐश्वर्य की और ऐसी ही रद्दी धुनें बजा रहा था। वार्या, माशा की बहन, हाथ में एक शराब का ग्लास पकड़े हुए दौड़ती हुई अध्ययन-कक्ष में आई और एक विचित्र, कठोर भाव मुँह पर लिए हुए मानो उसका मुंह पानी से भरा हुआ हो, भीतर घुसी। स्पष्ट रूप से वह और आगे जाना नहीं चाहती थी परन्तु अचानक हँसने और सिसकने लगी और शराब का ग्लास फर्श से टकरा कर टूट गया। हम लोगों ने उसे सहारा देकर उठाया और वहाँ से ले गए।

"कोई भी नहीं समझता!" पीछे के कमरे में नर्स के बिस्तर पर लेट कर वह बाद में बड़बड़ाई। "कोई भी नहीं! मेरे भगवान, कोई भी नहीं समझता!"

परन्तु हरेक अच्छी तरह जानता था कि वह अपनी बहन माशा से चार साल बड़ी है और अब भी कुंआरी है और यह कि वह द्वेष के कारण नहीं रो रही थी परन्तु इस दुखदाई अनुभूति के कारण कि उसका समय बीता जा रहा था और शायद बीत चुका था। जब उन लोगों ने 'क्वाड्रिल' नृत्य किया तो वह आँसुओं के दाग पड़े हुए और गहरा पाउडर लगे चेहरे के साथ ड्राइंग रूम में वापस आ गई थी। और मैंने देखा कि कप्तान पोल्यान्स्की उसके सामने बर्फ की एक प्लेट लिए हुए खड़ा था और वह चम्मच से उसे खा रही थी।

"सुबह के पाँच बज चुके हैं। मैंने अपनी पूर्ण और गहरी प्रसन्नता का वर्णन करने के लिए अपनी डायरी निकाली और सोचा कि,

मैं पूरे छः पृष्ठ लिखूंगा और सुबह माशा को पढ़कर सुनाऊंगा, परन्तु कहना बड़ा अजीब सा लगता है कि मेरे दिमाग में सब गड़बड़ा उठा है और सपने की तरह धुंधला हो उठा है और मैं वार्या वाली उस घटना को छोड़कर और कुछ भी स्पष्ट रूपसे नहीं सोच पारहा हूँ, और मैं लिखना चाहता हूँ, 'बेचारी वार्या !' मैं यहाँ बैठा हुआ लिखता रहा 'बेचारी वार्या !' प्रसङ्गवश यह भी कहदूं कि पेड़ हिलने लगे हैं, पानी पड़ेगा। कौवे काँव काँव कर रहे हैं और मेरी माशा, जो अभी सोई है, किसी वजह से उसके चेहरे पर एक दुख का भाव झलक रहा है।"

इसके बाद बहुत दिनों तक नितीकिन ने अपनी डायरी नहीं लिखी। अगस्त के शुरू में स्कूल की परीक्षाएं हुईं और पन्द्रह के बाद क्लास शुरू हो गई। नियमानुसार वह सुबह नौ बजे से पहले ही स्कूल के लिए रवाना हो गया और दस बजने से पहले ही वह अपनी घड़ी देख रहा था और अपनी माशा और अपने नए घर के लिए दुखी हो रहा था। छोटे दर्जे में वह किसी लड़के को इम्ला बोलने के लिए नियुक्त कर देता, आँखें बन्द कर खिड़की पर बैठ जाता और स्वप्न देखने लगता। चाहे वह भविष्य के सपने देखता या बीती हुई बातें याद करता, दोनों ही बातें उसे एक सा ही मजा देतीं—परियों की कहानियों की तरह। ऊँचे दर्जों में लड़के गोगोल या पुश्किन के गद्यांश पढ़ते और उससे उसे नींद आने लगती। आदमी, पेड़, खेत, घोड़े उसकी कल्पना में साकार हो उठते और वह गहरी साँस लेते हुए कहता मानो लेखक से प्रभावित हो उठा हो :

"कितना सुन्दर !"

दोपहर की छुट्टी के समय माशा एक दूध जैसे सफेद तौलिए में उसका खाना भेजती, और वह उसे धीरे धीरे खाता, रुक रुक कर जिससे खाने का मजा ज्यादा देर तक रहे। और इप्पोलित इप्पोलितिच, जिसके भोजन में हमेशा रोटी के अलावा और कुछ भी नहीं रहता था,

उसकी तरफ आदर और द्वेष से देखता और कोई चिर-परिचित वाक्य कहता जैसे :

"मनुष्य भोजन के बिना जीवित नहीं रह सकते।"

स्कूल के बाद नितीकिन सीधा ट्यूशन पढ़ाने गया और जब आखिर में छः बजे घर पहुँचा तो उसने उत्तेजना और उत्सुकता का अनुभव किया मानो साल भर बाद लौटा हो। वह एक ही साँस में दौड़ता हुआ सीढ़ियाँ पार करता, माशा को ढूँढ़ता, उसे अपनी बाँहों में लपेट लेता, उसका चुम्बन लेता और कसम खाता कि वह उसे प्यार करता है, कि उसके बिना नहीं रह सकता, घोषणा करता कि उसे उसकी बहुत याद आती थी और उससे उद्विग्न होकर पूछता कि वह कैसी है और इतनी सुस्त क्यों दिखाई पड़ रही है। फिर वे दोनों साथ साथ खाना खाते। भोजन के बाद वह अपने अध्ययन-कक्ष में जाकर सोफे पर लेट जाता और सिगरेट पीने लगता जब कि वह उसकी बगल में बैठ कर धीमी आवाज में बातें करती रहती।

आजकल उसके सबसे खुशी के दिन इतवार और छुट्टियों वाले दिन होते जब वह सुबह से लेकर शाम तक घर पर रहता। उन दिनों वह उस सरल परन्तु अत्यधिक सुखद जीवन में भाग लेता जो उसे एक छोटे से ग्राम्य गीत में वर्णित देहाती जीवन की याद दिलाता। वह इस बात को देखते रहने में कभी थकता नहीं था कि उसकी समझदार और व्यवहारकुशल माशा किस तरह अपने घोंसले को सजाती रहती और वह हमेशा यह दिखाने को उत्सुक रहता कि वह भी घर के प्रबन्ध में हाथ बँटा सकता है और इसके लिए वह बेकार के काम किया करता जैसे गाड़ी को अस्तबल से बाहर निकाल लाता और चारों तरफ से उसका निरीक्षण करता। माशा ने तीन गायों वाली एक नियमित दुग्धशाला बना रखी थी और उसके भाण्डार में दूध से भरे हुए अनेक जग और खट्टी मलाई के बर्तन रखे रहते थे और वह यह सब मक्खन निकालने

के लिए सुरक्षित रखती थी। कभी कभी, मजाक के तौर पर, नितोकिन उससे एक ग्लास दूध माँग बैठता और वह बुरी तरह परेशान हो उठती क्योंकि यह उसके नियम के विरुद्ध होता, परन्तु वह उसे भुजाओं में बाँध लेता और कहता :

"बस, बस, मैं मजाक कर रहा था, मेरी प्यारी ! मैं मजाक कर रहा था !"

या वह उसकी सख्ती पर हँसने लगता जब उसे अल्मारी में पनीर का या चटनी का कोई सूखा हुआ पत्थर जैसा सख्त टुकड़ा मिल जाता। उस पर वह गम्भीर होकर कहती :

"रसोई में रखने पर वे लोग इसे खा जायँगे।"

वह कहता कि ऐसा टुकड़ा सिर्फ चूहेदानी में ही लगाने लायक है और वह तेज होकर जवाब देती कि आदमी लोग घर-गृहस्थी के बारे में कुछ भी नहीं जानते और यह कि नौकरों के लिए तो एक ही बात है चाहे तुम रसोई में मनों खाने-पीने की चीजें रख दो। वह सहमत हो जाता और उसे गाढ़ालिंगन में आबद्ध कर लेता। जो कुछ भी वह कहती सब उसे अद्भुत और आश्चर्यजनक लगता। और जो कुछ भी उसके विश्वासों के विपरीत होता वह सब उसे सरल और प्रिय लगता।

कभी कभी वह अपनी दार्शनिक तरंगमें होता और किसी आदर्शवादी विषय पर बहस करने लगता जब कि वह बैठी हुई सुनती और उत्सुकता से उसके चेहरे को देखती रहती।

"मैं तुम्हारे साथ बहुत सुखी हूँ, मेरी प्रसन्नता," वह कहा करता, उसकी उँगलियों से खेलता हुआ या उसके बालों को सँवारता हुआ या बिगाड़ता हुआ। "परन्तु मैं अपनी इस प्रसन्नता को ऐसे रूप में नहीं देखता कि जो मुझे अचानक मिल गई हो, मानो स्वर्ग से टपक पड़ी हो। यह प्रसन्नता एक अत्यन्त स्वाभाविक, संगत और तर्कपूर्ण परिणाम है। मेरा विश्वास है कि मनुष्य अपने सुख का निर्माता स्वयं

होता है और अब मैं उसका उपभोग कर रहा हूँ जिसका मैंने स्वयं निर्माण किया था। हाँ, मैं बिना किसी झूठी नम्रता के कह रहा हूँ : मैंने इस सुख का निर्माण स्वयं किया है और मुझे इसका उपभोग करने का अधिकार है। तुम मेरी पहली जिन्दगी के बारे में जानती हो ! मेरा दुःखी बचपन, बिना माँ बाप का, मेरी निराश जवानी और दरिद्रता—यह सब एक संघर्ष था, यह सब वह मार्ग था जिस पर चल कर मैंने अपनी प्रसन्नता का रास्ता बनाया था···"

अक्तूबर में स्कूल को भारी हानि उठानी पड़ी। इप्पोलित इप्पोलितिच के सिर पर फुंसियाँ निकल आईं और वह मर गया। मरने से दो दिन पहले वह बेहोश होगया और सन्निपात में बकने लगा परन्तु अपनी सन्निपात की बक बक में भी उसने एक भी ऐसी बात नहीं कही जिसे सब अच्छी तरह न जानते हों।

"वोल्गा नदी कैस्पियन सागर में गिरती है घोड़े जौ और घास खाते हैं··· ·"

उसकी अन्त्येष्टि क्रिया वाले दिन स्कूल में पढ़ाई बन्द रही। उसके साथी और विद्यार्थी अर्थी उठा कर चल रहे थे और स्कूल की गाने बजाने वाली पार्टी कब्रस्तान पहुँचने तक शोकजनक गीत गाती रही—"पवित्र ईश्वर"। तीन पुजारी, और दो पादरी, उसके सारे विद्यार्थी और हाई स्कूल के सब कार्यचारी, बड़े पादरी की सङ्गीत मंडली आदि अपने सबसे अच्छे कपड़े पहिन कर जुलूस में सम्मिलित हुए। और रास्ते में जो भी रास्तागीर मिला उसने अपने ऊपर क्रॉस का निशान बनाया और कहा :

"भगवान हम सब को ऐसी मौत दे।"

अत्यधिक प्रभावित होकर कब्रस्तान से घर लौटने पर नितीकिन ने मेज पर से अपनी डायरी उठा ली और लिखा :

"हम लोग अभी इप्पोलित इप्पोलितिच राइझित्स्की को कब्र

में सुलाकर आए हैं। नम्र सेवक! तुम्हारी मिट्टी को शान्ति मिले। माशा, वार्या और उस समय उपस्थित सारी स्त्रियाँ, सचमुच दुखी होकर रोने लगीं शायद वे इस बात को जानती थीं कि इस रूखे, नम्र व्यक्ति को किसी स्त्री ने कभी प्यार नहीं किया था। मैं अपने साथी की कब्र पर एक स्नेह का शब्द कहना चाहता था परन्तु मुझे चेतावनी दी गई कि इससे डायरेक्टर नाराज हो जायगा क्योंकि वह हमारे गरीब दोस्त से नाराज था। मैं विश्वास करता हूँ कि मेरी शादी के बाद यह पहला दिन था जब मेरा हृदय भारी हो उठा था।''

उस शिक्षण वर्ष में और कोई भी महत्वपूर्ण घटना नहीं घटी थी। जाड़े हल्के थे, भीगी बरफ पड़ी थी। पाले का नामनिशान भी नहीं था। 'इपीफेनी ईव' वाले दिन हवा रात भर चिंघाड़ती रही मानो पतझड़ का मौसम हो, और छतों से पानी टपकता रहा और सुबह 'जल देवता का आशीर्वाद ग्रहण' के उत्सव के समय पुलिस ने किसी को भी नदी पर नहीं जाने दिया क्योंकि उनका कहना था कि बरफ फूल रही थी और काली दिखाई पड़ रही थी। परन्तु बुरे मौसम के बावजूद भी नितोकिन की जिन्दगी उतनी ही सुखी थी जितनी कि गर्मियों में था। और सचमुच उसने मनोरंजन का दूसरा साधन ढूँढ लिया था। उसने विन्ट खेलना सीख लिया था। सिर्फ एक बात से वह परेशान था, गुस्सा हो उठता था, और जो उसे पूरी तरह खुश रहने में बाधा डालती थी—कुत्ते और बिल्लियाँ जो उसकी पत्नी के दहेज में मिली थीं। सारे कमरे, खास तौर पर सुबह के वक्त इन जानवरों की गन्ध से भरे रहते थे और किसी उपाय द्वारा भी यह गन्ध दूर नहीं होती थी। बिल्लियाँ अक्सर कुत्तों से लड़ा करती थीं। उस घृणित कुतिया मुश्का को दिन में बारह दफे खाना खिलाया जाता था। वह अब भी नितोकिन से मित्रता करने में हिचकिचाती थी और उसे देखकर गुर्राने लगती थी: 'र र्र र··· न्गा··· न्गा··· न्गा···!''

ईसाइयों के चालीस दिनों वाले व्रत के समय एक दिन वह क्लब से घर लौट रहा था जहाँ वह ताश खेल रहा था। चारों ओर अन्धकार था, पानी पड़ रहा था और कीचड़ थी। नितीकिन अपने हृदय में एक बेचैनी का सा अनुभव कर रहा था और इसका कारण समझने में असमर्थ था। वह नहीं जान सका कि इसका कारण यह था कि वह जुए में बारह रूबल हार गया था या यह कि एक खिलाड़ी ने, जब वे समझौता कर रहे थे, यह कहा था कि नितीकिन के पास बहुत पैसा है जो स्पष्ट रूप से उसकी बीबी के हिस्से की तरफ इशारा था। उसे उन बारह रूबलों का अफसोस नहीं था और जो बात कही गई थी उसमें कोई बात अपमानजनक नहीं थी, परन्तु फिर भी यह बेचैनी विद्यमान थी। उसे घर जाने की भी इच्छा नहीं हुई।

"फू, कितना भयानक!" एक बत्ती के खम्भे के सहारे चुपचाप खड़े होकर वह बोला।

उसे ऐसा लगा कि उसे इन बारह रूबलों का अफसोस नहीं था क्योंकि वे उसे ऐसे ही मिल गए थे। अगर वह एक मजदूर होता तो एक पैसे की भी इज्जत करता और इस बात में इतना लापरवाह नहीं रहता कि जीत रहा है या हार रहा है और उसका यह सौभाग्य, उसने सोचा कि, उसे अचानक ही प्राप्त होगया, सेंतमेंत, और सचमुच उसके लिए उतना ही व्यर्थ था जितना कि एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए दवाई होती है। अगर, इन करोड़ों आदमियों की तरह, उसे अपनी रोटी जुटाने के लिए परेशान होना पड़ता और अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए संघर्ष करना पड़ता, अगर उसकी पीठ और छाती मेहनत की वजह से दर्द करती, तो खाना, आरामदेह गर्म मकान और घरेलू प्रसन्नता एक आवश्यकता होती, प्रतिदान होता, उसकी जिन्दगी को सबसे बड़ी कामयाबी होती। और जैसा कि यह सब था: इस सब का महत्व उसके लिए अद्भुत और अनिश्चित था।

"फू, कैसा भयानक !" उसने दुहराया, इस बात को खूब अच्छी तरह जानते हुए कि ये विचार स्वयं में ही बुरा लक्षण बता रहे थे।

जब वह घर पहुँचा माशा सो रही थी। उसकी सांस नियमित चल रही थी और मुख पर मुस्कराहट थी। यह स्पष्ट ज्ञात हो रहा था कि वह मजे की नींद सो रही है। उसके पास सफेद बिल्ली सिकुड़ी पड़ी घुर घुर कर रही थी। जब नितीकिन ने मोमबत्ती जलाई और सिगरेट सुलगाई, माशा जग पड़ी और एक साँस में पानी का ग्लास पी गई।

"मैंने बहुत ज्यादा मिठाई खा ली थी," वह बोली और हँस पड़ी। "तुम घर गए थे ?" उसने कुछ देर बाद पूछा।

"नहीं !"

नितीकिन पहले से ही जानता था कि कप्तान पोल्यान्स्की का, जिसे लेकर वार्या बहुत दिनों से आशा के महल बना रही थी, तबादला पश्चिमी सूबों में से एक में हो रहा है और वह शहर में, मिलने वालों में हर एक से विदा माँगता फिर रहा है इसलिए उसके ससुर के यहाँ निराशा छा रही थी।

"वार्या आज शाम को आई थी," माशा ने उठते हुए कहा, "उसने कुछ भी नहीं कहा—परन्तु कोई भी उसके चेहरे से यह ताड़ सकता था कि वह कितनी दुखी है, बेचारी ! मैं पोल्यान्स्की को सहन नहीं कर सकती। वह मोटा और फूला हुआ है और जब वह चलता या नाचता है उसके गाल हिलने लगते हैं।...वह ऐसा आदमी नहीं है जिसे मैं पसन्द करती। परन्तु फिर भी मैंने सोचा था कि वह एक अच्छा आदमी था।"

"मैं सोचता हूँ कि वह अच्छा आदमी अब बना है," नितीकिन बोला।

"तो उसने वार्या के साथ इतना बुरा बर्ताव क्यों किया ?"

"बुरा क्यों ?" सफेद बिल्ली की तरह चिढ़चिढ़ाते हुए निती-

किन ने पूछा क्योंकि बिल्ली अँगड़ाई ले रही थी और अपनी पीठ को मोड़ रही थी। "जहाँ तक मैं जानता हूँ उसने विवाह का कोई प्रस्ताव नहीं रखा है और न उससे कोई वायदा ही किया है।"

"तो वह अक्सर घर क्यों आया करता था? अगर वह उससे शादी करना नहीं चाहता था तो उसे घर आना ही नहीं चाहिए था"

नितोकिन ने मोमबत्ती बुझा दी और बिस्तर में घुस गया। परन्तु लेटने और सोने की उसकी इच्छा नहीं हो रही थी। उसे ऐसा लगा मानो उसका सिर खत्ती की तरह खोखला और लम्बा चौड़ा हो गया था और इसमें नए, अजीब विचार काली छायाओं की तरह इधर उधर घूम रहे थे। उसने सोचा कि मूर्त्ति वाले लैम्प की धीमी रोशनी के अलावा भी जो उनकी सुखी गृहस्थी पर चमकती रहती है, कि इस छोटे से संसार के अलावा भी, जिसमें वह और यह बिल्ली इतने आराम से और सुख से रहते हैं, एक दूसरा संसार और था'' 'और उसके मनमें एक तीखी, मर्मभेदी लालसा जग उठी कि वह उस ससारमें रहे,किसी फैक्टरी या बड़ी मिल में खुद काम करे, भारी भीड़ के सामने व्याख्यान दे, लिखे, छापे, एक हलचल मचा दे, अपने आपको थका डाले, कष्ट उठाये,.........वह कुछ ऐसी वस्तु चाहता था कि उसमें इतना डूब जाय कि अपने आपको भूल जाय, अपने व्यक्तिगत सुख की चिन्ता बन्द करदे जो उसे सिर्फ क्षणिक उत्तेजना प्रदान करता है। और एकाएक उसकी कल्पना में शेवाल्दिन की शकल स्पष्ट रूप से उभर आई जिसका चेहरा सफाचट था और जो कह रहा था: "तुमने लेसिंग तक तो पढ़ा नहीं है। तुम समय से बहुत पीछे हो! तुम पढ़ाते कैसे हो!"

माशा जाग पड़ी और फिर थोड़ा पानी पिया। उसने उसकी गर्दन को, उसके भरे कन्धों और गले को देखा और ब्रिगेडियर-जनरल द्वारा चर्च में कहे हुए शब्दों को याद किया—"गुलाब"

"गुलाब का फूल," वह बड़बड़ाया और हँसा।

उनकी हँसी का जवाब बिस्तर के नीचे से मुश्का की उनींदी गुर्राहट ने दिया : "र र र...न्गा...न्गा...न्गा...!"

एक भारी गुस्सा एक ठंडी भारी चीज की तरह हृदय में उतर गया और वह माशा से कोई कड़ी बात कहने के लिए उत्तेजित हो उठा और यहाँ तक उसका मन हुआ कि कूद कर उसे मारे। उसका हृदय धड़कने लगा।

"तो फिर," उसने अपने आप पर काबू करते हुए कहा, जब कि मैं तुम्हारे घर गया था तो तुमसे शादी करना मेरा कर्त्तव्य बन गया था ?"

"बेशक ! तुम यह खूब अच्छी तरह जानते हो !"

"यह अच्छा है।" और एक मिनट बाद उसने दुहराया : "यह ठीक है।"

अपने हृदय की धड़कन को रोकने के लिए और ज्यादा कुछ कहने से बचने के लिए निकीतिन अपने अध्ययन-कक्ष में चला गया और बिना तकिया लिए सोफे पर जा लेटा, फिर वह जमीन पर बिछे गलीचे पर लेट गया।

"यह क्या बेवकूफी है !" उसने अपने को समझाने के लिए कहा। 'तुम एक मास्टर हो, तुम्हारा पेशा सबसे अच्छा और सम्मानित है .... तुम्हें किसी दूसरे जीवन की क्या आवश्यकता है ? क्या बेहूदापन है !"

परन्तु लगभग तुरन्त ही उसने पूर्ण विश्वास के साथ स्वयं से कहा कि वह एक सच्चा अध्यापक न होकर सिर्फ एक सरकारी नौकर था, उतना ही मामूली और दम्भी जितना कि वह चेक जो ग्रीक पढ़ाता था। उसने पढ़ाने की शिक्षा कभी नहीं पाई थी। वह पढ़ाई के सिद्धान्त के बारे में कुछ भी नहीं जानता था और उसने कभी भी अपने विषय में रुचि नहीं ली थी। वह बच्चों के साथ व्यवहार करना नहीं जानता था। वह जो

कुछ पढ़ाता या उसका महत्व नहीं समझता था और शायद ठीक ठाक पढ़ाता भी नहीं था। बेचारा इप्पोलित इप्पोलितिच कम से कम स्पष्ट रूप से मूर्ख तो था और सब लड़के और उसके साथी उसकी असलियत को जानते थे और यह भी जानते थे कि उससे कितनी उम्मीद करनी चाहिए। परन्तु वह, नितोकिन, उस चेक की तरह अपनी मूर्खता को छिपाना जानता था और चालाकी से हरेक को धोखा देता रहा था, यह बनते हुए कि भगवान को धन्यवाद है कि उसका पढ़ाना सफल है। इन नये विचारों ने नितोकिन को त्रस्त कर दिया। उसने उनकी प्रतारणा की, उन्हें मूर्खतापूर्ण कहा और विश्वास किया कि यह सब उसकी निर्बलता के कारण था कि वह इसके लिए अपने ऊपर हंसेगा।

और सचमुच सुबह होते ही वह अपने आप पर हँसा और स्वयं को एक बुढ़िया कह कर पुकारा। परन्तु यह बात उसके लिए साफ हो उठी कि उसके मस्तिष्क की शान्ति नष्ट हो गई थी, शायद हमेशा के लिए और यह कि उस दो मंजिले छोटे से घर में उसके लिए, इसके बाद प्रसन्नता पाना असम्भव था। उसने महसूस कि भ्रम का पर्दा उठ गया था और बेचैनी और स्पष्टता की एक नई जिन्दगी शुरू हो रही थी जिसका शान्ति और व्यक्तिगत प्रसन्नता के साथ कोई मेल नहीं था।

दूसरे दिन जो इतवार का दिन था वह स्कूल के गिरजे में था। वहाँ उसकी मुलाकात उसके साथियों और डायरेक्टर से हुई। उसे ऐसा लगा कि वे लोग पूरी तरह अपनी मूर्खता और जीवन के असन्तोष को छिपाने की कोशिश कर रहे थे और वह भी अपनी बेचैनी को छिपाने के लिए विनम्रता पूर्ण ढङ्ग से मुस्कराया और इधर उधर की बातें करने लगा। फिर वह स्टेशन गया और मेल ट्रेन को आते और जाते हुए देखा। उसे अकेला रहना और किसी से भी बातें न करना अच्छा लग रहा था।

घर पर उसकी मुलाकात वार्या और उसके पिता से हुई जो खाना खाने आये हुए थे। वार्या की आँखें रोने से लाल हो रही थीं और

उसने सिरदर्द की शिकायत की जब कि शेलेस्तोव ने खूब डटकर खाया, यह कहते हुए कि आजकल नौजवानों का भरोसा नहीं रहा है और यह कि उन लोगों में सज्जनता की भावना बहुत कम रह गई है।

"यह वाहियात है!" उसने कहा, "मैं यह बात उसके मुँह पर कह दूंगा। यह वाहियात बात है, साहब, मैं कहूँगा।"

नितीकिन सौजन्यतापूर्वक मुस्कराया और मेहमानों की खातिरदारी करने में माशा का हाथ बँटाने लगा परन्तु भोजन के उपरांत वह अपने अध्ययन-कक्ष में चला गया और दरवाजा बन्द कर दिया।

मार्च मास का सूर्य खिड़कियों में होकर, गर्म किरणें मेज पर डालता हुआ चमक रहा था। अभी महीने की सिर्फ बीसवीं तारीख हुई थी परन्तु गाड़ी वाले अभी से गाड़ियों में पहिए लगाकर चलाने लगे थे और मैना बाग में शोर मचाने लगी थीं। यह बिल्कुल वैसा ही मौसम था जिसमें माशा भीतर आती, उसकी गर्दन में एक हाथ डालती, उससे कहती कि घोड़ों पर जीन कस दी गई है या गाड़ी दरवाजे पर खड़ी है और उससे पूछती कि उसे सर्दी से बचने के लिए क्या ओढ़ना चाहिए। बसन्त उसी तरह सुन्दरता से प्रारम्भ हो रहा था जैसे कि पिछली साल हुआ था और इससे उन्हीं गत वर्ष जैसे मनोरंजनों की आशा थी।...परन्तु नितीकिन सोच रहा था कि एक दिन की छुट्टी लेकर मास्को जाय। वहाँ अपनी रहने की जगह पर ठहरने में बड़ा आनन्द आयेगा। बगल वाले कमरे में वे लोग कॉफी पी रहे थे और कप्तान पोल्यान्स्की की बातें कर रहे थे जब कि उसने इन बातों को न सुनने की कोशिश की और अपनी डायरी में लिखा :

"मैं कहाँ हूँ, मेरे भगवान? मैं चारों ओर गन्दगी से घिरा हुआ हूँ। थका देने वाले, तुच्छ मनुष्य, खट्टी मलाई के भरे हुए बर्तन, दूध के जग, कॉकरोच, बेवकूफ औरतें गन्दगी आदि ज्यादा भयानक, जान लेने वाली और परेशान करने वाली और कोई भी चीज नहीं है। मुझे यहाँ से भाग जाना चाहिए, मुझे आज ही भाग जाना चाहिए, वर्ना मैं पागल हो जाऊँगा!"

॥ समाप्तम् ॥